अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति
चतुविधि	चतुर्विध	१३९	१०
जिम	निज	१४०	६
कुमर	कुमरी	१४२	१४
	खुशी से	१४६	११

...त्व पदार्थों का।

कपड़े की जिल्द कर्त्ता की वड़ी फोटो सहित मूल्य केवल एक रुपया है ॥

जैन भानुः—कुछ समय हुआ, ढूंढकमताध्यक्षणी श्रीमती पार्वतीने सत्यार्थचंद्रोदयजैन नाम की एक पोथी रची थी, और लाहौर से छपकर प्रकट हुई थी, जिसमें मूर्तिपूजनादि सनातनजैनधर्मीयकृत्यों पर अनेक कुतर्कें कर कागज काले किये हैं, जगत्प्रसिद्ध एक महान् विद्वान ने प्रत्युतर रूप उस का खंडन किया है, जिस को छपवा कर प्रकट करने का साहस हमने उठाया है, प्रथम से ग्राहक होने वालो को प्रथम भाग चार आने में और पीछे से अधिक मूल्यमें मिलेगा ॥

जसवंतराय जैनी, लाहौर।

श्रीअजितनाथ जिनस्तवनम्।

(आत्माराम महाराज मुनि इस कलयुग में अवतार हुए यह देखो।)

अजितनाथ महाराज प्रभु, अब भव सागर से पार करो। काल अनंता वीत गया पिण,तुम चरणी नहि आंख परी। अचलि। अब मेरो पुण्योदय जाग्यो। मोह महामल्ल मुझसे भाग्यो निशदिन तुम चरणी में लाग्यो। रागद्वेष अज्ञान हरी। अ०१तुम प्रभुभवो भवके भय भंजन। भविजन के तन मन को रंजन। मदन कदन दुखदाई गंजन। गये रस इंद्री विषय जरीं॥ अजि०२। जिन ब्रह्मा हरि हर शिव शंकर। प्रभुवीतराग राम शिवकर। अचल अटल अज अमर सुहंकर। परमातमपद शुद्ध वरी। अजि०३ जो सेवक निज सम नहीं करता। सेवा कौन

कहो तस करता। क्या तस सेवासे फल करता भस्म बीच घृत बूंद परी ॥ अजि० ४। तूं प्रभु निज सेवक समकारी। भवजलधिसे पार उतारी वल्लभ आतम रूप दातारी। शुभ पंचम गति बीच धरी ॥अजि०५। इति

श्रीसंभवनाथ जिनस्तवनम्

(चाल नेमि मेरा स्याम रंगीला)

संभवजिन सुख कंदा। भवोभव करत आनंदा। प्रभु मुख पूनम चंदा। लंछन हरि धार जी। सं०१। प्रभु तीन जग में आधारा। दया के प्रभु अवतारा। दुरवार ये संसारा। काटदे विकार जी ॥ सं० २॥ रोगी नहीं हुं में अधूरा॥ धनंतरी तूं प्रभु पूरा। करदे रोगोंका चूरा। अष्ट करम टारजी ॥सं०३॥भाव से न देखे जिनको

पूजे नहीं वा में तिन को। दुखी अति फ़ल इस को। दिया जनम हारजी ॥ सं० ४ ॥ अब तो मैं जाच लीनो। वास प्रभु चरणे कीनो। परसंग छोर दीनो। आतम वल्लभ धार जी ॥ सं० ५ ॥

श्री अभिनंदन जिनस्तवनम्।

(तायाजी हम पाचो भाई करतेहैं परनाम जी—चाल)

अभिनंदन चंदन सम शीतल,
शीतल किये नरनार जी॥ अंचलि
रोग सोग को दूर तू करता,
करता पर उपकार जी ॥ अभि० १ ॥
कैसे तु भविजन को तारे,
तारे तुम हिये धारजी ॥ अभि० २
अपने आप दृति नांहि तरती,
तरती पवन प्रचार जा ॥ अभि० ३ ॥

दान अभय का तूं प्रभु दाता,
दाता शिव मग सारजी ॥ अभि० ४ ॥
जो जाचक पूरे नहीं आसा,
आसा क्या तस लारजी ॥ अभि० ५ ॥
तूं निज सेवक निज सम करता,
करता भवजल पारजी ॥ अभि० ६ ॥
शुभ भावे प्रगटे निज आतम,
आतम वल्लभ तारी जी ॥ अभि० ७ ॥

श्री सुमतिनाथ जिनस्तवनम् ।

(सावणीचास—अपने पद को तज कर) ।

सुमतिनाथ शिव पाथ प्रभुका, साथ भवि करना चाहिये । प्रभु मदनमाथ है, रोग के नाश क्वाथ पीना चाहिये । अंचली । रातदिवस गफलत में प्यारे, गाफिल होना ना चाहिये ।

नहीं खबर काल की, चेत कर निज मन मल धोना चाहिये १ भेद ज्ञान सावन कर पानी, समता रस लेना चाहिये । अभ्यंतर चेतन, रजक निज गुण चीवर धोना चाहिये ॥ २॥ जड़ चेतन के ज्ञान से प्यारे, मिथ्या भ्रम मिटना चाहिये । अद्वैतवाद से, कभी नहा करम पुंज कटना चाहिये ॥ ३ ॥ निश्चय और व्यवहार है साधक, मुख्य गौण होना चाहिये। एकांत वाद सें, जगत में धरम करम खोना चाहिये ॥ ४ ॥ निश्चय से चेतन ही ध्याता, ध्यानध्येय कहना चाहिये। निश्चयका साधक, शुद्ध व्यवहार साथ गहना चाहिये ॥ ५ ॥ पर उपकारी अति सुख कारी, सरण प्रभु धरना चाहिये। कर्मारि प्रभु के, ध्यान से करम वैरी टरना चाहिये ॥ ६ ॥ शुद्धदेव गुरु शुद्ध धरम

को, धार हिये तरना चाहिये । आतम सुखदाई रूप वल्लभ आनंद वरना चाहिये ॥ ७ ॥

श्री पद्मप्रभु जिनस्तवनम्

(लावणी—चाल—व्यसन नर सातों से डरना)

सिमर सिरि पदम प्रभुचंदा ।
पावे भवो भव में आनंदा ॥ सि० अंचली ॥
ज्ञान दर्शन खायक धारी ।
चरण खायक प्रभु सुखकारी ।
मुक्ति ग्राहक आनंद भारी ।
लायक प्रभु है मुक्ति नारी ।

दोहा

दायक आनंद रूपके, गायक सब संसार ।
निसदिन प्रभुगुण गावते, तोभी न आवेपार ॥
गावते सुर अमरी वृंदा ॥ सिमर० ॥ १ ॥

प्रभु गुण द्वादश के धारक।
दोष अष्टादश के वारक।
जगत भविजन के हित कारक।
दुख अति जनम मरण टारक।

दोहा।

जारक सायक कामके, मारक मदन विकार।
हारक नरपति मोहके, तारक भविससार॥
पूजते सुरनर मुनि इंदा॥ सिमर०॥ २॥

चंद्रसम ठारक जग वासी।
प्रसारक वाणी सुख रासी।
कारक मुक्ति वधू को दासी।
निवारक घाति कर्म फासी।

दोहा।

धारक जीवन मुक्तिके, कारक सतउपदेश।
साधु सागारी तणा, झूठ नहीं लवलेश॥

धरम भव भवमें सुख कंदा ॥ सिमर० ॥३॥

चराचर सब वस्तु प्रासक,
भये प्रभु अष्ट करम नासक।
सुद्ध पंचम गति के आसक,
रूप सच्चिदानंद कासक।

दोहा।

रोग सोग चिंता नहीं, जन्म मरण दुखनास।
अचर अटल पदवी लई, सादि अनंतावास ॥
नमो नित सिद्ध टरे फंदा ॥ सिमर० ॥४॥

ऐसे सिरिजिन वरके चरना,
भवोदधि में है मुझे सरना।
नहीं प्रभु विन होवे तरना,
ध्यान निश दिन प्रभु का धरना।

दोहा।

मधुकर जिम मन मालती, चाहत चंद चकोर।

ध्याता हूं शुभ भाव से, जलधर घटजिम मोर।
वल्लभ आतम लक्ष्मी कंदा ॥ सिमर०॥५॥

श्री सुपार्श्वनाथ जिन स्तवनम्।

लावणी—चाल—सिमर नर प्यारे नाथ चरनन।

सिरि सुपार्श्वनाथ स्वामी।
करुणा रस भंडार निधी करुणा अंतर जामी
॥ सिरि० अंचली ॥
बनारस नगर प्रभु जाया।
पृथिवी देवी मात तात परतिष्ठ महाराया।
राज कुल को अति दिपाया।
गगन व्योम कर देह धनुष कंचन वरनी काया
सुंदर स्वस्तिक लंछन पाया।
दोहा।
वीस पूर्व लख आऊखा, लाखें पूर्व पर्याय।

वीस अंग ऊनीस ही, केवल ज्ञान जगाय।
मास त्रय छद्मस्था पामी। करुणा० १ ॥

प्रभु तुम राग द्वेष त्यागी।
हुं कंगाल अनाथ विना तुम नाथ मोहरागी
विषय रस में अति हुं राच्यो।
गतिचार चउरासी लाख घर सांग नाच नाच्यो
रह्यो इन में निश दिन माच्यो।

दोहा।

देव स्वरूप न जानियो, जान्यो धर्म न सार
विना गुरु शुभ साधुके, किम उतरूं भव पार
करो टुक नेक नजर स्वामी॥ करुणा०।२

पांच इंद्रीने वस कीना।
दया दान तप नेम शील आतमगुण दब लीना।
भवो भव में बहु दुख दीना॥

रुल्यो अनंता काल नहीं तोभी इन संग खीना
हार अब तुम सरना लीना ।

दोहा।

कर करुणा करुणानिधी, हे प्रभु दीन दयाल
जगतारण जगनाथजी, करुणा नजर निहाल
परम पद शिवपद के गामी । करुणा० ३ ॥
महा माहन प्रभु जिन चंदा ।
महा गोप सथ वाह महा आनंद सुख के कंदा
भवोदधि निर्यामक भारी ।
नही विना तुम देव कोई जग उपमा यह धारी
तुहीं जग में पर उपकारी ।

दोहा।

सुरपति नरपति खगपति, भुवन पति वन ईस
नमन करे शुभ भाव से, पद पंकज धर सीस
करमदल चूरन के कामी । करुणा० ४ ॥

नाम प्रभु जिनवर हितकारी।
हरि करी दव रोग जलोदर बंधन भयहारी।
अहि रण उदधि भयवारी।
जनममरण दुखदूर करणकारण अरजी म्हारी
असि प्रभु आणाकर धारी।

दोहा।

पारस फरसे लोहको, निज सम करे ततकाल
मुं तुम चरणी फरसियो, निज सम करो दयाल
आनंद वल्लभ आतम रामी॥ करुणा० ५

श्रीचन्द्रप्रभु जिनस्तवनम्।

चाल—राजाकुमरीया बोल रस की बूंदां परी।

श्रीचंद्रप्रभु भगवान् भवजलपार करो।अंचली
गुणगण तुम प्रभु निर्मल चंदा।
गणधर सुरगुरु कथन करंदा।

तोभी नहीं कोई पार लहदा।
मैं क्या जानू अनजान। भव जल० १
तुम प्रभु तारक विरुद धराया।
तारो सेवक शिव सुख के दाया।
चरण शरण प्रभु म तुम आया।
देखो न अत्र गुणवान॥ भवजल० २
गुण अवगुण देखी जो तारे।
तुम को नाथ कहो कौन धारे॥
और थकी अतिशय क्या भारे
जो तारो गुणवान। भवजल ० ३
अष्ट करम ने मोह सताया।
चार गति चौरासी भ्रमाया॥
दूर करो कर्मारि राया।
सेवक अपना जान॥ भवजल० ४
तुम किरपा सेवक पर होवे।

अष्ट कर्म मोह राजा रोवे ॥
सुमति सखी प्रीतम मुख जोवे ।
चिद घन सुख की खान ॥ भवजल० २
तू दाता मैं जाचक थारा ।
दान करो निज ज्ञान भंडारा ।
आतम राम मिले प्रभु प्यारा ।
वल्लभ धरे प्रभु ध्यान । भवजल० ६ इति

श्री सुविधिनाथ जिनस्तवनम् ।

देशी वणजारे की ॥

श्री सुविधि जिनंद सुखकारी ।
प्रभु भवजल पार उतारी ॥ अंचली ॥

अर्हन जिन राग विडारी । पारंगत गुणभंडारी । त्रिकाल वित कर्मारी । स्यादवादी परम उपकारी ॥ श्री० ॥ १ ॥ तिर्थंकर बुधपद धारी । परमेष्ठी

शंकर तारी। पुरषोत्तम शिव-भगचारी। सर्वज्ञ भवोदधि पारी ॥ श्री० ॥ २ ॥ शंभु जोगीसर भारी। ब्रह्मा विष्णु बलिहारी। अष्टादश दूषण जारी। देवाधि देव भय वारी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ इत्यादि अभिधा सारी। धारी प्रभु केवल यारी करुणा कर प्रभु अब माहरी॥ प्रणमुं मैं वारंवारी ॥ श्री० ॥ तुम सम नहिं देव दिदारी । सेवे सुर मुनि आगारी। गावे गुण अमरी नारी। ध्यावे ऋषि विषय निवारी ॥ श्री०५॥आतम पद तूं दातारी । भव भव में तेरा भिखारी । कर दान प्रभु इक वारी । परचो वल्लभ शरणी धारी॥श्री०६॥इति

श्रीशीतलनाथ जिनस्तवनम् ।

चाल—चंचल दृग धृति न धरतरी ।

शीतल जिन चरन परतरी, प्रभु चरनन फरसन मन तरसन जिम करसन जल विन कलन धरत। शी०। अंचली। ध्यान प्रभु तुम चरन बीच, भव तरु न सीच, चाह खरी। धरी तुमरी सरन, प्रभु तुमरे चरन, मन लगरो लगन, घरी पल न छरत। शीतल०। १। आठ करम नहिं करन देत, मोहे अपना हेत, लार परी संसार तार, नहीं पारावार, कहूं बार बार, अघ दलन करत। शीतल०। २। वीतराग तुम जीत दोष, धरगुणका पोष, आस करी। तुम सम नहीं, लिया देख सही, भ्रम भ्रम मही, जस मलन चरत। शीतल०३। रात दिवस तुम धरहुं ध्यान

करू गुणका गान, पान करों। अमीरस समान, निरदोसवान, शिव सुखकी खान, भव जलन ठरत। शीतल० ४। मैं अनाथ तूं मेरा नाथ अब कर सनाथ, हाथ फरी। शीतल जिनंद, वल्लभ आनंद, कट कर्म फंद, पुन छलन करत। शीतल० ।५। इति

श्रीश्रेयांसनाथ जिनस्तवनम्

चाल—जयबोलो जय बोलो मेरे प्यारे धर्म की जय बोलो

श्रेयकरो श्रेय करो श्रेयांस प्रभुजी श्रेयकरो।

॥ अंचली ॥

तुम सम ओर नहीं कोई जग मे।
घडीघड़ी पल पल परु तुम पग में।
प्रभु ध्याने सुख पाऊं सग में।
सग में जी सगमें अरु अपवगर्मे।

प्रभुजी श्रेय करो० । १ ।

नाना थानाकर्मै हूं भमियो ।

काल अनंता विरथा गमियो ।

राग द्वेष मद मोहने दमियो ।

दमियो जी दमियो अति दुख खमियो ।

प्रभुजी श्रेयकरो० । २ ।

प्रथवी अप तेउ में रुलियो ।

वायु बन काया में फुलियो ।

बी ती चौ पंचेंद्री खुलियो ।

खुलियो जी खुलियो पशु में भुलियो ।

प्रभु जी श्रेय करो०॥३॥

मनुज अनारज कुल में आयो ।

पाप कियो कुकर्म कमायो ।

सद गुरु जोग नहीं वहां पायो ।

पायो जी पायो कुगुरु भरमायो ॥

प्रभु जी श्रेय करो० ॥ ४।

इत्यादि बहु दुख में सहियां।
सुरु गुर पार न पावे कहियां।
पुण्य उदय कछु अबमें लहिया।
लहियां जी लहियां दुख गया बहियां।
प्रभु जी श्रेयकरो० ॥ ५ ॥

आरज देस उत्तम कुल जाई।
सद गुरु जोग मिल्या सुखदाई॥
तुम दर्शन शुध समकित पाई।
पाई जी पाई चरन छुआई।
प्रभुजी श्रेय करो०। ६।

कर करुणा प्रभु विष्णु नदन।
तुं जग बांधव भव दुःख कंदन।
शुभ भावे करते भवि वंदन।
वंदन जी वंदन कटे भव फंदन॥

प्रभुजी श्रेयकरो० ॥ ७।

वल्लभ सेवक अरज सुनीजे।

करुणा टुक सेवक पर कीजे।

आतम पद निज सम कर लीजे॥

लीजे जी लीजे शिव सुख दीजे॥

प्रभु जी श्रेय करो० ॥ ८॥ इति

श्रीवासुपूज्य जिनस्तवनम्।

चाल नाटक की—आशक तो होचुका हूं तुम बोलो या न बोलो।

वासुपूज्य स्वामी मेरे। गुण गाऊं नित्य तेरे।
काटो चुरासी फेरे। कर लो सेवक को नेरे। १
अंचली॥

माता जया के नंदा। वसुपूज्य कुल चंदा॥
सेवे सुरिंद वृंदा। कटे जन्म मरण फंदा।२।वा०
सुर इंद पाय पूजे। भवि जीव बात बूजे।

प्रभु देख पाप धूजे। कर्मों का व्रण रूजे।३।वा०
पूजा करत जोई। सफल हाथ सोई।
देखे प्रभु को जोई। सफल आंख वोई।४। वा०
सरूप एक भासे। निश्चय नय प्रकाशे।
व्यवहार कर्म नासे। सेवक प्रभु के पास।५ वा०
सरन लई मैं तोरी। पकडो जी बांह मोरी।
प्रीतमसे प्रीत जोरो। कुमति की संग छ.री।६वा०
प्रीतम प्रभु जी जोवे। आतम वल्लभ होवे।
दुख धंद फद खोवे। मोहराय बैठा रोवे। ७वा०

श्रीविमलनाथ जिनस्तवनम्

चाल—पाये जी कलयुग मे एक गुरु आतमाराम।

वंदू जी शिवसुखदायक विमल नाथ महाराय।
जिनों के निश दिन शचिपति सुर नर पूजे पाय
वंदू०। अचली।

विष विष धर हार भय नावे।
लक्ष्मी पूजा से पावे।
हरख मन भावे। शिव०। १।
जन्म जन्म प्रभु मैं चाहूं।
खरे आप मेरे सिर नाहू।
रखो गहि बाहू। शिव०। २।
बाविध मन में प्रभु सेवा।
मीनो जल जिम गज रेवा।
खपे अघ देवा। शिव०। ३।
नंदन वन सम प्रभु राजे।
विबुधादिक पर्षद गाजे।
विपद सब भाजे। शिव० ४।
दरिसन अमिरस प्रभु प्यारा।

जग जीवन प्राण आधारा।
जनम फल सारा॥ शिव०।५।
सूरत मन मोहन गारी।
यम जन्म जरा दुख वारी।
यज के सुख धारी।शिव०।६।
रिषी सर वल्लभ ईसा।
जीन चरन कमल धरूं सीसा।
जीवन जगदीसा। शिव०।७।
आदि पद हिरदे धर के।
मांगुं सुख तुम पग पर के।
करम जाय सरके । शिव० ८।

श्रीअनन्तनाथ जिनस्तवनम्।

चाल—हेरीसखी नैनोंसे नैन मिला गयो—रामधारीया की

हेरी प्रभु भव जल पार उतार ले। सेवक

जान के मोहे, अपना जान के मोहे अनी हां-
भव जल० ॥ अंचली ॥

मैं सेवक प्रभु तुम चरनों का, और नहीं कोई ठौर। जो होवे जग तुम सरिखा तो, क्यों आवां तुम ओर। हेरी प्रभु अपना ही विरुद चितार ले ॥ सेवक० १ ॥ तारन तरन कहावो प्रभु जी, तारो क्यों नहीं मोय। विन तारे निष्फल नामों के, क्या धारे गुण होय। हेरी प्रभु सेवक की अब सार ले ॥ सेवक० २ ॥ अष्ट करम ने घेरा प्रभु जी, मोहे छुडाओ आप। जग सरना नहीं और किसी का, तुम ही माय मेरे बाप। हेरी प्रभु यह अरदास सीकार ले॥ सेवक० ३ ॥ नहीं छाडू भव भव के मांहीं, चरण कमल तुम सार। कर करुणा करुणाकर स्वामी, जनम मरण दुःख टार। हेरी प्रभु देवाधि देव करार

ले ॥ सेवक०४॥ अनंतनाथ प्रभु नाम धरावो, दो अनंत फल आज । आतम लक्ष्मी शिव सुख धामी, सत चित आनद राज । हेरी प्रभु आतम वल्लभ धार ले ॥ सेवक० ५॥ इति

श्रीधर्मनाथ जिनस्तवनम् ।

दहीवालों का तौर दिखाना—चाल नाटक की।

नमु धर्मनाथ जिन स्वामी ।
परम परम पद के धामी । अंचली ।
अजर अमर प्रभु अज अविनासी ।
निर्मल लोकालोक प्रकासी ।
सत चित आनंद रूप विलासी ।
जयजय प्रभु जयजय प्रभु निसकामी॥नमु०१
एक अनेक स आदि अनादी ।
नित्य अनित्य अनेकान्त वादी ॥
सत भंगी उपदेश के हादी ।

जयजय प्रभु जयजय प्रभु नहीं खामी॥नमु०२

धर्मनाथ प्रभु धर्म के दाता।
भवि जीवों के हैं तुम त्राता।
दान करो अक्षय सुख साता।
जयजय प्रभु जयजय प्रभु कर्म वामी॥नमु०३

तुम प्रभु देव गुरु जग बंधु।
मात तात करुणा रस सिंधु।
मेहर करो न पड़ां भव अंधु।
जयजय प्रभु जयजय प्रभु विसरामी॥ नमु०४

तार तार कर्मारी राया।
मैं सेवक तुम सरनी आया।
वल्लभ आतम रूप प्रदाया।
जयजय प्रभु जयजय प्रभु जग नामी॥नमु०५इति



श्रीशांतिनाथ जिनस्तवनम्।

पहाड—चालि—चंदा पल पल वैजाना वैजाना रे।

पलपल गुण गाना गुण गाना रे, जीया पल पल गुण गाना गुण गाना रे। वे प्रभु दा गुण वे प्रभु दा, गातां शिव सुख पाना पाना पल पल० ॥ अंचली ॥

विश्वसेन अचिराजी के नंदा। मुझ मन कुमुद खिडनको चंदा। जिम पकज वन भाना भाना ॥ पक पल० १। जैसे चंद्रचकोरन नेहा। मधु कर केतकी शिखी मन मेहा। तिम मेरे मन माना माना। पल पल० २। शांति नाथ प्रभु शांतिकारी। आवत जग में मरि निवारी। शांति शांति का थाना थाना ॥ पल पल० ३। शुध मन से जो प्रभु गुणगावे, गुणि जन संगत गुणी जन थावे। पारस संग

से वाना वाना ॥ पल पल० ४ ॥ तुम प्रभु राग द्वेष के त्यागी। मैं प्रभु निशदिन तुमरा रागी। नहीं कुछ तुम से छाना छाना। पल पल० ५ ॥ दृढ़ कर पकड़ी मैं तुमरी बांहां । निश दिन चाहूं मैं तुमरी छांहा । और नहीं मन लाना लाना ॥ पल पल० ६॥ आत्म लक्ष्मी निज सम कीजो । हर्ष धरी वल्लभ को दीजो। मारग मोक्ष का जाना जाना ॥ पल पल० ७॥ इति ॥

श्री कुंथुनाथ जिनस्तवनम् ।

सिरी कुंथुनाथस्वामी शिवसुखधाम है।

सिरी–अंचलि ।

मुक्ति फल मेवा लेवा। करे नर नारी सेवा।
देवाधि देव देवा, गावे प्रभु नाम है॥ १
महानिशीथ गावे, प्रभु पूजा द्रव्य भावे।

कर भवी मोक्ष जावे, कटे कर्म तमाम है ॥ २
सुरयाभ देव कीनी, रायपसेणी साख दीनी ।
फल पूजा मुक्ति लीनी, और नही काम है ॥ ३
उपासकानंद ज्ञाता, द्रौपदी भू विख्याता ।
अंबड उवाई जाता, प्रभु का कलाम है ॥ ४॥
काम क्रोध मान माया, लोभ मोह दु ख दाया
राग द्वेष दूर थाया, शिवपुर ठाम है ॥ ५ ॥
अजर अमर अज, अचर अलख भज ।
दूर होवे कर्म रज, मुक्तिका मुकाम है ॥ ६ ॥
आत्म लक्ष्मी हर्ष भावे, सत चित आनद पावे
सिद्ध रूप धारी थावे, वल्लभ आतमराम है ॥७

श्री अरनाथ जिनस्तवनम् ।

चाल—प्यारेजी आज वधाई २ गुरुजीने पदवी सूरिपाई ।

पाप पलाये स्वामी जी पाप पलाये स्वामी
प्रभु तुम दर्शन मन भाये जी पाप पलाये ॥

अंचली ॥ मूरति प्रभु की मोहन गारी । जनम जनम के दुख निवारी । सेवे नरनारी–स्वामी प्रभु ॥१॥ प्रभु के तन की छप है न्यारी । शशि सूरज की गई छपमारी । शोभा सारी–स्वामी प्रभु० ॥ २ ॥ प्रभु के मस्तक मुकट विराजे । अद्भुत कुंडल कान में साजे । शशि सूर लाजे स्वामी प्रभु० ॥ ३ ॥ सोहे प्रभु गल में माल मोती । झगमग झगमग दीपे जोती । खुशी मन होती । स्वामी प्रभु० ॥४॥ नमु नित श्री अर- नाथ जिनंदा । सोहे प्रभु मुख पूनम का चंदा । कटे भव फंदा । स्वामी प्रभु० ॥ ५ ॥ अमोलक नरभव विरथा जावे । नहीं विन भाग दरस प्रभु पावे । फिर पछतावे । स्वामी प्रभु० ॥६॥ करम शुभ जोग दरस प्रभु मिलिया । सुरतरु धेनु मणि मानु फलिया । कर्म रिप दलिया ।

स्वामी प्रभु० ॥७॥ करो भव पार प्रभु मुझ नईंया। तुमरा चरण शरण अव लईंया। चरण चित दईंया। स्वामी प्रभु० ॥ ८ ॥ प्रभु तुम पूरण आतम रामी। विजयानंदसूरि पदधामी। वल्लभ पामी। स्वामी प्रभु० ॥९॥ इति ॥

श्री मल्लिनाथ जिनस्तवनम्।

भगति से मुगति पावोगे। चाल—

मल्लिनाथ प्रभु के गुण गाऊंगा गुण गाऊंगा गुण गाऊगा। गाने से मुगति पाऊगा॥ मल्लि० अंचली॥

मैं अनाथ तुम त्रिभुवन नाथा। एक तुम सम थाऊंगा मल्लि०॥१॥ कारण निमत्त प्रभ तुम साचे। मैं उपादान कहाऊंगा। मल्लि० ॥२ आरत रौदर दूर निवारी। धरम लाऊंगा। मल्लि० ॥ ३॥ काम

उपाधि । सब को जड़ से जलाऊंगा ॥ मल्लि० ४
कुंदन सम निज रूप को धारी । खोट रहित हो
जाऊंगा । मल्लि० ॥५॥ अजर अमर अक्षय
अविनाशी । आत्म लक्ष्मी प्रगटाऊंगा । मल्लि० ६
परमानंद हर्ष चित धारी । वल्लभ ज्योति मिला-
ऊंगा ॥ मल्लि० ॥ ७ ॥ इति ॥

श्रीमुनीसुव्रत स्वामी जिन स्तवनम् ।

(चाल—इतना संदेशा मोरारे नेमि पिया से कहना ।)

सुव्रत शिवधामीरे, अरजी स्वीकारो स्वामी ॥
जग फीर फिर तोरी, दरबार आयो दोरी सु०१॥
संसार यह असारारे, है दुख जिहां अपारा ।
फसियो हूं निराधारा, काढो ग्रही मुझ प्यारा॥सु०२
कर्मों ने फंद पायारे, महा मोह जाल छाया ।

क्रोधादि फंदभारा,काटो सरण प्रभु थारा॥सु०
विषयन संग राच्योरे,धरि स्वांग नाच नाच्यो।
बंदरसे सिंह हारा,अचरीज है यह भारा॥सु०४
कलधोत जान लुभायोरे, पीतल हाथ आयो।
मिथ्यामत घोर अंधारा,फस कारज निज विगारा
कछु पुन्य जोग आयो रे, वल्लभ देव पायो।
करदर्श मोह जारा, आतम रूप धारा ॥ सु०६॥

श्री नमिनाथ जिनस्तुति ।

दोहरो—

नमिनाथ प्रभुका ध्यान कर मानुष जनम का सार है। नमिनाथ० ॥ अंचली॥

दृष्टांत दश जिम दोहिला, मानुष जन्म का विचार है। चारों गति में मुख्य ही, मानुष जनम अवतार है। न० ॥ १ ॥आरज देश पैदाशका,कुल जाति उत्तम फार है। आत लंबी

आयु इंद्रो पूरण,रोग से छुटकार है । न० । २। गुरु जोग शुभ पाया सुना, जिनवर वचन विस्तार है। सरधान शुद्ध मनसा करी, रहा बाकी उद्यम कार है॥ न० ॥ ३ ॥ उद्यम किये मिली सब सामग्री, सफल होने हार है। कर दान अर्चन नेम तप जप, ध्यान भावना बार है ॥ न० । ४। मत क्रोध माया मान कर, नर लोभ देना टार है। सब से बड़ा दुखदाई जोधा, नाम जिसका मार है ॥ न० ॥५॥ प्रभु ध्यान से मरे कामजोधा, होना रहित विकार है। प्रभु वैन अमृत पान कर, आतम आनंद कार है ॥ न० ६॥ प्रभु वीतराग जिनंद चंद, चकोर चित मनोहार है। प्रभु ज्ञान धर मन भाव से,वल्लभ हर्ष अपार है ॥न•७॥ इति

———

श्री नेमिनाथ जिनस्तुति ।

लावणी—चाल—सिमरनर घरेनाव घरनन।

नमो निन नेमिनाथ देवा । करे निरंतर इंद्र सुरासुर नर नरपति सेवा । नमो० अंचली ॥ नाम हरिवास क्षेत्र कहिये । हेतु पूरवले वर अमर ल्याये युगलिक रहिये । भरत में तिस की संताना । हरिवंश के नाम जगतमें प्रख्याति पाना । जैन आगम अचरिज गाना ॥

दोहा—क्रमने तिस संतानमें, यदुनाम परसिद्ध नृप होये तिस कारणे, यदुवंश जगसिद्ध जिहां होये कृष्ण वासुदेवा । नमो० ॥ १ ॥

वंश तिसही में प्रभु जाया । शिवा देवी शुभ मात तात समुद्र विजयराया । देख छवी प्रभु की हर्षाया । सबी सजन गुणवान नहीं सूरत मन में भाया । गगन में जा डेरा लाया ॥

दोहा।

अंबुज दल सम नेत्र है, अष्टमी शशि सम भाल
मुख शारद का चंद्रमा, वाणी अति रसाल।
नहीं जग है जिस सम मेवा॥ नमो०॥ २॥

प्रभु बालापन ब्रह्मचारी। नहीं करम था भोग्य तौभी माता करली त्यारी। कृष्ण बलभद्दर समझाये। विना किये मंजूर आप घर उग्रसैन धाये। कृष्णजी राजुल मंग आये।

दोहा—रूप रंभा सारखी, राजुल करे विचार
अहो भाग्य मम थाऊंगी, नेमि कुमरकी नार
जनम मानव फल सुख लेवा॥ नमो॥ ३॥

प्रभु की जान चडी भारी। दशों दशारह साथ कृष्ण बलभद्दर नर नारी। छुडाया पशुअन का वारा। तुरत लिया रथ मोड़ छोड़ घर संजम चितधारा। रुदन करे मात तात भारा

दोहा—कहे नेमि माता पिता, सुनो हमारा वैन।
भोग्य कर्म हम है नहीं, लेसु संजम चैन।
लोकांतिक आये तबी देवा॥ नमो ४॥

प्रभु जयजय नंदा भद्दा। धरम तीरथ वरताओ करे देवन जयजय सद्दा। दानवरसी प्रभुजी दीना। किये धनी कंगाल जगत अनुकंपा मग कीना। छोड घर संजम धर लीना।

दोहा।

सहसा वन गिरनार पर, ज्ञान ध्यान चितठाय॥
राग द्वेष को क्षय करी; केवल ज्ञान उपाय॥
भये प्रभु देवन परिसेवा॥ नमो॥५॥

धरम उपदेश प्रभु दीना। समोसरण के बीच सुनो भवी जनम सफलकीना। शोक भविजन मन से नासे। रहित शोक फलफल सहित अशोकवृक्ष कासे। निरंतर रहे प्रभु पासे।

दोहा—पांच वरण अधोबींटहै,पुष्पन जानुप्रमान
आप अधो जावे सही,अचरिज नहीं कछु जान ।
सुमन जन दरस करे देवा । न०६
देवधुनि मन हर सुर बाजे । प्रभु वचन रसपान
सुधा सम भविजन मन राजे । पान करने से
तृप्ति थावे । जनम मरण दुख टार शीघ्र पद
अजर अमर पावे । चमर दो पासे प्रभु थावे ।
दोहा—नीचे झुक ऊपर चढे,भविको दे समझाय
नमन करे प्रभु भाव से,निश्चय ऊर्धगति जाय
पार हो भव सागर खेवा । न०७
मणिमय सिंहासन छाजे । श्याम घटा प्रभु
सोमि देख भविजन शिखि सम गाजे । पाछे
भामंडल सुख कारी । नहीं बराबर तेज सूर्य
नमते नित नर नारी । पावे निज तेज तमो टारी
दोहा—देव दुंदुभी गाजती,देवे भविको सुनाय ।

सार्थवाह प्रभु मुक्ति के,सेवा करो भवि आय।
निरंतर नित शिवसुख लेवा। न० ॥ ८ ॥
प्रभु शिर तीन छत्र सोहे । तीन भवन के
बीच नहीं कोइ और भवि मोहे । आठ प्रति
हारज येह कहिये । रहे निरंतर देव जघन पद
कोटि इक लहिये । विचरते साथ सदा रहिये

दोहा ।

जिनअतिशयचउतीसहै, वाणी गुण पणतीस ।
पर्षद बारां शोभती, कहे धरम जगदीस ।
आतम वल्लभ शिव पद लेवा । न०९ ।

श्रीपार्श्वनाथ जिनस्तवनम् ।

रेखता ।

पारस प्रभु नाथ तू मेरा,रटुं में नाम नित
तेरा । विना तुम नाथ जिनराया,भवो भव दुख
बहु पाया । १ । आनद गुरु की निगेबाद

पूर्व कछु पुण्य से मानी। दिया तज देव जग फानी, यथारथ रूप को जानी ॥ २ ॥ तूही जगनाथ जगदेवा, करूं नीश दिन तुम सेवा। पंचम गति दान कर स्वामी, निजातम रूप को पामी। ३। परम किरपाल जग नामी, परम करुणा निधि धामी। परम पुरुषोत्तमा रामी परम पद आतमा रामी। ४। तूं हि भव दुःख को भंजन, तूं हि भवि जीव को रंजन। जगत आधार तूं कहिये, निरंतर सरण तुम लहिये। ५। परम सत चित आनंदी, परम शिव सुख शुभ कंदी। कनक भवि जीवको करता, पारस सम उपमा धरता। ६। जगद्गुरु देव तूं सोहे, जंगम सुर वृक्ष मन मोहे। मनोवांछित तूं दाता, चिंतामणि सम जग गाता ॥ ७ ॥ अनंती उपमा तोरी, सहित अंत शक्ति प्रभु

मोरी। करूं मैं उपमा केती, नहीं प्रभु शक्ति मुझ एती। ८। तूं हि जग तात जग माता, आतम आनंद पद दाता। पूरण करो आशा अब मोरी, कहे वल्लभ कर जोरी॥ ९॥ इति॥

श्रीवर्धमान जिनस्तुति॥

चाल—श्याम बिन औगुन रथ परताया।

वीर प्रभु तुम चरणी चितलाया। तुम चरणशरण में आया। वीरप्रभु तुम०॥अंचली॥ पूरव भव में नाथ जी, सेवी थानक वीस तिर्थंकर शुभ नाम को, बांध लिया जगदीस। प्राणत देव से आया॥वीर०॥१॥ कुल सिद्धारथ राय के, क्षत्री कुंड मझार। त्रिशला रानी कूखसे, सुदि तेरस तिथि सार। मास मधु जिन राया॥ वीर०॥ २॥ आसन कंपा इंद्र का, जन्मे वीर जिनंद। जन्म महोछव कारणे,

मिलिया चौसठ इंद । मेरु शिखर गिरि राया ।
वीर० ॥ ३ ॥ अनंत बली पिण देख के, लघुतर
बालक सार । इक कोटि सठलाख की, कैसे
सहसी धार । सुरपति मन शंकाया ॥ वीर०॥४
अवधी ज्ञाने देख के, इंदर को जिनराज ।
संशय मन गत इंद्र के, दूर करन के काज ।
अंगुष्टे मेरु कंपाया ॥वीर०॥५॥ थरहर कंपे सुर
गिरि, हरि शोचेततकाल, क्या उपद्रव यह हुआ
शुभ अवसर विन काल । शचिपति अति घब-
राया ॥ वीर० ॥ ६ ॥ अवधि ज्ञाने देख के, काम
कियो जिनराज । बल तुमारा जानिया, खमो
खमो महाराज। निज अपराध खमाया ॥ वीर०
॥ ७ ॥ जन्म महोछव विधिसुं करके, नंदीसर
गये इंद । आठ दिनों का महोछव करके, मन
में अति आनंद । निज निज धाम सधाया ॥

वीर० ॥ ८ ॥ क्रम से प्रभुजी दीक्षा लेके, अष्ट कर्म करी दूर। अजर अमर अज अटल सरूपी, सुख पाये भरपूर। आतम वल्लभ पाया ॥ वीर० ९

कलश।

इम चार वीस जिनंद थुनिया भक्ति भावे हित करं ॥ शसि तीन युग दो वीर संवत आतम संवत नव धरं ॥ तप गछ नायक विजय आनंद सूरि नाम सुहंकर ॥ तस सीस लक्ष्मी विजय वाचक ढूढ कौशिक दिनकरं ॥ १ ॥ तस सीस वाचक हर्ष विजया तास सेवक लघुतरं ॥ मुनि आदि वल्लभ विजय अंने अल्प बुद्धि थुति करं ॥ श्रीविजय कमल सूरीस राज्ये सुरचना पूरन करं ॥ जे पढे भावे पाप जावे भूल मन सब सुध करं ॥ २ ॥ इंदु रस निधि चंद्र विक्रम साल

गिनती आनिये ॥ मास फागन तिथि दशमी पक्ष उज्जल मानिये ॥ श्रीआतम आनंद जैन सभा पंजाब अर्पण जानीये ॥ लिखी प्रथमादर्श मांही विमल विजय वखानीये ॥ ३ ॥ इति

श्रीसिद्धाचलजीके स्तवन

तीर्थ सिरि सिद्धाचल राजे, जहां प्रभु आदिनाथ गाजे ॥ अंचली ।

श्री सिद्धगिरि तीरथ बडो, सब तीरथ सिरदार
गणधरपुंडरिक मोक्षसे, नाम पुंडर गिरिधार
नाभिनंदन इण गिरि राजे ॥ तीर्थ०॥ १ ॥

विमलाचल कंचन गिरी, सिद्ध क्षेत्र शुभ ठाम
जो सेवे भक्ति भाव से, पावे अविचल धाम
धाम गुण गण का ये छाजे ॥ तीर्थ०॥ २ ॥

जय जय श्रीजिन आदि देव, धर्मधुरंधर जान

पूर्व नवाणूं नाथ जी, आप पधारे आन।
आन ये तीरथ की बाजे। तीर्थ०॥ ३॥

यात्रा करने के लिये, ठौर ठौर के लोग।
आते हैं शुभ भाव से, शुद्ध पुण्य के जोग
पापी इण गिरि आतें लाजे॥ तीर्थ०॥४॥

नंदन दशरथ राय के, रामचद्र गुण धाम।
पांडव पांचों भरतजी, पाये पद अभिराम।
नाम सिमरन सें अघ भाजे॥ तीर्थ०॥५॥

दर्शन शुद्धि कारणे, यह तीरथ शुभकार।
द्रावड वारी खिल्लजी, दश कोटि परिवार।
आये शिवपुर लेने काजे। तीर्थ० ६॥

सूरि शुक शेलक थया, थावच्चा ऋषिराय।
षट नंदन देवकी तणे, राम कृष्ण के भाय
हुये इन गिरि शिवपुर राजे॥ तीर्थ० ७॥

रिषि तपी मुनि संयमी, रत्न त्रयी के धार।
अनशन कर मुगते गये, आतम वल्लभ तार।
तारणे तीरथ सिर ताजे ॥ तीर्थ० ८ ॥ इति

(चाल—जय बोलो जय बोलो।)

जाइये जी जाइये जी मेरे भाई सिद्धाचल जाइये जी। करीये जी करीये जी मेरे भाई यात्रा करीये जी। भेटो जी भेटो जी मेरे भाई ऋषभदेव भेटो जी। पूजो जी पूजो जी मेरे भाई ऋषभदेव पूजो जी ॥ अंचली ॥ श्रीसिद्धाचल तीरथ सारा, पर्वत में जिम मेरु उदारा। मंत्र में मंत्र नवकारा, हइये जी हइये सिद्धिगिरि धारा ॥ सि० १ ॥ तारागण में चंद प्रधाना, जल मांहि जलधर मन माना। नरनारी में जैसे राना, तैसेजी तैसे हिमगिरि जाना। सि०

।२। पखीमें उत्तम जिम हंसा, जिम कुलमें प्रभु ऋषभ का वंसा। नाभी कुलकरका है अंसा, कहीये जी कहीये शुद्ध न शंसा ॥सि०॥३॥ चाहत जैसे चंद चकोरा, जिम चाहे जल घट मन मोरा। माता जिम चाहे मन छोरा, मनको जी मनको तिम में जोरा॥ सि०॥४॥ विंध्याचल रेवा गज राचे, जिम धेनु वछडा मन माचे, कामी जिम कामिनी को जाचे, जाचुंजी जाचु, सेवा साचे ॥सि०॥५॥ ऋषभ अजित संभव जिन स्वामी, अभिनंदन सुमति जग स्वामी। पद्मप्रभु सुपारस नामी, चंदाजी चंदाप्रभ गुण धामी॥ सि०॥६॥ सुविधि शीतल श्रेयांसदेवा, वासुपूज्य जिनेसर देवा। सुर नर पति करते नित सेवा, सेवाजी सेवा अनंत फल लेवा। सि०॥७॥ विमल अनंत श्रीधर्म जिनंदा, शांति

नाथ मुख पूनम चंदा। कुंथु अर शिव सुख को कंदा, मल्लिजी मल्लिनाथ प्रभु नंदा ॥ सि०॥८॥ मुनिसुव्रत नमिनाथजी नेमि, पारसनाथ परस जगहेमी। महावीर नमते भवि प्रेमी, आयेजी आये विना प्रभु नेमि ॥ सि०॥९॥ ये तेवीस जिनेसर प्यारे, सिद्धाचल तीरथ को पधारे। अवसरपिणी शिखि चोथे आरे, आदिजी आदि नाथ के वारे। सि० ॥११॥ गणधर पुंडरीक मोक्ष पधारे, पुंडरगिरि अभिधा जग धारे। शुक राजन निज कारज सारे, शत्रु जी शत्रुंजय भिध कारे ॥ सि० ॥ १२॥ पांडव शुक शेलक बलवंता, थावच्चा सुत अति गुणवंता॥ इण गिरि मोक्ष दुआर पहुंता, गावेजी गावे सूतर ज्ञाता। सि०१३। रामचंद्रने ध्यानलगाया, ला रही जोर चलाने सीया। ब्रह्मज्ञान सट

पट के लिया, इण गिरिजी इणगिरि शिवपुर लया । सि० १४ । नंदन छो देवकी के संता, भरतादि मुनिवर अनंता । आदीश्वर जिन ध्यान धरंता, होये जी होये शिववधू कंता । सि०।१५। द्राविडवारी खिल्ल पधारा, दश कोटि मुनिवर परिवारा । शुभदिन कार्त्तिक पूनम धारा, मुक्तिजी मुक्ति रमणी भरतारा । सि०१६ सीमधर जिन आप प्रकासे, सिद्धाचल तीरथ जग कासे । इण सम तीरथ और न भासे, भावे जी भावे भव भय नासे । सि०।१७॥ पशु पंखी जो इण गिरि आवे, निश्चय ऊर्द्ध गति सो जावे । भावे नर परमातम ध्यावे, जल्दी जी जल्दी मोक्ष गति पावे । सि०॥१८। पूरव पुण्ये तीरथ पामी, मन वच काया न करो खामी । अंतर ध्यान लगायो स्वामी, वल्लभ जी वल्लभ

आतम रामी । सि० १९ । इति ।

राग गौड़ी ।

देशी ॥ वीर जिनेसर स्वामी ॥

आदि जिनेसर स्वामी, सिद्धिगिरि आदि० ॥ टेर

तनु संसारी जो भवी होवे,
सो दरसन तुम पामी सि० ॥ १

मात तात सुत भ्रात सुहंकर,
तुम विन सब ही निकामी । सि० ॥ २ ॥

राजु चउदमे सिधगिरि सम नहीं,
भविजन को विसरामी । स० ॥ ३ ॥

महानंद पद छिन में देवे,
सत चिद आनंद धामी । सि० ॥ ४ ॥

जीव अनंते सिधगिरि ऊपर,
होए शिव मग गामी । सि० ॥ ५ ॥

विमलाचल मंडन अघ खंडन,
करम कलंक को वासी। सि० ॥ ६ ॥
जग तुम चरण सें सिधगिरि तीर्थ,
सब तीरथ में नामी। सि० ॥ ७ ॥
यम शम तप कर केवल पायो,
मोह सुभट को दामी। सि० ॥ ८ ॥
आए इण गिरि प्रथम जिनेसर,
पूरव नवाणु स्वामी। सि० ॥ ९ ॥
नंदन मरु देवा पर दुख भंजन,
घट घट अंतर जामी। सि० ॥ १० ॥
दरस करे भवी सिधगिरि भावे,
अविचल सुख के कामी। सि० ॥ ११ ॥
सूरि धनेसर इम पयंपे,
पंच भवे शिव गामी। सि० ॥१२॥

रिषभ जिनेसर जग परमेसर,
वल्लभ नितहु नमामि । सि० १२ ॥इति

॥ टप्पा ।

(मेरी करो माफ तकसीर पियाजी तुम चरणोंकी दासी

भवि ध्यावो सिधगिर राज, राज अति शिव
सुख का भारा । भ० ॥ टेर ॥

जिहां सिद्ध हुए वहु साधु,साधु पद पंचमी
गति पाया, तिन कारण सिद्धगिरि नाम, नाम
कर काम सुभट राया ॥ प्रभुजी ॥ आप ब्रह्म
को धार, पाद से चार, भूमि संथार, किया
निज आतम निस्तारा ॥ भवि ध्यावो० ॥ १।
सचित सर्व परिहार, हार नित्य एक वेर
जानो; पडिकमणा दोय टंक, टंकण सम
करम पथर मानो ॥ प्र० ॥ कर्मसमाज को चूर

आनंद भरपूर, करे अति सूर, शुद्ध समकित निज दिल धारा। भ० २॥ तीन भुवन के विच्च विचरते वर्त्तमान राया, श्री सीमंधर देव, देव प्रभु को यूं फरमाया। प्र०। नहीं कोई सिधगिरि तोल, के पावे मोल, यथारथ बोल, करें झट भव जल से पारा। भ०३॥ षट देवकीके नंद, नदन पांडु पांचो भाया; दशरथसुत श्री राम, रामचंद सिधगिरि को आया। प्र०। करके शुकलध्यान जार मोह रान; के केवलज्ञान, पाए शिवसुख भव सब छारा। भ०४॥ भरत ऋषभ जिन पुत्र पुत्र श्री पुडरीक थावे, लेइ दीक्षा प्रभु पास, पास प्रभु गणधर पद पावे। प्र०। पांच कोडि मुनिसाथ, आए मुनि नाथ, सिद्धगिरि पाथ, गये शिवपुर मुनिगण भारा। भ० ५॥ पुंडरीक गण धार, धार गिरि पुडरीक नामा, सिद्धक्षेत्र शुभ

ठाम, ठाम जिनपद पंकज धामा । प्र० श्रीशत्रुं जय सरण, के भव भय हरण, मोक्ष सुख करण धार चित्त पाप कर्म टारा । भ० ६॥ मनुष्यजन्म शुभपाय, पाय सिधगिरि तीरथ राया; नरक पशु नवि थाय, थाय भव पंचमे शिवराया।प्र०।आतम तारण काज, भवोदधि जहाज, के शिवपुर राज, धरे नित्य ध्यान वल्लभ थारा ॥भ०॥इति॥

—o—

नंदड़े अरणक बालक को—देशी ।

श्री सिद्धाचल तीरथ सम अन्य,
देखा नहीं जग कोइ रे । श्री० ॥ टेर ॥
विमलाचल भविजन मन रंजन,
भंजन करम कुठारारे;
आनंद शिव सुख कारणे मैंने,
चित्त में यह गिरि धारारे । श्री० १ ॥

जब तक यह गिरि फरसे नाही,
जनम सफल नवि धारारे;
फरसे सिधिगिरि तीरथ को भवि;
नरक पशु गति वारारे। श्री०॥२॥
यात्रा करो सिद्धगिरि की चेतन,
मुक्ति पुरीका द्वारारे;
भाव शत्रु की जीतसें अति;
नाम शत्रुजय सारारे। श्री०॥३॥
नंदन नाभि श्री प्रथम जिनेसर,
पूर्व नवाणु वारारे;
तिन कारण इस काल में भवि,
यात्रा नवाणु कारारे। श्री० ॥ ४ ॥
दश कोटि द्रावड वारिखील्ला,
तीन राम परिवारारे;
गणधर पुंडरीक पांच कोटिसु,

पाये शिव सुख भारारे । श्री० ॥ ५ ॥

सूरज कुंड अनूपम जल सें,
पूजा विविध प्रकारारे;
करी अनंते सिद्ध हुए बहु,
गिनती करत नहीं पारारे । श्री० ॥ ६ ॥

रिषभादि आए जिन तेवीसा,
विना श्रीनेमि कुमारारे;
आतम वल्लभ कारणे जग,
तारथ सिद्धगिरि प्यारारे ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति ॥

श्रीगिरिनारजी स्तवनम् ।

गजल काफी में

मैं आया प्रभु नेम जी दरस दिखा, दरस दिखावी ना तरसावी दरसन से मोहे प्रेमजी, दरस दिखा मैं । अंचली । श्याम मूर्ति सुंदर

अति सोहे। देखत भवि जन मन को मोहे। कर्म सुभटको छिनकर्में खोहे। तरणि तिमिर को जेम जी। दरस दिखा मैं०१। बाल पणेसे प्रभु ब्रह्मचारी। त्यागी राजुलसी तुम नारी। शिव रमणी तुम लागी प्यारी। मो से नेह न केमजी। दरस दिखा ॥ मैं०॥ २॥ करुणासिंधु नाम धरायो। तूं प्रभु जग जीवन सुखदायो करुणा से पशुगण को छुड़ायो। मोहे छुडावो तेम जी। दरस दिखा मैं०॥३॥ राग द्वेष कों दूर निवारी। मोह सुभट को जड़ से टारी। चिदघन रूप शुद्ध निज धारी। शुद्ध हुए जिम हेम जी। दरस दिखा ॥मैं०॥४॥ कामी मन कामनी से राचे वछडा मन ज्यू धेनु माचे। विंध्या चल रेवा करी जाचे। मुझ मन तुम संग एमजी। दरस दिखा॥मैं०५॥ तीरथ श्रीगिरनार

सुहावे। तीन कल्याणक प्रभु तुम थावे। तीरथ भैंटी चित हरषावे। आतम वल्लभ खेम जी, दरस दिखा॥मैं०४॥ इति॥

॥ ठुमरी ॥

मोहे तज के नेमि आप चले गिरनार

मन मोहे स्वामी, नेमनाथ गिरनार ॥टेर

नवभव की प्रभु प्रीत को तोडी, त्यागी राजुल नार। मन० १ ॥ सहसा वन प्रभु चरण लियो है,त्यागन कर संसार॥मन० २॥ पचपनमें दिन केवल पायो, घाति कर्म को टार॥ मन० ३॥ तीरथ थापी दूर किये हैं,कर्म अघाति चार। मन० ॥४॥ उज्जिंत शिखरे मोक्ष सधारे, आतम वल्लभ तार॥ मन० ५॥ इति॥

श्रीकेशरियानाथजीकास्तवन

लावणी।

नगर धुलेवा मंडन स्वामी, नाथ केशरिया राया जी। भटकत भटकत पुण्य उदय में, तुम दरबारे आया जी। नगर०। अंचली। केवल ज्ञान दरस को धारी, परमानंद महाराया जी। परमातम पूरण प्रभु तुमरे, वंदू हरदम पाया जी। नगर० १। कर करुणा करुणानिधि स्वामी, करुणा कर जिन राया जी। दूर होवे ततकाल भवो भव, भाव रोग दुःख दाया जी नगर० २। दुर्भागी दालिदर मूरख, अरि संकट में आया जी। सब के तुम पदपंकज सरणा, जिम गरमी में छाया जी। नगर० ३। तू जग तारण दु.ख निवारण, जग जीवन हित दाया जी। अलख लूट भंडार तुमारा, तारक विरुद

कहाया जी। नगर० ४। केसर फूल अतर नहीं पारा, देखत चित हरखाया जी। रात दिवस दरबार खुला तुम, सब जीवन मन भाया जी। नगर० ५॥ चोर अपूरव तूं जग नामी, काल विरुद धराया जी। चोर हरे विन देखे मुझ मन, देखत तुमने चुराया जी। नगर० ॥ ६॥ ऋषभ जिनेसर जग परमेसर, वल्लभ दर्शन पाया जी। कीजो करुणा निजपद दीजो. आतम आनंद थाया जी। नगर० ७॥ इति॥

श्रीसमेतशिखरतीर्थ स्तवन।

चाल नाटक—(तरज मुजरा नित करिये)

यात्रा नित्य करिये नित्य करिये, गिरि सम्मेत शिखर पग परिये। या० अंचलि॥
वीस जिनेश्वर मोक्ष पधारे, दर्शन करी भव तरिये॥ या० १॥ काम क्रोध माया मद तृष्णा,

मोह मूल परिहरिये ॥ या० २ ॥ बीसों टुंके बीस प्रभु के, चरण कमल मन धरिये ॥ या० ३ ॥ आस्त्रवरोध संवर मन आणी । कठिन कर्म निर्जरिये ॥ या० ४ ॥ रागद्वेष प्रतिमल्ल को जीती, वीतराग पद वरिये ॥ यात्रा ॥ ५ ॥ भद्र बाहु गुरु इम पयंपे, दर्शन शुद्धि अनुसरिये ॥ यात्रा ६ ॥ मूलनायक श्रीपार्श्व जिनेसर, करी दर्शन चित्त ठरिये ॥ यात्रा ७ ॥ शुभभावे प्रभु तीर्थ वल्लभ, आतम आनद भरिये ॥ यात्रा८ ॥ इति

——०——

चाल—नाटक—(गम खाव तो कमावे—तरज-)

क्या कोइ गावे सुनावे प्रभु महिमा तोरी है जग अपर अपार। क्या० अंचली। देव देवेसर नर नरेसर मुनि मुनीसर हजार ॥ ये, सारे के सारे नित गुण गावे फेर न पावे पार । क्या०

॥१॥ तेरी स्याद्वाद वानी कहे मुनी ज्ञानी सुनेभवि प्रानी सार ॥ है मोक्ष निसानी महा सुखदानी करे भवजल से पार ॥ क्या० ॥२॥ जय जय कारण दुख निवारण भवजल तारण हार ॥ सीस नमाऊं मैं तुम गुण गाऊं मुख बोलूं जयकार ॥ क्या० ॥ ३ ॥ हे जिनराज गरीब निवाज मेरे सिरताज आधार ॥ दो दश धारक अठ दश वारक तारक भवि संसार ॥क्या०॥४॥ आतमराम सदा शिवधाम करो मुज काम उदार ॥ निज सम कीजो सदा सुख दीजो वल्लभ पार उतार॥क्या०॥५॥इति

चाल—नाटक (मुझे दे तो बता कहां जाके छिपा—तरज)

प्रभु वंदन करे नित्य नमन करे भवसागर तरे जिन जप जप जप ॥ किया पूजा विचार

जो दोनो प्रकार करे सारा ससार भव टप टप टप ॥१॥ पूजा सुख की है वेल मिले स्वर्गों के खेल होवे सिद्धो विच मेल कर्म खप खप खप। प्रभु पूजा सुधार कही शास्त्रानुसार दुर्गति को निवार नर्क कप कप कप ॥ २ ॥ विना सरधान सही सुध किरिया नही जिन देवे कही तज गप गप गप ॥ उड़ा दुर्मति काग जावे मनोभव भाग लगा ध्यान सुलाग करे तप तप तप ॥३॥ प्रभु मूर्त्ति अमाल करे आतम के ताल देवे मोह को रोल मार धप धप धप ॥ ऐसो वली प्रभु भूप नहीं परे भव कूप होवे चेतन सरूप नहीं मप मप मप ॥ ४ ॥ फूली आतम फुलवार क्षमाशील जलधार सुन्दर गुण गलहार देवे छप छप छप ॥ घन देखके मोर जैसे चद चकोर प्रभु दर्श से जोर वल्लभ लप लप लप ॥ ५ ॥

होई आनन्द वहाररे प्रभु वैठे मगनमें । होइ० ॥अंचली॥ अष्टादश दूषण नहीं जिनमें, प्रभु गुण धारे वार रे॥प्रभु०॥१॥चौतिसअतिशय पैंतिस वानी,जग जीवन हितकार रे ॥प्रभु०॥२॥ शांतरूप मुद्रा प्रभु प्यारी, देखोसव नरनार रे ॥ प्रभु०॥ ३ ॥ आनन्द थावो प्रभु गुणगावो, मुख वोलो जयकार रे॥प्रभु०॥४॥प्रभुभगतीसे वल्लभ होवे, आनंद हर्ष अपाररे ॥ प्रभु०॥५॥ इति ॥

———०———

वाल रासधारीयोंकी (सुनरी जसोदा माईरे—देशी)

जग देव और नाहीं रे, जिनराज के समानी ॥ अंचली ॥ जिन राग द्वेष जीतारे, हटाया मोह अज्ञानी । घाती करम खपाय के, कहाया ब्रह्मज्ञानी ॥ जग० ॥१॥ न नारी संग जिसके रे, यह काम का निशानी, जिसके है साथ

नारी, नहीं देव सो अज्ञानी ॥ जग० ॥ २ ॥ नहीं शस्त्र हाथ कोई रे, नहीं वैरी कोइ जानी। है शस्त्र हाथ जिसके, नहीं देव वैरी मानी ॥ जग० ॥ ३ ॥ नासाग्र दृष्टि धारी रे, अमृत रस भरानी। पद्मासनस्थ सोहे रे, देखीमें मन ठरानी ॥जग० ॥४॥ जिनशांतरूप सोहेरे। आतम सम करानी॥ दृग दर्श मोहे दीजेरे, वल्लभपद दानी ॥जग०॥ ५ ॥ इति ॥

(भैरवी)

अब तो प्रभुजी का लेलो सरन ॥ अंचली ॥ आरज देश उत्तम कुल जाती, मानवभव अब पायो रतन ॥ अब ॥ १ ॥ द्रव्य भाव से पूजा प्रभु की, महानिशीथे जिनवर वचन ॥अ०२॥ दृही को पूजा दोनों ही सुन्दर, भाव पूजासे

साधु लगन ॥ अ० ॥ ३ ॥ अष्ट द्रव्य से द्रव्य पूजा है, भाव पूजा करो प्रभू नमन ॥ अ०॥४॥ जिन प्रतिमा जिन सरखी मानो, आतम वल्लभ तारन तरन ॥ अ० ॥ ५ ॥ इति॥

(भैरवी)

प्रभु नाम अब शरन खरी ॥ अंचली ॥ तीर्थंकर भगवान जिनेसर, संभु स्वयंभू पारग हरि०॥ प्र०॥ १ ॥ वीतराग परमेष्ठी अर्हन केवली बोधिद पारं करी ॥ प्र० ॥ २ ॥ एक अनेक से आदि अनादी,अव्यय विभु भवसिंधु तरी ॥प्र०॥३॥ सम्यग दर्शन ज्ञान सरूपी,दोष अठारां गये जरी ॥ प्र०॥४॥ आतम ही परमातम होवे, आतम वल्लभ ज्ञान परी॥प्र०॥५॥ इति॥

(गजल)

फूलों की वहार फूलोंकी वहार प्रभुजी तोरे अंग पै फूलों की वहार ॥ अंचली ॥ चम्रा मरुआ राय चवेली, मोगर केतकी लार ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ जासुल नाग पुन्नाग मोनिया, पाडल खसबोदार ॥ प्र० ॥ २ ॥ कुमुद वकुल गुलाव केवडा, अरविंद फूल मन्दार ॥प्र०॥३॥ जाई जूई वोलसीरी ले, मचकुद कुदही सार ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ भाव से पूजे फूल से प्रभु को, आतम वल्लभ तार ॥ प्रभु० ॥५॥ इति ॥

तारो तारो जो मोहे तारो जिनंदजी सरण परे की करुणा करी अव तारो तारो ॥अंचली॥ हु अनाथ मोहे नाथ तू मिलीयो, तुमविन लाख चोरासी में रुलियो । मोह जाल वस

आपको भूलीयो, काटो करम मुझ भव भव फंदजी ।। सर०॥१॥ ये संसार सुपनसी माया, जैसे सिगर दुपहरे छाया। बादल रंग विजली चमकाया, विणसतां देर न पलक करंद जी ॥ स० २ ॥ अब आतम वल्लभ मैं चायो, तुम विन और नहीं है सहायो। तूं जगदेव मेरे मन भायो, तूं सतचिदघनरूप आनंद जी ॥ सरण० ३ ॥ इति॥

तारो तारोजी मोहे तारो जिनंदजी सरण ग्रहेकी लाज ग्रही अब तारो तारो ॥ अंचली ॥

ये दुनिया है झूठ तूफानी, इनमें नहीं कोई अपना जानी। तूं जग देव तरन तरानी, काटों प्रभु जी मुझ कर्म को कंदजी ॥ सरण० ॥ १ ॥ आदि अंत विन ये संसारा, सागर सम नह

पारा वारा । जनम मरण बिच जल है भारा, आठों करम पहार कहंद जी ॥ सरण० ॥ २ ॥ चार कषाय करस दुखदाई, वड़वानल जहां काम कहाई । जग जीवन को देवे जलाई, प्रभु विन कौन उद्धार करंद जी ॥ सरण० ॥ ३ ॥ तृष्णा लहेर फेन अहंकारा, दु ख देवे प्राणीको भारा, इनसे मेरा करो किनारा. तुमविन और न सरण लहंदजी । सरण०॥४॥ भवसायर मुझ नावा अटत हे, पांच इंद्रि जहां चौर कटत हैं ॥ लाख चौरासी भमर नटत है, पार उतारो मुझ नावा जिनंद जी । सरण० ॥५॥ तू सत चिदघन रूप सुहकर, अजर अमर अज अलख अगोचर॥ आतम लक्ष्मी रूप अनघ वर, वल्लभ आनंद हर्ष अमंद जी ॥ सरण० ॥ ६ ॥ इति ॥

(चाल—चेतो चेतो जो अरवा चेतन चतुर)

तारो तारो जिनंद जी तारो जिनंद प्रभु तारो जिनंद प्रभु आया मैं तुमरे हजूर। अंचली

उत्तम सत्व क्षमा गुण धारी, मृदु ऋजु कियो इन्द्री दमन ऐसे मदन को कीना है दूर तारो० १ ॥ अष्ट कर्म हारी अष्ट गुण धारी, चिदानंद सतरूप लियो कियो सिद्ध नाम मशहूर ॥तारो० २॥ शारद शशिसे अधिक सौम्यता, तेज प्रतापे अधिक अधिक जैसे बादल विना का है सूर ॥ तारो०॥३॥ मोद होवे प्रभु तुम दर्शन से, जैसे चकोर शशि चकवा दिनंद होवे मेघागमन से मयूर ॥ तारो०॥४॥ नागार्जुन की सिद्धि कानी, पास थंभन करूं तुमको वंदन मिटे राग द्वेष महाक्रूर ॥ तारो०॥५॥ करो कृपा आतम गुण आपो, होवे वल्लभ जग वल्लभ

पारस प्रभु बक्षो अब अपना सुनूर॥तारो०६॥इति

(चाल—राज कमडोथा खोल)

श्रीचिंतामणि महाराज भवोदधि पार करो। श्री०अंचली।

ज्ञान अनंत जीवन सुख धारी, वीर्य अनंत चारो बलिहारी, सुर नर मुनि गणपति गणधारी, तुम सब के सिरताज॥ भवी० १॥ येही अनंत चतुष्टय जानु, सब जीवो में पिण नही मानुं, तुम में है सही सरधा आनुं, दोष गये तुम भाज॥ भवो०॥ २॥ दोष क्रोध माया लोभ माना, मनजन्मा रति हास्य अज्ञाना, हिंसा झूठ आदि नही आना, नारो गरीब नि-वाज॥ भवो०॥३॥ पक्षपात का छोर विचारा, अवगुण नही प्रभु गुणके भंडारा, ब्रह्मा विष्णु

शिव कर धारा, एक ही श्रीजिनराज ॥ भवो० ४ ॥ सुरतरु सुरधेनु मणिहारा, तुम सम और न जग दातारा, मैं याचक आया तुम द्वारा, सिद्ध करो मम काज ॥ भवो०॥५॥ अपने नाम की लज्जा कीनी, पारस को शक्ति तुम दीनी, मैं प्रभु चरण शरण तुम लीनी, राखो सेवक लाज ॥भवो०॥६॥ अजर अमर अज अलख निरंजन, अजर अगोचर भव भय भंजन, द्यो शक्ति कर्मारी गंजन, वल्लभ आतम राज। भवो० ७। इति ॥

(चाल—कूड दी फकीरी नालों चोरी चंगी प्यारिया।)

सांचे दिल सेवो प्यारे, श्री पारसनाथजी, अंचली ॥ मदन कदन टारी, नव विध ब्रह्म धारी, प्रभु शुद्ध ब्रह्मचारी, होये काम माथजी सा० १ ॥ कर्मसे युद्ध करी, जय शिव सिरी

वरी, शुद्ध ब्रह्म रूप धरी, होये शिव पाथ जी; सा० २। चंद से विमल स्वामी, सूर से प्रकाश धामी, निरदोष प्रभु पामी, पूजो निज हाथ जी। सा० ३। पूजा प्रभु शांतिकारी, रोग सोग देवे जारी, भव जल तारण हारी, शिवपुर साथ जी। सा० ४। आतम आनंद दाई, पूजा फल सिद्ध थाई, हरषे वल्लभ गाई, प्रभु गुण गाथ जी ॥ सा० ५। इति।

(चाल-कहमैं वधा तुझ बिन बाग बहार)

पारस जिन तूं जग जीवन प्राण। पा० अचली ॥

राग द्वेष मद मोह उपाधी, काम न नाम निशान। अष्टादश दूषण नहीं तुम में, गुण बारां परमान। पा० १। पद्मासन मुद्रा अति प्यारी, नयन सुधा वरसान। शांत वदन कज

देखके मुझ मन, गूंजे भ्रमर समान । पा०२ ॥ सुर सुरपति किंनर विद्याधर, नरपति सेवे आन। रात दिवस घड़ी पल २ दिल में, धरता हूं तुम ध्यान । पा० ३ । कर करुणा करुणानिधि स्वामी, तूं करुणा रस खान । कल्याण पारस विरुद तिहारो, कर सेवक कल्याण । पा० ४ ॥ रत्न चिंतामणि सम तुम दर्शन, पावे सो पुण्यवान । वैरावाल दर्श तुम पायो, आतम वल्लभ मान । पा० ५ । इति ॥

(चाल—लच्छी की)

प्रभुजी कुंथु जिन्न जग स्वामी । जगस्वामी जगस्वामी घट घटके अंतरजामीजी ॥कुंथु०१॥ प्रभुजी पूरण सुखधामी। सुखधामी–सुखधामी पंचम गति शिवपुर गामी जी ॥कुंथु० ॥२॥ प्रभुजी देव अनंत नामी। अनंतनामी२शुद्ध मन

वंच काया नमामि जी ॥कुथु० ३॥प्रभुजी मोह करम वामी। करम वामी–करमवामी हुए निज गुण आतमरामी जी॥ कुथु० ४ ॥प्रभुजी नाथ परम पामी। परमपामी–परमपामी सेवक को नहीं कोई खामी जी ॥ कुथु०५ ॥ प्रभुजीसेवक सुख कामी। सुखकामी–सुखकामी करो वल्लभ आनंद धामी जी ॥कुथु० ६॥ इति।

(चाल–तीर्थ श्रीसिद्धाचलराजे)

सुनो प्रभु पार्श्वनाथ स्वामी,करू अरजी मस्तक नामी ।सुनो० अचली ॥

देव प्रभु ईश्वर खुदा, हरिहर ब्रह्मा राम, तिर्थंकर अरिहंतजी,उसको करू प्रणाम । दिये दूषण जिसने वामी। सु० १। जगकर्त्ता जग जन कहे, जरा न लावे देर। विना देह कैसे

रच्यो, यही मति का फेर। सबब नहीं रचना का स्वामी ॥ सु० २ ॥ पराधीन नहीं देव है, जिस की आज्ञा कीध। रचना क्रीडा के लिये, रागी बाल सम सिद्ध। कहे करुणा अंतर जामी। सु० ३। करुणा से रचना करे, सुखी सकल जग होय। एक सुखी दुखी एक है, धनी निर्धन जग जोय। नहीं करुणा रसका कामी। सु० ३ रचता करमाधीन है, पराधीन तब जान। कर्म जनित विचित्रता, कहा किया भगवान। जिसे करता पद को पामी। सु० ५। प्रेरक नहीं जग देव है, सूर्य प्रकाशक जेम। कर्त्ता हर्त्ता ज्ञानसे, देव प्रकाशक तेम। नहीं इसमें कोई स्वामी। सु० ६। धन्य धन्य पारस प्रभु, उपगारी जग नाथ। जग जीवन हितकारणे, उपदेशी शिव पाथ। हुए वल्लभ आतम रामी। सु० ७। इति

(चाल—होरी—)

वंदन कली कुंड पारसको भवि आवत वे कर जोडी॥वं०अंचली॥प्रभु वंदन विन सरन नहीं है, लाख चौरासी भम्योरी,रत्न चिंतामणि मनुष्य जन्म ये पूरव पुण्य भयोरी ॥ वं० ॥ १ ॥ मूरख राच विषय सुख रसमें विरथाही जनम थयोरी, काम उडावन काज विप्र जिम डार मणि को दियो री ॥ वं० ॥ २ ॥ अब हम तुम प्रभु जांच लियो है कुमता संग दहो री,सुमता संग भयो अब नेह खेले आतम रंग होरी ॥ व०॥३॥श्रद्धा की पिचकारी बनाके ज्ञान को रग भरयोरी, चारित्र सुमना सनमुख डारी कर्मजंजीर गरयो री ॥ व०॥४॥ भावना शुद्ध मडल डफ झांझर धोंकर बाजे बज्योरी,सुमता सखी अपने आतम को वल्लभ जांच लयोरी॥ वं० ५ ॥ इति

(चाल—मल्ली जिननाथ जो व्रत लीजेरे)

कलीकुंड पास जो सुख कारारे, सेवक जन दुख निवारा । कली० अंचली ॥ अश्वसेन वामा देवी नंदारे । भविजीव कुमुद वन चंदारे । नमे खगपति सुर नर वृंदा– कली० १ ॥ प्रभु जन्मे बनारस कासीरे । प्रभु सर्व गुणों की रासीरे । तुमे तोडी करम गति फासी । कली० ॥ २ ॥ प्रभु कमठ हठो समझायारे, तुमें जलता नाग वचायारे । अमरा पुरि मांहि पुचाया ॥कली०३ प्रभु दीक्षा अवसर जानीरे, दीयो दान वरस महादानीरे । लियो संजम सुख की खानी ॥ कली० ॥ ४ ॥ प्रभु कर्म खपो हुए ज्ञानी रे, स्यादवाद वखानो वानीरे । तुम तारे बहु भवि प्रानी ॥ कली० ॥५॥ तुम तीन जगतके स्वामी रे, घट घटके अंतरजामीरे । परमानंद पद

विसरामी। कली०॥६॥ प्रभु नामें संपदा आवे रे, दुख रोग सोग कट जावेरे । नीरामय पद को पावे। कली० ॥ ७ ॥ पारस पारस नित ध्याऊरे,पारस सम हू बन जाऊरे। मनवांछित शुभ फल पाऊं। कली० ॥८॥ प्रभु पारसनाथ तू मेरोरे। मैं हू सेवक भवभव तेरो रे। करो आतमराम उजेरो। कली०॥ ९ ॥ आतमवल्लभ सुख दायारे,धरी हर्ष प्रभु गुण गायारे। लुधिआने दरस तुम पाया। कली०॥ १० ॥ इति॥

(चाल–सिमर मिरी भरनाथ चरनन)

नमो भवि ऋषभदेव चरनन–नमे सुरासुर कोटि कोटि नरभवभव अघ हरनन। नमो० अंचली ॥ माता मरुदेवी का जाया, वेद अष्ट लख पूर्व आयु कंचन वरनी काया। पिता कुल

कर नाभिराया, इस अवसरपिणी बीच जगत में प्रथम महाराया। जगत व्यवहार को बतलाया। इसी वास्ते जगत में,कर्त्तानाम प्रसिद्ध जो ध्यावे भवि भाव से हो तस घर रिद्धसिद्ध प्रभु जगति तारन तरनन । नमे० ॥ १ ॥
प्रभु नरपति जगमें भारी, छोड सकल संसार महाव्रत पांच लिये धारी। लगी तव ज्ञानध्यान तारी, घाति कर्म विडार चार घट केवल उजवारी। तबी तीरथ थापे चारी। साधु श्रावक श्राविका, चौथा साध्वी जान। ए जंगम तीरथ सही, थावर अन्य प्रमान धर्म कियो स्याद्द वाद वरनन। नमे० ॥ २॥ मूर्त्ति तिसही प्रभु की सोहे, थावर तीरथ देख प्रभु भविजन तन मन मोहे। शांत मुद्रा अति सुख कारी। नयन कमल दल वदन चंद शारद सम छपधारी।

देख के हर्षे नरनारी। इंदु वेद निधि चंद्रमा विक्रम साल सुजान। सिद्धक्षेत्र शुभ ठामसे आप पधारे आन। नगर जंडियाला शुध करनन। नमे० ॥ ३ ॥ संघजिनशासन जयकारी, गगन बाण निधि इंदु साल करली श्रीसंघ त्यारी। बनाया जिन मंदिर भारी, ऋषि बाण ग्रहचद्र माघ सुदि तेरस तिथि सारी। प्रतिष्ठा महोच्छव सुखकारी। रविजोग कवि वासरे, पुनर्वसु रिख सार। मीन लग्न छठे नवांश, प्रभु गादी पदधार। पाप सब भवभव के जरनन। नमे० ॥ ४ ॥ प्रभु आतम लक्ष्मी धारी, मूल नायक श्री ऋषभदेव पासे शांति कारी। शांति जिन धर्मनाथ राजे, ऊपर श्री वर्द्धमान अजित संभव सुमति गाजे। शांति जिन पूजे अघ भाजे। गोमुख जख दक्षिण दिशि, देवी चक्रे-

सरी पहार । माणिभद्र जख गाजता, मंदिर पहरे दार । दर्श वल्लभ आनंद भरनन । नमे० ॥ ५ ॥ इति ॥

(चाल तायाजी हम पांचों भाई)

सुविधि जिनेश्वर तू परमेश्वर, तार तार मोहे तारजी ॥ सु० अंचली ॥ तूं प्रभु तारण तरण जहाजा, तारे बहु नरनार जी । इम जानी सेवक मैं तुमरा, आया तुम दरबार जी ॥ सु० ॥ १ ॥ तुम सम और नहीं कोइ देवा, ढूंढ लिया संसार जी । कोइ रागी कोइ द्वेषी देखे, देखे संग कोइ नार जी ॥ सु० ॥ २ ॥ शांत मूरत मुद्रा तुम प्यारी, दोष दिये सब टारजी । निज आतम सम सेवक जानी, भवोदधि पार उतार जी ॥ ३ ॥ वसु बाण निधि इंदु वर्षे, मगसि

सुदि दिन सारजी। दर्शन एकादशी तुम पायो लवपुर नगर मझारजी ॥ सु० ॥ ४ ॥ दर्शन वल्लभ प्रभु मुख केरो, वार वार बलिहार जी॥ आतम लक्ष्मी सुमति प्रगटे,आनंद हर्ष अपार जी ॥ सु० ॥ ५॥ इति ॥

(चाल नाटक)

हेजी प्रभु करके दया लीजो अब मेरी खबरिया,किरपा कीजो। खबरां लीजो। सुधर जावे ए आतम बिगरिया । हेजी० अंचली ॥ चिर काल से जगमें रुलिया, वस मोह करम के भुलिया, क्रोध सतावे। अदर जलावे। जेसे आतस जलावे लकरिया। हे जी० ॥ १ ॥ मन शुद्ध गुरुदेव पिछाने,शुद्ध धर्म को तारक जाने, ममता को मारे। समता को धारे। सफल

होवे यह तेरी ऊमरिया । अरे नर होके हुशियार, बांधी तू अपनी कमरिया ॥ २॥ मान माया ने अकल भुलाई, फस लोभमें पाप कराई, क्षमा के सागर । गुणों के आगर । करो किरपा न आवे मगरिया । हेजी प्रभु० ॥ ३ ॥ त्यागे मान करे नरमाई, धरे दिल में अति सफाई, तृष्णा को त्यागे । तास्सुब से भागे । जावे अकल ए तेरी सुधरिया । अर नर० ॥ ४ ॥ आलस विषयों ने पकड़ा, लिया कामदेव ने जकड़ा, नजर न आवे । धरम न भावे । कैसे मिटेगी भव की चकरिया ॥ हेजी प्रभु० ॥ ५ ॥ सतसंग से इन को मारे, तप ध्यान से काम को जारे, होश में आवे । ज्ञान कमावे । पार होवेगा संसार सागरिया । अरे नर० ॥ ६ ॥ तन धन और जोबन माता, रहता हूं निसदिन राता, परके

कारन। करी है धारन–भरी पापोंकी शिरपर गठरिया। हेजी प्रभु० ॥ ७॥ इन सबको झूठे जाने, अपना आतम शुद्ध माने, एकता धारे। दुविधा निवारे। जल जावे उपाधि सगरिया। हेजी नर॥ ८॥ कहे वल्लभ दोकर जोरी,आतम शक्ति मोहे थोरी,आपही तारो। विरुद संभारो, तरणतारण है तुमरो डिगरिया। हेजी प्रभु० ॥ ९॥ इति ॥

॥ करले पारस संग॥ देशी ॥

धर्म जिनंद सेव, ऐसा नहीं जगदेव।
कामीते अज्ञानी क्रोधी,देव काहे माननाजी हो। धर्म० १ ॥ खान पान नाही सूझे, ज्ञान ध्यान नाही वूझे, करे पाप काया धूझे, सग नारी नाचना जी हो। ध० २ ॥ तिसें देव मानो भाइ

जिसे नाही राग काइ, नाही द्वेष मोह नाही, सबी दोष जारना जी हो। ध० ३॥ सनखतरे में सोहे, धरम जिनंद मोहे, सेवकों के पाप खोहे, निशदिन रटना जी हो। ध०४॥ संवत ते शिखिबाण, अंक इंदु मास मान, वैशाखशुभ दिन, पूनिम गावना जी हो। ध० ५॥ पौने दो सो बिंब जिन, अंजनशलाका दिन, होए पाप खीन खीन, गादी प्रभु थापना जी हो। ध०६॥ आतम आनंद थावे, पाप सब मिटजावे, फिर न संसार धावे, प्रभु वल्लभ सेवना जी हो। ध०७॥इति॥

कल्याण।

॥ प्रभु गले सोहे मोतन की माला ॥ देशी॥

भविजन धर्म जिनेसर गावे ॥ टेर ॥

गूर्जर देश से जिनबिंब आवे, सुंदर महोच्छव थावे। भ० १॥ कपड़वंज से शंकर

ठाकुर, कारण अंजन आवे । भ० २ ॥ मास्तर तिलकचंद के भेजें, छगन मणिय कहावे। भ० ३ ॥ तीरथ श्री सिद्ध क्षेत्र सुहावे, तिहां से जिनविंव आवे ॥ भ० ४ ॥ जयपुर दिल्ली नगर वड़ोदा, वरतेज से पिण आवे। भ० ५। और कई जिनविंव रतन के, पौने दोसौ थावे। भ० ६ ॥ गुरुमुख से सिद्ध खेतर निकसो, परतक्ष सो हो जावे। भ०७॥ मूलनायकश्रीआदि जिनेसर, सेवत बहु फल पावे। भ०८॥ गोकल भाइ और नगीना, किरिया सघली करावे। भ० ९ ॥ तिनमें से एक मूरति नेमि, सनखतरेमें सुहावे। भ० १०॥ सवत उन्नीसे तीरवजा राध पूनिम कहावे। भ० ११ ॥ आतम आनंद चउर बदरसे, वल्लभ देखनधावे। भ० १२ ॥ इति।

॥ श्री राग ॥

॥ वीर जिनदर्शन नयनानंद ॥ देशी ॥

सेवो भविजन धर्म जिनंद ॥ टेर ॥

ज्यूं बछड़ा नित चाहत धेनु, चाहत मोर श्याम घन वृंद, कामी कामिनी सु मन राचे विंध्याचल रेवा गजवृंद। से० १॥ राजहंस चाहत कमलाकर, कमलाकर चाहत दिन इंद, बावनाचंदन भोगी लिपटे, चाहे चंद विकाशी चंद। से० २ ॥ मंजर सुंदर कोयल चाहे, ज्यूं चाहे मधुकर मकरंद, धर्म जिनेसर त्यूं नित चाहत, भविजन सुर नर मुनिगण इंद। से० ३ ॥ धर्म जिनेसर धर्म के दाता, पाता निजगुण सहजानंद, पीके भविजन तृपत हुए बहु, नासे कर्म भरम मल फंद। से० ४॥ रागमोह नहीं द्वेष जिनों

में,भानु सुव्रता मातानंद, हेमनयर करुणा दृग करके,आतम वल्लभ मेहर करंद। से० ५ ॥ इति ॥

॥ आशा ॥

धर्मनाथ जय कारी,भानु राजा कुल चंद चढयो है।

चार साठ सुरपति मिल आवे, प्रभुको मेरु शिखर ले जावे,सोहम सुरपति गोद बिठावे, खीर सागर ल्याए वारी। भानु राजा० १ ॥ मागध वरदामन से ल्यावे,औषधि विविध प्रकार मिलावे, अच्युत सोहम स्नान करावे, वृषभरूप करी चारी। भा० २॥ केसरचंदन आंगी रचावे, फूल माला प्रभु गलमें पावे, वामे-अगे धूप धुखावे, दक्षिण दीपक सारी। भा० ३ ॥ अक्षतसेती स्वस्तिक भरते, सुंदर नैवेद्य आगे धरते, फल से पूजन प्रभु को करते,

मंगल अष्ट प्रकाररी। भा० ४ ॥ सहस्र अठोतर दीप जगावें, आरती मंगल करी गुण गावें, नाटक बतीस विध सु बनावे, आतम वल्लभ ताररी। भा० ५ ॥ ॥ इति॥

कांनड़ा ॥

और न देवा जी और न देवा, धर्म जिनंद की कर भवी सेवा;सेवा प्रभु की अद्भुत सुंदर देवे भवी शिव सुख फल मेवा। औ० १ ॥जन्म समय मिल चौसठ इंदर, मेरु शिखरपर स्नान करेवा; क्षीर समुद्र से जल भर ल्यावे, आनंद भर देवी और देवा। और० २ ॥ पूजन अष्ट दरव से करके,आरती जिन सनमुख उतरेवा; धौं धौं धौं धप धप मप छौं छौं, मादल झांझर बाजे बजेवा। औ०३॥ त्रौंत्रौं त्रिकत्रिक वीणा

बाजे,इंद्राणी नाचे शिव सुख लेवा;नाचो प्रभु के आगे भाइ, सांग धरी भव फिरना हटेवा। औ० ४ ॥दीक्षा लेइ तप ध्यान को साधी, कर्म भरम सब दूर हरेवा; उपदेश करी भवी मोक्ष सधारे,आतम वल्लभ संग धरेवा। औ०५॥ इति॥

॥ प्रभाती ॥

॥ देशी—देखोरे आदीश्वर स्वामी,कैसा ध्यान लगाया है ॥

ध्यावोरे भवी धर्मनाथ जिन,शिव संपत फल दाता है ॥ ध्या० ॥ टेर ॥

जन्मसमय मिल चौसठ इंदर, मेरु शिखर ले जाता है। क्षीर समुद्र तीरथ जल ल्याके, सुंदर स्नान कराता है। ध्या० १ ॥ पूजन सगीत नाटक करके, फिर घर को ले आता है; नंदीसर जा आठ दिनों का, देव महोच्छव रचाता

है। ध्या० २॥ अनुक्रमें राज पाट सब त्यागी, प्रभु संजम को पाता है; ध्यानानलसे घाति जलाके, केवलज्ञान जगाता है। ध्या० ३॥ द्वादश पर्षद धर्म सुना कर, शिवरमणी संग चाहता है, चार अघाति कर्म खपावी, शिव कमला सुख पाता है। ध्या० ४॥ ऐसे प्रभु को जो नर ध्यावे, चौरासी नहीं पाता है; विजयानंद सूरि पद भेटी, वल्लभ ध्यान लगाता है। ध्या० ५॥ इति

—०—

॥ श्रीराग ॥

वीर जिन दर्शन नयनानन्द ॥ देशी ॥

मुनि सुव्रत जिन हरि कुल चंद ॥ टेर ॥

चंद्र वदन जग तिमर हरे जस, शशि चकोर भवी करत आनंद; पद्मानंदन भव दुख भंजन; राय सुमित कुल नभसि चंद। मु०१

साप हटे तुम वयण सुधा सें, करम कटे मिटे भव भय फंद, नयनांबुज देखी तुम सुंदर, मधुकर सम मन हर्ष अमंद। मु०२॥ साम वरण तनु कांति सोहे, चोहे जग जीवन बहु वृंद, केवलज्ञान दिवाकर प्रकटे, ज्यू कमलाकर रवि विकसंद। मु०३॥ जैसे पटरस स्वादको तजके, चाहे वायस विट मतिमंद, हरि हर ब्रह्मा क्रोधी कामी, मानी माने छोड जिनंद। मु०॥४॥ हु अति दीन हीन जगस्वामी, तुम चरणोंका ध्यान धरंद; नारोवाल नयर करुणासें, आतम वल्लभ हर्ष करंद॥ मु०॥५॥ इति।

मेहवूबजानिमेरा॥देशी॥

भवि नमो जिनेसर देवा, श्रीसुव्रत स्वामी; जगदंब नहीं जास सम को, आतम विसरामी

भ० १॥राग द्वेष मोह सब्ब जीते, जिनवर पद पामी; केवल ज्ञानी तब कहिये, शिवमग के गामी॥भ०२॥ निजरूपसे व्यय नहीं होवे, अव्यय पद धामी;केवल ज्ञाने करी व्यापक,विभु जग में नामी ॥ भ०३॥ बुध एकानेक अनंता, त्रिधि विश्नुरामी; शिव शंकर जिन अरिहंता, आतम परिणामी ।भ०४॥ अघहर अघमोचन अरहा,जग त्रिभुवन स्वामी;अज अलख निरंजन ज्योति, जंतु विसरामी। भ०५ ॥ ज्ञानादि गुण अनंते, दूषण सब वामी; तिन कारण नाम अनंते,परमानंद धामी॥ भ० ६ ॥ क्या सिफत करुं मैं तोरी, जग अंतरजामी;भक्ति वस होके चाहुं, पिण शक्ति खामी ॥भ०७॥ संवत युग पण निधि चंदा, उच्च ग्रह स्वामी; वैशाख आठ दिन देवा,तुम दर्शनपामी। भ०८ ॥ पुरि नारो

वाल प्रभु सोहे, वल्लभ घन नामी, उत्सव अति सुंदर होवे, आतम पद ठामी। भ० ९ इति ॥

॥ देशी ॥

(मेरा लक्ष्मन बेटा तू रघुवर सग जा)

भवि सेवो भावे मुनिसुव्रत जिनराय, राय सुमति कुल दिनकर प्रगट्यो पद्मादेवी माय जिनंदजी मुनिसुव्रत । टेर ।

भव तीजे निरधार, वीस थानक उदार तप शुद्ध चित्त धार, नाम जिन दृढ़ पाय क अपराजित मे जाय भविका । मुनि० १ । देव आयु पूरा करी, कूर्म लछन को धरी, आठम वदि जेठ खरी, स्यामवरण धरायके, जन्मे राजगृही आय भविका मुनि० ।२। समय दीक्षा निज जानी वरसीदान वरसानी, अनुकंपा को दिखानी, राज पाट सब त्याग के, संयमसुं चित्त लाय

भविका । मुनि० ३ । पीछे मास एकादस, वदि फागण दुवादस, ध्यान शुकलमें वस, घाति कर्म खपाय के, केवलज्ञान जगाय भविका ; मुनि० । ४ । अष्टादश दोष जार, करी जग उपगार, भवि जीव बहु तार, आठों कर्म जराय के, आतम वल्लभ थाय भविका॥ मुनि० ५ इति

मेहबूबजानि टप्पो।

भवि सेवो पास जिनंदा, शिव सुख फल कंदा; अज्ञान तिमिर जग नाशे, नभ चढे रवि चंदा । भ० १ । जग पारस लोहा फरसे, जांबू नद होंदा; प्रभु पारस नाम के जपसे, सुर नर मुनि इंदा । भ० २ । पारस कलिकुंड को देखी, भवी मोद करंदा; जैसे मधुकर कलियों का, पीके मकरंदा । भ० ३ । प्रभ अश्वसेन कुल

चंदा, माता वामा के नंदा, देखी भवी होत आनंदा, जिम सागर चंदा ॥ भ०॥४ ॥ प्रभु वचनामृत को पीके, अमृतरस केलि करंदा, समता रस नयना देखो, रस अमीवरसंदा॥भ०५ प्रभु कलपतरु अब मिलीयो, चितामणीदा, छड आक काच क्यों चाहे, मूरख मतिमंदा। भ०६ अब ज्ञान प्रभु तुम झलका, तुम चरण कमल हर्षंदा, लुदिहाने आतमराया, जगवल्लभ नंदा ॥भ०॥७॥ इति ॥

देशी महबूबजानी।

जग वल्लभ पारस स्वामी, घट घट में तुं, विसरामी, तुम तीन जगत के स्वामी, रटता हूं नाम नामी ॥ ज०१ ॥ अनि विषरत संगे राच्यो, ज्यु सूकर ग्रामी । जिनपति चरणन

को छडके, अति करत गुलामी । ज० २ । अति काम क्रोध मद मातो, माया विसरामी; सत् संग करने में आलस,एही अति खामी । ज० ३ तुम दीनदयाल करुणा कर, करुणारस स्वामी; अब सेवक करुणा कीजे,जग अंतरजामी। ज० ४ मैं चरण सरण तुम आयो, परमानंद धामी; मालेरकोटले वल्लभ,आतम पद पामी। ज०५

इति ।

कोयलटौंकरहीमधुवनमें। टेशी

रामनगर सोहे पासजिनंदा, देखी भविजन होत अनंदा। रा० टेर ।

प्राणत देव थकी प्रभु आयो,नगर बनारसमें प्रभु जायो, देव देवी मंगल तुम गायो; पोहदसमी को दिन ठेहरायो । रा०१ ।बालपने प्रभु ज्ञानी

कहायो, कमठ हठीको दूर हटायों, जलनजलंतो नाग बचायो, छिनमें रायधरनींद बनायो। रा०२ लेई दीक्षा प्रभु केवल पायो, दोष अठारह दूर करायो, पांच विघ्न रति हास, अरति अरु, राग द्वेष अज्ञान मिटायो। रा० ३। नींद घृणा भय शोक मिटायो, काम अरिको दूर भजायो, मिथ्या अविरति गढतुम ढायो, जगमेंजीवनमुक्त कहायो रा० ४। तीर्थंकर हो मोक्ष सधायो, पुरिसा दानि विरुद गवायो; पच कल्याणक येह प्रभु गायो। गावत ही आनंद सुखपायो ॥ रा० ५ ॥ चिंतामणि तुम नाम धरायो, दूर देश से सेवक धायो; चरण सरण वल्लभ तुम आयो, चिंतत यो आतम महारायो ॥ रा० ६ ॥ इति

ठुमरी।

आवो नेम सुख चेन करो॥ देशी॥

चिंतामणि महाराज आज तुम सरणी आयोरे टेर
विरह प्रभुके अतिही कठिन,काल अनंता दुख
सहन; ज्यूं त्यूं प्रभु तुम हाथ लगन, निज मुख
सें बुलावो रे ॥ चिं० ॥ १ ॥ देव देव जग जीव
कहन, सुद्ध स्वरूप न कोइ लहन,रमणी वृंदको
साथ बहन, नहीं काम मिटायोरे ॥ चिं० । २ ॥
धनुष चक्र हल शंख धरन, पाप पींडसें पेट
भरन; कपट करी कोइ युद्ध करन, निज रूप
न पायो रे ।चिं०३ ॥ रागादि सब दोष वमन,
कर तुम जगका चित्त ठरन; तुम विन कोइ न
चिंता हरन, एही दिल में ठायोरे। चिं० ॥४॥
साचे देवका चरण फडन, दूर भये सब मदन

कदन; जारे आतम ध्यान धरन, वल्लभ पद्
दायोरे । चिं० । ५ ॥ इति॥



इतना संदेशा मोरारे ॥देशी॥

अरजी प्रभु ए मोरीरे, धारो कहू कर जोरी, करुणा
नजर अव करके, ठारो कर्म अघ खरके ॥टेर॥
सागर सरीखा जानोरे, जगवास एही मानो
जल वार जन्म मरना, भ्रम जान दुख भरना ॥
अ०॥ १ ॥ मच्छादि रोग सोग रे, वरवा हे काम
भोग, करसे कसाय चारो, गिरि कर्म आठ
धारो ॥ अ० ॥ २ ॥ तृष्णा तरंग अपारारे, जल
पाप आवे भारा, तस्कर करण भारे, धर्म
जहाज फारे। अ०३। नावा फिरे वहां मोरीरे
सरणा हैं मोहे तोरी, खींचो प्रभु मोह डोरी,
कहता हुं हाथ जोरी ।अ० ।४। पट्टी नगर सोहेरे,

पारस मन मोहे, आतम रूप धारा, वल्लभ है दिदारा । अ० ॥ इति ॥

दादरा ।

॥ वृन्दावनियों की चाल ॥

(धीरे चलो चमन मेरे क्या गुलबहार है)

पट्टीनगर बिच सोहे पास प्रभु प्यारा । टेर ।

मन्दिर अनूप सोहे जिम गगनविच तारा । आनन्द देखी होवे भवी चन्द ज्यों चकोरा । प० १ । वामादेवीके जाया प्रभु पास २ टारा । अति शांत दिल होवे शांत देखी तुम दिदारा । प०२ ॥ करण तीन शुद्ध कर जो ध्यावत एक वारा । संसार पारावार से भवी होवे सो कनारा । प० ३ । नहीं मंत्र तंत्र जंत्र जड़ी और उपचारा । केवल निश दिन प्रभु नाम ही आधारा । प० ४ ॥ आतम सरूप दीजीए दरस

ज्ञान भारा। आनंद लक्ष्मी हर्ष वल्लभ करत है पुकारा ॥ प०५ ॥ इति ॥

॥ कल्याण ॥

सेवो भविजन प्रभु पास जिनिंदा ॥ टेर ॥ अश्वसेन कुल दिनमणि सोहे, माता वामाजी के नंदा ॥ से० १ ॥ नीलवरण तनु कांति मनोहर, मुख शारद का चंदा ॥ से० २ ॥ नव रयणी तनु आयु वरस शत पूजत सुर नर इंदा ॥ से० ३ ॥ वयण सुधारस मेघ वरसता, भविजन मन विकसदा । से०४॥ गुजरावाल में पारस वल्लभ, आतम आनद कंदा ॥ से०५ ॥ इति १९ ॥

॥ देशी ॥

गुरु आतम गुरु आनंद कारी।

प्रभुपारस भवजल पारकारी, जिनों के दर्श से भवताप टारी ॥ टेर ॥

नगर बनारस में प्रभु जन्म लीनो, पिता अश्वसेन कुलमें जस कीनो; वामादेवी माता चित्तको आनंद दीनो, मिली सब इंद्र सुंदर महोच्छव कीनो ॥प्र०॥ १ ॥ कमठ दस भवको संबंधी मानी, तपे पांच धूनी तपसा महा अज्ञानी;जलंतो नागतिहां प्रभु आये जानी;कहे नहीं एह तापस धर्म निसानी ॥ प्र०॥२ ॥ सुन तापस मन बहु क्रोध आयो,प्रभु हुकमसे सेवक लकड़ फड़ायो; देखी दुखी नाग प्रभु सेवक फरमायो, दीयो नवकार झट धरनींद बनायो प्र०३॥ हुओ मेघमाली कमठ अज्ञान तपसें, प्रभु पारस हुए उदास जगसें, जानी अवसर संजम दान वरसें, महे भविजीव अभविजीव तरसें ॥प्र०४॥ ग्रही दीक्षा प्रभु जब ध्यान लगायो, पूरवले वैरसे मेघमाली आयो; रची

बादल अतिशय जल वरसायो,तडित चमकार गरजन नाद भरायो ॥ प्र० ५ ॥ आयो जलपूर प्रभु नासागर पलमें,सोहे प्रभुमुख जिम पयोज जलमें; जानी ओही नाणसें धरनींदर दिल में, आयो रूप नाग कर छतर सिरम ॥प्र०६॥ देइ शिक्षा कमठ धरनींद हटायो,सही उपसर्ग बहु प्रभु केवल पायो, करी उपदेश चउविह संघ बनायो,तीर्थंकर नाम निज करम खपायो ॥प्र० ७ ॥ करम अठ दूर कर प्रभु मोक्ष सधार्या सावण सुदि अष्टमी गिरे शिखर गायो; जलंधर शहर में तुम दरसन आयो, निजातमरूप वल्लभ आज पायो ॥ प्र०८ ॥ इति ॥

(वीर जिन दर्शन नयनानंद। देखो)

श्रीपंचासर पासजिनंद,सुनीयो स्वामी पासजिनंद। टेर।

काल अनंत अनादि निगोदे, रुलीयो बहुविध दुख सहंद, ज्यूं त्यूं करतां पुण्यांकुर से; व्यवहार रासि आन पडंद। श्री० १ ॥ पृथिवी जल तेऊ मारुता,वनसपति थावर एकइंद;बीति चउ पंचेंद्रि पायो, कठिन करम के जोर कटंद श्री० २ ॥ आरज खेतर उत्तम जाति, इंद्री पूरण आयु अमंद; रोग रहित काया अति सुंदर, खोये फसके कुगुरु फंद।श्री०३॥ फूल्यो पुण्यांकुर अब मेरो, सुंदर सदगुरु जोग लहंद, देव गुरु धरम तीनों का,जाना शुद्ध स्वरूप आनंद ॥ श्री० ४ ॥ गुरु किरपासें पारस परख्यो, पुण्यांकर का फल विकसंद; कर करुणा करुणाकर

स्वामी, थावे जिम सुगति मकरंद । श्री० ५॥ तारक तुम सम कोउ नही जग, किस आगे पोकार करंद, तारक होके तारो नाही, कहे तारक विरुद धरंद। श्री०६॥ दीन हीन हो आयो तुमरे, चरण सरण तुम लाज रखंद, पाटणमंडन पारस वल्लभ, निज आतम पद दान करंद । श्री०७॥

॥इति॥

(जिन पयो वैद्य दुख काटन हारा)

परमानद धामी । अरजिन स्वामी । अर० टेर ॥

गजपुर नगरमें जायो प्रभुजी, माता देवी पामी, सुदर्शन पिता कुल सोहे, चक्री पदको धामी ॥ अ० १ ॥ राज पाट सब छोड दियो प्रभु, अवसर दीक्षा कामी, ऐसो वरसोदान दियो तुम, निरधन पिण कमला स्वामी ॥अ०२॥ लेह

दीक्षा प्रभु केवल पायो, घाती करम को दामी। समवसरण में भाव जिनेसर, अष्टादश दोष वामी। अ० ३ ॥ करम अघाति दूर करी प्रभु, पंचम गति को गामी; अजर अमर अज अलख निरंजन, ज्योति सरूप को ठामी। अ० ४॥ तुम हो दीनदयाल जिनेसर, जगजीवन विसरामी; अमृतसर मंडन द्यो वल्लभ निज आतम पद नामी ॥ अ० ५ ॥ इति ॥

(सुंदर अनूप जोडीरे मेरे मन को भावती है)

अरनाथ जिनस्वामीरे, तोरी मूर्त्ति मनोहारी। टेर जगनाथ देव तूंही रे, घाति करम टारी. अठारां दोष जारके, शुभ देव नाम धारी॥ अ० १॥ युगल दृष्टि सोहेरे, प्रशम रस भारी; देखत होवे शांतिरे, तपत मिटे सारी ॥ अ० २ ॥ वदन

कमल सोहेरे, न नारी संग धारी, युगल हाथ तोरेरे, संबंध शस्त्र वारी ॥ अ० ३ ॥ 'जग देव देव गावेरे, नहीं देवरूप धारी,देवाधिदेव तूहीरे, तोरी सूरत की बलिहारी ॥ अ०४ ॥ अमृतसर स्वामोरे,अमृतपद धारी,आतम पीयूष दीजीए, वल्लभ हर्ष कारी ॥ अ०५ ॥ इति ॥

(मोहे तज के नेमि आनचले गिरनार)

मैं सरणी आयो,श्री अर जिन मुझतार॥टेर अमृतसर मडन प्रभु सोहैं,अमृत पद दातार॥मैं० १॥ओर सवी देवनको देखे,रागी द्वेषी सार॥मैं० २ ॥ निरागी प्रभु तू ही जिनेसर, शिव पद को दातार॥ मैं० ३ ॥ कर्म्म रोग सें मोहे छुड़ादे तू धन्वन्तरी भार ॥ मैं० ४ ॥ आतम रूप हर्ष सें ध्यावे, वल्लभ आनंदकार ॥ मैं० ५ ॥ इति

(पञ्चाडी—हे नेमि मेरा नाथ जैनी)

हे प्रभु मोहे तार स्वामी जग जीवन हितकार स्वामी हे हो स्वामी ॥ टेर ॥

नाभि राजाकुल जनम लियो है, माता मरु देवी सार स्वामी ॥ तैनूं०१ ॥ जनम महोच्छव सुरगिरि कीनो, इंदर मिली सठ चार स्वामी० २॥ बत्तीस विधसुं नाटक करके, परत कियो संसार ॥स्वामी०३ ॥ अवधि ज्ञाने करी जग तुमने, नीति सब की पसार ॥स्वामी०४॥संजम मारग तुम वरतायाा, राज काज दया छार स्वामी०५ ॥ महिपति पढम मुनिपति सोहे, अर्हन पढम करार ॥ स्वामी० ६ ॥ अवसर्पिणी जिन पढम कहावे, आदि धरम करतार॥स्वामी ७॥ कर्म खपावी शिवपुर पहुंचे, सयण लिये निज तार॥स्वामी०८ ॥ दरसन जंडीयाले तुम

पायो; आलस क्यों हम वार॥स्वामी०॥९॥राग द्वेष दोनु दूर निवारी, मोह से लियो किनार ॥ स्वामी० १० ॥ आतम राम रमण निज रूपे, वल्लभ पार उतार ॥ स्वामी०११ ॥ इति

(सुनरी जसोदा माइरे,तेरे नंद की बडाइ)

टुक दृष्टि मोपे कीजेरे,आदि जिनेस स्वामी। टेर
तूही अलख अगोचररे, विभु जगत नामी,
अव्यय अनंत आदिरे, अचिंत्य जोग स्वामी
टु०१॥जिनदेव वीतराग रे,अचर अटल धामी,
महेश विष्णु ब्रह्मारे, तूही है अंतर जामी॥टु०२
अनेक एक तूही रे, अनंत नाम नामी, प्रह्मो
सरन तेरोरे, कछु न तस खामी ॥ टु०३ ॥
प्रभु सरण में आयो रे, अनंत सुख कामी,प्रभु
स्वरूप लाधोरे,करो निजातम रामी ॥ टु० ॥४॥
जगत प्रपंच छूटे रे, महा मोह मल्ल दामी,

आतम लक्ष्मी नेडे रे, वल्लभ हर्ष पामी॥टु०५॥इति

(पाएजी कलयुग में एक गुरु आत्माराम)

सेवोजी सुभ भावों सें सिरो आदीसर स्वाम,
जिनोकी सेवा सें भवी पामें अविचल ठाम
॥ टेर ॥

आदीसर आदि राया, जिने जग व्यवहार दिखाया, जग कर्त्ता नाम धराया, ते ब्रह्मा कहाया ॥ सुभ०१॥ राज त्याग के संजम पाया, तप बल से घाति हटाया; शुद्ध केवल ज्ञान जगाया, ते आप्त कहाया ॥ सुभ० २ ॥ जग जीवन मुक्त कहाया, सब देव देवो मिल आया, सुंदर समोसरण बनाया, ते तीन गढ ठाया। सुभ० ३ ॥ रूप कनक रतन मन भाया, अशोक वृक्ष बिच छाया; चउपास सिंहासन ठाया,

ते चित्त हरषाया॥ सुभ० ४॥ पूरव सिंहासन राया, जस कंचन वरणी काया, प्रतिबिम्ब तीन पर ठाया, ते धरम सुनाया ॥ सुभ०५ ॥ द्वादश परखद सुखदाया, अमृतरस पान कराया, भव सागर पार तराया, कर्म गढ़ ढाया ॥ सुभ० ६॥ अष्टापद मुक्ति सधाया, आतम लक्ष्मी चित लाया । जंडोयाले हरष भराया, ते वल्लभ गाया । सुभ० ॥ इति ॥

॥ वढंस ॥

सेवो भवी वासुपूज्य जिन चंदा, एतो शिव सुख फल का है कदा ॥ टेर ॥

वासुपूज्य जिन मूरत सूरत, देखत मन हुलसदा, वार वार इंदर जस जननी, पूजत अति हर्षंदा ॥ से० १॥ तिन कारण वासुपूज्य

कहायो, राय वसुपूज्य नंदा; माता जया कूख रतन सुहंकर, जिम प्राची दिन इंदा ॥ से० २ ॥ जेठसुदि नवमी के दिवसे, प्राणत देव चवंदा; फागण वदि चउदश शतभिषा, चंपपुरि जन मंदा ॥ से० ३ ॥ बरसी दान देइ सुदि पूनम, फागण दीक्षा गहंदा; छदमस्थे एक मास रहीने ज्ञानकेवल विकसंदा ॥ से० ४ ॥ आसाढ सुदि चउदस दिन सुंदर, चंपा नगर सोहंदा; षटशत साथे मोक्ष गये प्रभु, सतचिद रूप आनंदा ॥ से० ५ ॥ माघ सुदि तिथि पंचम संवत, अष्ट वेद निधि चन्दा; वासुपूज्यको तखत बिठाये, सूरि श्रीविजयानंदा ॥ से० ॥ ६ ॥ नगर हुशीयारपुरे में श्रावक, गुज्जर मल्ल धनींदा; वल्लभ आतमराम सुहंकर, मंदर हेम जडींदा से० ७ ॥ इति ॥

आशा

श्री सुपारस जिन राय री, नगर अंबाले चैत्य सुहंकर । श्री० ॥ टेर ॥

भादो वदि आठम दिन थाये, मध्यम ग्रैवेयक से आये, जेठ सुदि बारस दिन जाये, पृथिवी देवी माय री ॥ नगर० ॥१॥ छप्पन दिशा कुमारी आवे, सूती कर्म करी घर जावे, चउसठ सुरपति मिल सब धावे, नगर बनारस छाय री । नगर० २ ॥ देव देवी बहु मिलकर आवे, सोहम निज रूप पाच बनावे, सुरपति सघर स्नान करावे; मेरु शिखर गिरि जाय री । नगर० ३ । सोपें प्रभुजी माय को आइ, नंदीसर जा करे अठाई, देव देवी मिल मगल गाइ, महोच्छव परतिष्ठ राय री ॥ नगर०४ ॥ जेठ सुदि तेरस सुखदाई,

राज छोडी शुद्ध संजम पाइ; फागण कृष्णा छठ तिथि थाइ, केवलज्ञान जगाय री । नगर०५॥ द्वादश परषद धर्म सुनाइ, जीवन मुक्त जगमें कहाइ; फागण वदि सातम शिव पाइ, अष्ट कर्म को खपाय री । नगर०६ ॥ संवत कर पण निधि शशि सोहे, मगसर सुदि पूनम मन मोहे; विजयानंद सुरि भवी बोहे, वल्लभ पइठा थाय री। नगर० ७॥ इति ॥



(लावणी—तुम तजकर राजुल नार तजा सब घररी)

श्रीसुविधिनाथ महाराज अरज मोरे दिलकी, लगरही निरंतर प्यास दरस जिनवर की ॥टेर॥

मैं फिर फिरके जगदेव अति घबरायो, नहीं आतम रसका सुख यथारथ पायो; फस करके कुगुरु फासी जनम बिरलायो, नहीं शांतरूपजग

देव जिनेसर पायो, इण विधसुं वहु निश देह गमाइ नरकी ॥ ल०१॥ अब पुण्यांकुर के जोर दरस तुम पायो, अष्टादश दूषण रहित अनंत सुखदायो, जग तुम सम देव न और मेरे मन भायो, तुमे काम क्रोध अज्ञान तिमिर को हटायो, अब मन वसकर करु भाव पूजा जिनवर की ॥ल०२॥ करुणामय जल से स्नान प्रभु को करावु, केसर चंदन शुभध्यानसें आंगी रचावुं, ज्ञानादिक पांच आचार कुसुम चढावु, प्रभुगुण अनुमोदन धूप घटीको जगावुं, तव महके शील सुगध वास ब्रह्मधरकी ॥ ल०३॥ सुधज्ञान हिये मे धार प्रदीप जगावु, सरधान शुध अक्षत स्वस्तिक बनावु, तप जाप रूप सुंदरनैवेद्य धरावु संजम किरियाशुभ वहुविध फल चढावु, एम व पूजा अतिसुंदर महाव्रत धरकी ॥ ल० ४ ॥ इम

कर पूजा जिनराज परमपद दाता, पावन हो आतमराम अचल पद पाता; पपनाखेमें तुम देख सुविधि जिन ताता, कर आनंद आतमराम वल्लभ गुण गाता, अब कर किरपा जिनराज खबर नहीं पलकी ॥ ल०५ इति ॥

(महावीर जिनेसर, आप बिराजो चंदन चौक में)

श्री सुविधि जिनंदा, आपविराजो लवपुर शहर में॥ टेर ॥

नील वरण मूरति अति सुंदर, देखत मन हरषावे; देखत चंद चकोर ज्यूं दिलमें, आनंद अति हुलसावेजी॥श्री० १॥ शांत सुधारस नेत्र भरे तुम, अमृतघन वरसावे; वदन कमल तुम देख प्रसन मन, आनंद अतिही भरावेजी॥ श्री० २ ॥काम मदन भामिनी संग नाही शस्त्र न हाथ धरावे; अजर अमर अज अखल निरंजन, ज्योति

सरूप कहावेजी ॥ श्री०३ ॥ सवत एक सहस चउदोतर, सुदि वैशाख कहावे, तिथि पंचमी राजा जसवंत सिंह, सुंदर राज चलावे जी। श्री० ॥ ४ ॥ ताराचंद शेठ लघु भ्राता, कपूरचंद कहावे, तस स्त्री नामे कश्मीर देवी, श्री जिन बिंब भरावेजी ॥ श्री०५॥ श्रीजिन हर्षसूरीसर पासे, विधि सु प्रतिष्ठा करावे, निसदिन सुविधि जिनंद को सेवत, जनमजनम सुखपावे जी॥श्री०६॥ सवत् बाण[५] बाण[५] निधि[९] इंदु[१], चैतर सुदि सुहावे, चौथ शनि दरसन कर वल्लभ, आतम आनद थावेजी ॥ श्री०७॥ इति ॥

भैरवी।

वीर जिनेसर ध्याउं, हेरी हेरी देवा वीर०॥ टेर

ज्ञातनंदन प्रभु पर दुःख भंजन, तुम दर्शन

नित चाउं ॥ हे०वी०१ ॥ प्रभु दर्शन से पाप कटत है,मोह तिमिर उड़ाउं ॥हे०वी०२॥ दरस करन जिन मंदिर जाउं, चिंतत व्रत फल पाउं ॥हे०वी०३ ॥ जब आके जिनमुख को देखुं,मास खमण फल गाउं ॥हे०वी०४॥दर्शन कर परसन मन होवे,आतम वल्लभ थाउं॥हे०वी०५॥ इति

गज़ल-तालदादरा।

लो दिवाना किया दिल मेरा,इस बांकी परीने। देशी।

विछोरा किया जिन तेरा, इस कर्म लरीने ॥ टेर

इस जगतमें मिल,रहते थे हम तुम दो सदा, काल थितिने किये अलग, कर्म विवर करीने, हो अलग प्रभु तुमे, पालिया निज रूप को,तप जप अति साध के,यम शम दम धरीने ॥वि०२ महावीर हो प्रभु, सिद्ध होगये मुझ छोर के,

दूषण अठारां टार के, आठों कर्म जरीने॥ वि० ३
यार अपने को, ढूंढता फिरा जगमें बहु, मिला नहीं कहीं मुझे, संग कुमता परीने । वि० ४ ॥
दृग दर्श पाया, जिम तिम कर प्रभु मुख का, आतम समाना अब करो, वल्लभ सुमता वरीने । वि० ५॥ इति

वढंस

सेवो भवि वीर जिनंद जयकारी, जिने तारे बहु नर नारी । से० । टेर

प्राणत देवलोक से चवीया, असाढ़ सुदि छठसारी, राजा सिद्धारथ त्रिशला राणी, क्षत्रि कुंड मनोहारी ॥ से० १ ॥ चैत्र सुदि तेरस अति सुंदर, जन्म्या जग हितकारी; चउसठ सुरपति मिलकर मेरु, स्नात्र करे भवतारी ॥ से० ३॥

मगसर वदि दशमीके दिवसे,दीक्षा समय निर-धारी, राज छोड़ प्रभु संयम लीनो, दान दे रोरता वारी ॥ से॰ ३ ॥ छद्मस्थ बारां अधिक वर्ष फिर, उपसर्ग सहे अपारी, वैसाख सुदि दशमी तिथि सुंदर, घाति करम क्षय चारी ॥ से॰ ४॥ समोसरण रचना करी सुंदर,देवता चार प्रकारी, तीरथ उपदेश देइ वरतायो, एकादश गणधारी ॥से॰५॥किंचित न्यून वरस दसवीसा, ज्ञान अवस्था विहारी;नगर अपापामें प्रभु आये, मोक्ष समय अवधारी॥से॰६॥ पचपन सुभफल पच्चपन इतरे,छत्तीस प्रश्न सुखारी, सोलां प्रहर लगदे जिनवरजी, देशना जनहितकारी ॥ से॰ ७॥ नाम प्रधान अध्ययन जो केहतें,सिद्धगति प्रभुधारी; कातिक वदि पंदरस की राते, भरत में ज्ञान अंधारी ॥ से॰८॥ भाव उद्योत गयो

अब जग में, दीपकश्रेणि करारी; आतम वल्लभ मल्ली लेच्छी, पर्व दीपक वरतारो॥से०९॥ इति

कगणा खोल देवो महाराज—

ध्यावो वीर जिनद भगवान, पावो अविचल सुख की खान ॥ ध्या० ॥ टेर ॥

कारण हित भविजन के जग मे, आये विचरते अपावापुरमें, अपना मोक्ष समयको जान ध्या० १॥ भविजन केरा हितको जानी, सोलां पहर सुना के वानी, होये मोक्षपुरके रान ॥ ध्या० २॥ मिलकर देव चतुर्विध आवे, करके रुदन शोक दरसावे, हुओ अस्त भरत प्रभु भान॥ध्या० ३॥ देव शरम गोयम प्रतिवोधि सुनकर भूल गये वुध सोधि, मन में होये अति हैरान॥ध्या० ४॥ यह क्या किया प्रभु जी तुमने, नहीं कछु किया गुन्हा प्रभु हमने, हम क्यों छोड़ गये निरवान ।

ध्या० ५॥ यह जगसारा धूंद पसारा, नहीं तूं किसका को नहीं थारा, तूं निज आतम रूप पिछान ॥ ध्या०६॥ इम चिंतत ही केवल पायो, गौतम जिम कारज को सारयो,आतम वल्लभ अपना जान ॥ ध्या०७ ॥ इति ॥

(भैरवी—अब तो प्रभु जी का लेलो सरन)

जयो जगस्वामी वीरजिनंद ॥ टेर ॥

नगर अपापामें प्रभु आये, भविजनको उपकार करंद । ज०१ ॥ निज निरवान समयको जानी, सोलां पहर प्रभु धर्म कहंद ॥ ज० २॥ कार्तिक वदि पंदरस की राते, प्रातः काल प्रभु मुक्ति लहंद ॥ ज०३॥ परमातम पद छिनकमें लीनो, आठ कर्म को दूर हरंद ॥ ज०४ ॥ कल्याणक निर्वाण महोच्छव,कारण मिलकर आये सुरींद । ज० ५ ॥ पापा नगरी नाम कहायो, अस्त हुआ

जिहां ज्ञान दिनद॥ज०६॥नव मल्ली नव लेच्छी राजा, शोक अतिशय दिल में धरंद ॥ ज०७ ॥ भाव उद्योत गयो अब जगसें, द्रव्य उद्योत को दीप करद । ज०८ ॥ तिस कारण दिवाली होइ,ध्यान धरो प्रभुवीर जिनंद॥ज०९॥ कार्तिक सुदि एकम दिन थावे, गौतम केवलज्ञान गहंद ज०१०॥ आतमराम परम पद पासे, वल्लभ चित्तमें हर्ष अमद॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीपर्युषणापर्वस्तवनम्॥

॥ मेहबूब जानि मेरा देखी ॥

उत्तम पजूसण आए श्रीवीरजिनंदा, पूजा सतरां भेटे करी, सेवो भवि चंदा ॥ उ०१ ॥ सास्वती चैतर आसु दो, चउमासे तीन सोहंदा, भादो पर्युषण चउथो, अठाई कहंदा ॥ उ०२ ॥ जीवाभिगम में देखो, चउविह सुर इंदा;

नंदीश्वर जाकेमहोच्छव,अट्ठाइ करंदा॥उ०॥३॥
ठामे निज नर विद्याधर, जिन चैत्य अमंदा॥
अट्ठाइ महोच्छव करके, टारे भवफंदा ॥ उ०
४॥ अमारी आठ दिवस तप,अट्ठम अतिनंदा,
करी खामण सुध भावों से, निज कर्म जरंदा॥
उ०५॥परिपाटो चैत्य सुहंकर, परमानंद कंदा
साधर्मी वत्सल करके, पुण्य भार भरंदा ॥ उ०
६ ॥ मंतर में पंच परमिट्ठी, तीरथ में सिद्धगि-
रींदा; पर्वों में पर्व पजूसण, सूत्रों में कल्प
अमंदा॥उ० ७॥ छठ करके बडा कलपका,सुनीये
श्री वीर जिनंदा, एकम दिन जनम महोच्छव,
मंगलवरतंदा॥उ०॥८॥तेला धर गणधर सुनीये,
अति वाद करंदा,निर्वाण महोच्छव करते,मिल
सुर नर इंदा ॥ उ०९॥ पारस नेमि जिन अंतर,
श्री ऋषभ जिनंदा, गुर्वावलि अरु बारांसे,

सामाचारी नंदा ॥ उ० १० ॥ सुन के वाचनी नव भावें, शिव रमणी वरदा, निज आतमराम सरूपे, वल्लभ आनदा॥ उ०११॥इति॥

पालना ।

देशी मिल पथो वैद्य दुख काटन हारा ॥

गावत आज वधाइ, नगर में गावत । टेर देश पूर्व नगरी अतिसुन्दर, क्षत्री कुड सुहाइ, ऋषभ वंश श्री ज्ञान कुलमें, काश्यप गोत सवाइ ॥गावत १॥ श्रीसिद्धारथ राजा सुहंकर राणी विदेहा कहाइ। त्रिशला राणी नाम अपर जस,गोत वसीष्ठ सुहाइ ॥ ग०२॥ चैतर सुदि त्रयोदशी के दिन, मध्य रात्रि जब थाइ, चंद्रयोग सुभ सुभ ग्रह सुभरिख, शुभ सुत त्रिशला जाइ॥गा०३॥ छप्पन दिक् कुमर मिल आवे सूतीकर्म कर जाइ,चउसठसुरपति सुरगिरि

ऊपर, जनमत जिन ले जाइ ॥ गा० ४॥ जनम सनातर विधि सुं करके, फिर घर को ले आइ, नंदीसर जा आठ दिनों का महोच्छत्र करत अट्ठाइ ॥गा०५ ॥ प्रातः काल सिद्धारथ कुलमें, मंगलाचार फलाइ, शत सहस अरु लाख प्रजाको देवत राजा वधाइ ॥ गा०६॥ घरवर मंगल कुंभ भरे तव, तोरण द्वार वंधाइ, घर घर थापे पंच रंग सोहे, मोतीके चोक पूराइ ॥ गा०७॥ दश दिन निज कुल तिथि को करते, पूजा जिनेंद्र रचाइ; बारमे दिन सुत नाम सुहंकर, वर्द्धमान सुखदाइ ॥ गा०८॥ रतन जड़त मणि माणक चमकत, पालना हेम बनाई; छनननन छनननन घूंघर बाजे, मोती जालर झलकाइ ॥गा०९ ॥ हालो हालो केहती माता, रेशम डोरी खींचाइ; वीर कुमर को झूटे दे कर, रोम रोम

हरषाइ । गा० १० ॥ वीर कुमरका पालन सुदर नर नारी मिल गाइ; आतमराम रमण निज रूपे, वल्लभ आनन्द पाइ । ११ ॥ इति

गौड़ी ।

सिद्धचक्र जगनामी, शिवकर सि० ॥टेर॥ अरिहत सिद्ध आचारज पाठक, साधु पंचम पद गामी ॥ शिवकर० ॥ १ ॥ दर्शन ज्ञान चारितर तपसा, कर्म निकाचत वामी ॥शि०२॥ बार आठ पट त्रिश पचीसा, सप्त विंस गुण धामी ॥ शि० ३ ॥ सतसठ इगवन सत्तरी बारां भेद कहे जिन स्वामी ॥ शि० ४ ॥ तावत लोगस्स, काउसग्ग वंदन, माला वीस जपामि॥ शि० ५ ॥ पडिक्कमणा दोय टंक को कीजे, त्रिवेर देव प्रणामी ॥ शि० ॥६॥ असु चैत्र

दोनों अट्ठाइ, नव आंबिल गुण ठामी॥शि०७॥ आराधन साढ़े चार वरस तक, नवपद कर्मको दामी ॥ शि० ८॥श्रीपाल मयणा नवपद आतम, वल्लभ शिवपद पामी । शि० ९ ॥ इति ॥

तराना ।

पूजत शक्र शक्री, हेरी माई पूजत ॥ टेर ॥

केसर चंदन भरी रतन कटोरी जरी, पांच वर्ण फूल करी कंचन को थाल भरी; तीनजग नायक जिनन्दके चरणको,पूजो भवदधि जिम तरन ननन॥मा०१॥ श्रावक प्रधान दश वीरके शासनमें,खुशी आनंद नाम लीजे जो प्रथममें; उवासग दश अंग सरस सूत्र में, प्रगट बन्दन देखो वरन ननन॥मा०२॥ सुरियाभे किनी पूजा सतरांप्रकार की, वड़े भावोंकर सास्वते जिन

राजकी,उपांग पसेणीराय मानों मन प्यार लाय, जनमसमरण दुख हरन ननन ॥ मा०३ ॥ श्रावक अंबड देखो पूजाका ही पाठ पेखो,उवाइ उपांग राचो और नही मन जाचो, ज्ञाता अंग द्रोपदी पूजे जिम जिनवर, तिम तुम पूजो जिन चरन ननन ॥ मा०४ ॥ श्रावक वग्गुर पति भरत भरत के, मन्दिर वनाये मल्लि चउवीस जिनन्द के, आवश्यक पाठ देखों आतम वल्लभ को, होवे सदा काल जिन सरन ननन॥ म०५ ॥इति

(भजन विना, यूंहि जनम गमाओ)

पारस जिन भवोदधि पार उतार ॥पा०॥ टेर ॥

तुम नामे विषधर विष नासे, तू मंगल पद कार ॥ पारस० १ ॥ तु सुरतरु मन वछित पूरन, चूरन मदन विकार ॥ पारस० २ ॥ चरन कमल

तुम सेवनका फल, दुखी नहीं नर नार॥पारस० ३॥तुं चिदघन विभु अज अविनाशी, अजर अमर पद धान॥ पारस०४॥ निज आतमके प्रगट करन को, वल्लभ सरण आधार ॥पारस०५॥ इति॥

रेखता ।

सिरी गुरु आतमारामी ॥ देशी ॥

सेवो भाव वीर जिन राजा, अपुनरावृत्ति फल ताजा ॥ से०॥ टेर ॥

मनोवांछित फल दाता, न सुर तरु जास सम आता ॥ से० १ ॥ नहीं चिंतामाण समता, करी भवि चित्त को हरता ॥ से० २ ॥ ऐसे प्रभु वीर के चरना, विना नहीं और को सरणा ॥ से० ३ ॥ जगद्गुरु वीरजी स्वामी, अठारां दोष को वामी ॥ से० ४ ॥ आतम सम करणे धोरी, वल्लभ आनंद कर जोरी ॥ से० ५ इति ॥

चाल नाटक की ।

पारसनाथ अरज सुन मेरी ॥ देशी ॥

शांति जिनेसर साहिब मेरा, शिव संपद दातार जी ॥ टेर ॥

विश्वसेन अचिराजी के नंदन, शांति जगत करतार जी ॥ शा० १ ॥ भ्रमत भ्रमत बहुकाल भ्रम्यो हु, तोही न आयो पार जी ॥ शां०२ ॥ अन्यदेव कइ विधि कर सेवे, पायो नही कछू सार जी । शां० ३ ॥ साचो साहिब अब तू मिलीयो, परत हुओ संसार जी ॥ शां० ४ ॥ स्यादवाद वानी तुम औषध, करम रोग को छारजी ॥ शां०५॥ करम रोग को दूर करी प्रभु, आतम वल्लभ तार जी । शां० ६ ॥ इति ॥

चाल नाटक।

ऋषभ जिनेसर जग परमेसर, जगगुरु जगदाधार जी ॥ ऋ० टेर ॥

तुं ब्रह्मा प्रभु तु शिव शंकर, तुं अज अजर अमार जी। ऋ० १ ॥ सिद्ध वुद्ध परमातम रूपी, ज्योति परम करतार जी। ऋ० २ ॥ हिंसा[1] झूठ[2] चोरी[3] अरु क्रीड़ा[4], हासी[5] रति[6] भय[7] छार जी। ऋ० ३॥ क्रोध[8] मान[9] माया[10] मद[11] अरति[12], लोभ[13]प्रेम[14] को टार जी। ऋ० ४ ॥ मत्सर[15] शोक[16] अज्ञान[17] अरु निद्रा[18], दोष अठारां जार जी ॥ ऋ०५ ॥ ज्ञान[1] वीर्य[2] सुख[3] जीतव[4] अक्षय, अनंत चतुष्टय धार जी ॥ ऋ० ६ ॥ आतम लक्ष्मी शिवपद साधी, वल्लभ हर्ष अपार जी। ऋ०७ ॥ इति ॥

श्रीचिंतामणिपार्श्वजिनस्तवनं

(चाल मारवाड़ी पनिहारी की)

चिंतामणि पारस प्रभु जिनदेवा जी,
चितामन की चूर पारस जी ।
भटकत भटकत आवियो जिनदेवा जी,
सेवक तुमरे हजूर पारस जी ॥ १ ॥
कर करुणा करुणा निधि निज देवाजी,
सब गुण तू भरपूर पारस जी ।
परिमल गुण मही महकियो जिनदेवाजी,
जिम कस्तूरी कपूर पारस जी ॥ २ ॥
मित्र अनादी काल के जिनदेवाजी,
वर्णन सूत्र के धूर पारस जी ।
तज सेवक संसार मे जिनदेवा जी,
आप पधारे दूर पारस जी ॥ ३ ॥
राग द्वेष मल्ल जीत के जिनदेवाजी,

प्रगट कियो निज नूर पारसजी ।
मुझ शक्ति नहीं एहवी जिनदेवाजी,
चरण पड्यो तुम सूर पारस जी ॥ ४ ॥
तारण तरण विरुद छे जिनदेवा जी,
जगमें तुम मशहूर पारस जी ।
सत्य करो मझ तार के जिनदेवाजी,
मानो अरज आतूर पारस जी ॥ ५ ॥
पांच त्याग पांच सेवीए जिनदेवाजी,
पंचमी गति सुखभूर पारस जी ।
पंचम पद से दूर हो जिनदेवाजी,
पांच प्रमाद करूर पारस जी ॥ ६ ॥
मांगू पंचम ज्ञान को जिनदेवाजी,
अद्वैत पंचम तूर पारस जी ।
वल्लभ को वल्लभ यही जिनदेवाजी,
प्रगटे आतम नूर पारस जी ॥ ७ ॥ इति

श्री धर्मनाथ जिनस्तवनम् ।

(चाल मारवाडी पनिहारी की)

धर्म नाथ जिन तारिये मारा वालाजी,
धर्म धुरंधर देव वाला जी ।
मन वच काया से करूं म्हारा वाला जी,
रात दिवस तुम सेव वालाजी ॥ १ ॥
कर करुणा करुणानिधि म्हारा वाला जी,
करुणा कर तुम नाम वालाजी ।
अपना विरुध संभारिये म्हारा वाला जी,
दीजे पद अभिराम वालाजी ॥ २ ॥
दाता तुम सम को नहीं म्हारा वाला जी,
जांचू नहीं अन्य पास वाला जी ।
खोटे खजाने में नहीं म्हारा वाला जी,
पूरो वछित आस वाला जी ॥ ३ ॥
क्रोध मान माया लोभ ने म्हारा वालाजी,

वस कीना तुम वाल वाला जी।
छोडावो इनसे प्रभु म्हारा वालाजी,
तुम ही दीन दयाल वाला जी॥ ४ ॥
नगर निकोदर मंडनो म्हारा वाला जी,
धर्मनाथ बडवीर वालाजी।
दर्शन करि संतोषियो म्हारा वाला जी,
काटो कर्म जंजीर वाला जी॥ ५ ॥
वार वार विनती करूं म्हारा वाला जी,
अवधारो जिनराय वाला जी।
आतम आनंद सुरतरु म्हारा वालाजी,
वल्लभ हर्ष न माय वालाजी॥६॥इति

श्रीशांतिनाथ जिनस्तवनम्।

(चाल लच्छी की)

अहो जी शांति प्रभु सुखकारी, सुखकारी२

भव सागर पार उतारी ॥ शां०॥ आहोजी शहर समाने में, समाने में २, जिन मदिर बनाया भारीजी ॥ शां० ॥ १ ॥ आहोजी सिद्ध गिरी तीरथसे,तीरथ से२ प्रभु मूर्त्ति मोहन गारी जी ॥ शा०॥ २ ॥ आहोजी भेजी भावो से,भावो से२, हंस विजय मुनि उपगारी जी ॥ शां० ॥ ३ ॥ आहोजी परव पजूसन में, पजूसन में २ होया महोच्छव सोभाकारी जी ॥ शां०॥ ४ ॥ आहो जी उन्नीसौ इकसठ में, इकसठ में २ वदि भादो चोदस विरवारी जी ॥ शां०॥५॥ आहो जी मूरत सुखदाई,सुखदाई २ फिरी इंदर धजा इकसारी जी ॥ शा० ॥६॥ आहोजी मुद्रा मनोहारी,मनोहारी २ नित्य सेवा करे नरनारी जी ॥ शां०॥ ७ ॥ आहोजी प्रभु जयजयकारी, जय कारी २ जाऊ वार वार वलिहारी जी ॥ शा०

॥ ८ ॥ आहोंजी पूजा गुणकारी, गुणकारी २ दुख दोहग दूर निवारी जी ॥शां०॥९॥ आहोजी संपदा सुख पावे, सुख पावे २ जो गावे प्रभुगुण वारी जी ॥ शा० ॥ १० ॥ आहोजी वल्लभ गुण गावे, गुण गावे २ चित आतम आनंद धारीजी शां० ॥ ११ ॥ इति ॥

(भैरवी)

श्री अरनाथ जिन सेवो चरन,
सेवो चरन भवि लेवो सरनजी॥श्रीअर०।अंचली
जगचिंतामणि नाथ जगत के,
घट घट में प्रभु वास करन॥श्री अ०१॥
सार्थवाह जगबांधव जगगुरु,
प्रभु जग जीवन तारन तरन॥श्री०२॥
अलख निरंजन ज्योति सरूपी,
प्रभु सेवा प्रभु रूप भरन॥श्री०३॥

शीतल नाथ संभव जिन आदि,
संवत दुख सब दूर हरन॥श्री०४॥
नगर सुधासर मंदिर अंदर,
विंब विराजे सुंदर वरन ॥श्री०५ ॥
दर्शन कर मन शांति होवे,
रोग सोग संताप टरन॥श्री० ६॥
आतम ही परमातम थावें,
आतम प्रभुको वल्लभ धरन॥श्री०७॥

(आशा)

श्रीअरनाथ जिनंदजी नगर अमृतसर मडन स्वामी ॥ अंचली ॥

मगसर सुदि दशमी दिन जाया, गजपुर नगर सुदर्शन ताया, देवी राणी प्रभु की माया, भविजन आनंद कंद जी ॥ नगर०१॥ सुरगिरि जन्म महोत्सव कीना, चोसठ सुरपति आनंद

लीना,प्रभु पद पंकज में चित दीना, दूर किया भव फंदजी ॥ नगर०२ ॥ चक्रवर्ती प्रभु सातमें सोहे,अष्टादशम जिनंद मन मोहे, मगसर सुदि एकादशी बोहे,संजम शुद्ध लहंदजी॥नगर०३॥ कार्तिक सुदि बारस दिन थाये,केवलज्ञान दरस प्रभुपाये,समेतशिखर सुदि मोक्ष सधाये,मगसर दशमी अमंदजी ॥नगर०४॥परमातम सिद्ध ब्रह्म कहाया,अटल अचल अनंत सुखदाया,उन्नीसौ चउसठ गुण गाया,वल्लभ मन आनंदजी॥न०५

अथ चैत्य वंदनम् ।

ऋषभ अस्सी चार गणधर पांच नव्वे गण धरा,श्री अजितनाथ जिनंद सम्भव दोय ऊपर शत खरा; अभिनंद इकसौ सोल सुमति नाथ इकसौ गणिवरा,श्रीपदम प्रभुजी के सात ऊपर

एकसौ गणि हितकरा॥१॥सुपास नव्वे पांच नव्वे तीनचंदाप्रभुतणा,श्रीसुविधिअस्सीआठशीतल एक अस्सी गणि गणा,श्रेयांस छहत्तर सांठ अरु छी वासुपूज्य आनंदना, सगवन्न विमल पचास गणधरचउदमा जिन अनंतना।२॥त्रयचालीधर्म छतीस शांति कुंथु अरपण त्रयतीसा, अडवीस मल्लि अठार सुव्रत नमि सतरां गण ईसा, इग्यार नेमि पास दश श्रीवीर ग्यारां गणधरा,शतचउद बावनमुक्ति वल्लभ आतमानंदपद वरा॥३॥इति॥

अथ स्तुतयः ।

हेम नगर मंदिर अति सुंदर धर्मनाथ प्रभु नंदा जी। ऋषभ अजित संभव पारस नेमि सुविधि शांति जिन चंदा जी ॥

नयगम भंग गहन जिन वाणी शिव सुख

केलिकरंदा जी। किन्नर जक्षश्रीसंघको वल्लभ आतम हर्ष अमंदा जी ॥ १ ॥ इति ॥

पद्मानंदन पर दुःख भंजन मुनि सुव्रत जिन चंदाजी। चंद्र प्रभु श्रीऋषभ जिनेसर नेमिनाथ अभिनंदाजी ॥ स्यादवाद जिन आगम साचो मोह तिमिर दिनंदाजी । दत्ता देवी वल्लभ निशदिन संघको करत आनंदाजी॥१॥इति॥



इंद्रवज्रा वृत्तम् ॥ कल्याण कंदं ॥

श्री आदि देवा पद पद्म सेवा । श्री मारुदेवा सुत पाप खेवा॥युगादि देवा वृष चिन्ह लेवा, नमामि भक्त्या शिव पंथ मेवा ॥१॥ सहस्र चारो जिन आदि धीरो।सो मल्लि पासो त्रय एक वीरो। दीक्षा शतोंसे षट् वासुपूज्यो। शेषा सहस्रा इक पाप धूजो ॥२॥ जिनेंद्र वानी गुणरत्न खानी, निर्वाण ठानी सब कर्म हानी। अर्थ प्रवानी सुख की निशानी।सुधा समानी हर मान मानी॥३॥ चक्केसरी शासन शांतिकारी,गो मुख यक्षो हित संघ कारी ॥ आनंद सूरि तप गच्छ धोरी । सदा नमे वल्लभ हाथ जोरी ॥ ४ ॥ इति ॥

(सावन सुदि दिन पंचमीए—यह चाली)

शांति जिनेसर सेवीये ए संपदा शांति

तार तो। विश्वसेन कुलदीपता ए अचिरा माता मलार तो॥ राज पाठ सब त्याग के ए संजम से चित्त धार तो। आठ कर्म को जार के ए पहुंता मुक्ति मझार तो॥ १॥ शांतिनाथ चक्री हुआ ए कुंथु अर पिण तेमतो। वासुपूज्य जिन राज जी ए वीर पास मल्लि नेम तो॥ राज्य संपदा नवि ग्रही ए शेषा मंडलिक राज्य तो। संसार त्याग सबी लिया ए मुक्तिपुरी का राज्य तो॥२॥ शांतिनाथ ज्ञानी हुआ ए भावे सार वचन्न तो। दुविध धर्म को जानीये ए श्रावक साधु जतन्न तो॥ आस्रवद्वार को त्यागी ए संवर चित्त में धार तो। दर्शन ज्ञान चारित्र से ए पामे भवजल पार तो॥३॥ गरुड़ यक्ष को सिमरीये ए देवी निर्वानी नाम तो। शासन सांनिध्य को करे ए करे नित धर्म के काम तो।

तपगच्छ नायक गुण भरे ए श्रीविजयानद सूरि राय तो । वल्लभ निशदिन भाव सें ए नमन करत नस पाय तो ॥ ४ ॥ इति ॥

शिखरणि ।

(भरस्य प्रव्रज्या की देशो)

यदूवंशा काशे उडपति समा नेमि जिनजी ।
शरीरे रंभाभा रतिमद हरी राजुल तजी ।
ग्रही दीक्षा भारी भविजन विबोधे दिनकरी ।
करो दृष्टि स्वामी हरिण पशु जैसेहितकरी॥१॥
गये मुक्ति स्वामी गिरिशिखर उज्जिंत शिरसि ।
अपापामें वीरा शिव सुख अनंतं विफरसी ॥
जयाभू चंपामें धवलगिरि श्रीआदि जिनजी ।
समेते आनदामृतरस करा वीस जिनजी॥२॥
अनेकांत स्याद्वाद नयगम भंगादि विधिसुं ।
अजेयाह्री तीर्थांतर शत बुधैः कीट सम सु ॥

निहारी वाणी जो जन अतिशया पंच सतहा।
सुधा धारा सारा जिनमुख थकी निर्गत सुहा॥२
अधिष्ठाता अंबा प्रवचनसुरी नेमि जिननी॥
करो गोमेधो ही सतत सुख शांति अति घनी॥
विजे आनंद श्री तपगण गणी वल्लभ सदा॥
नमों भावे शुद्धे मन वचन काया फल तदा॥४।

(ऋषभ चंद्रानन वंदन कीजे—यह चाल)

अश्वसेन सुत वंदन करीये पाप पडल सब हरीयेजी।वामानंदन पर दुख भंजन सेवत शिव पग धरीयेजी॥पुरिसादानी पास जिनेसर देखत तन मन ठरीये जी।दीक्षा लाधी संजम साधी आतम कारज करीयेजी॥१॥ अष्टादश दूषण नहीं प्रभुमें बारां गुण नित धारेजी,पेंतीस वाणी गुणे करी सोहे चउतीस अतिशय लारे जी। चार अतिशय सहज कहावे कर्म खपे अगीयारे

राग द्वेष प्रमुख तमको नाशने सूर्यनाया। दीक्षा लेके कठिन तपसे चार घाती खपाया। ज्ञानी दाता सतत सुख का मोक्ष आनंद पाया ॥१॥ सत्तावीस भ्रमण भवका वीर देवाधिदेवा। तेरां होए प्रथम जिनजी बार शांतींद्र सेवा ॥ नेमि पासो नवक दशसें तीन शेषारिहंता । पाए मुक्तिं भवि सुख करा बोधिदाता हि खंता॥२॥ अंगोपांगा इकदश तथा द्वादशाग्र प्रमाही। छेद ग्रंथा षट मित कहा चार मूलाग माही। चारो व्याख्या सहित जयिनी है पयन्ने दसाइ। नंदीवानी जिन मुख तनी मोक्षलक्ष्मी वसाइ॥३ सिद्धा देवी प्रवचनसुरी नाम मातंग यक्षो। संघे शांतिं सतत करणे अप्रमादी सुदक्षो। आत्मा-रामतपगण धुरी वल्लभादित्य थाया। अज्ञानांधं निज किरण से ज्ञानचक्षु प्रदाया ॥ ४ ॥ इति ॥

हरिणी ।

(पास जिनंद वामानंदा—यह चाली)

ऋषभ जिनजी दूजा चंद्रानना जिन राजजी।
समदमहिता वारिषेणा तथा व्रधमानजी॥सतत
भरत क्षेत्रे ऐरावते हि महावदे । भवजल
निधि तारे चारे सदा सुख राज दे ॥ १ ॥पण
दश शत कोडी उड्ढे अहे तिरछे तथा । अडवन
लख कोडी चत्ता बिया गिनती कथा॥छांत
सहिसा अस्सी माना जिना हितकारका ।अग
णित वणज्योतिष्के ही नमो भवतारका ॥२ ॥
जिनवर कहे ठाणा अंगे उपांगहि तीसरे। भग-
वई विचे बीयोपांगे सदा हि न वीसरे । सिरि
कल्प में ज्ञाता अंगे तथा ववहाररे। अन कई
जिन ग्रथे देखी असासतिधाररे ॥ ३॥ अमरइ
असुरा इंद्रा सर्वे कल्याणक वासरे । अठइ अठ

म द्वीपे नंदीसरे सुभ खासरे ॥ तपगण नभो राजा ताज़ा समा मुनि पुंगवा । वल्लभ पणमे आत्मारामा सदा जिन सेववा ॥ ४ ॥ इति ॥

श्रीचरणकरणधारिभ्यो नमः

सज्झाय तथा गुरु महाराज की स्तुतिरूप भजन।

(चाल—होई आनंद बहार)

गुरुजी दीन दयाल रे,
    मोरी लागी लगन है ॥गुरुजी॥अंचली॥
रूपदेवी नंदन दुख कंदन,
    वंदन करूं तीन काल रे ॥ मोरी० ॥१॥
आभव परभव के हित करता,
    षट् जीवन प्रतिपाल रे ॥ मोरी० ॥२॥
तन मन धन से जो भवि सेवे,

नित नित प्रातःकाल रे ॥ मोरी०॥३॥

मान रहित लक्ष्मी सो पावे,
ध्यावे कर कर ख्याल रे ॥ ४ ॥

राज पाट सुख संपद थावे,
गावे गुण-रसाल रे ॥ मोरी० ॥५॥

महाराज विजयानंद सूरि,
आतम राम कृपाल रे ॥ मोर० ॥ ६ ॥

जीवन दरस विना तुम तरसे,
वल्लभ दास निहाल रे ॥ मोरी० ॥ ७॥

(पहाड़)

हरदम चित लाना चित लाना रे,
जिया हर दम चित लाना २-रे ॥
वे गुरु दे चरनों गुरुदे,

चरनोंमें चित लाना लाना॥हर०॥अंचली

रक्षा करते नित छै काया ॥
आया शुध करते तज माया ॥
नहीं जस मनमें माना माना॥हर०।१।

खमा सागर गुण के भंडारी ॥
तप के आगर अति उपगारी ॥
चरणी है प्रभु ध्याना ध्याना॥हर०॥२॥

विनय विद्या का मूल कहावे ॥
मान करे ते ज्ञान नहीं आवे ॥
कर शुध मन शुभ ज्ञाना ज्ञाना॥हर०।३।

जग गुरु ज्ञानसे चरण बतावे ॥
राज ऋद्धी अमर पद पावे ॥
शिव पुर मारग जाना जाना॥हर० ।४।

यम धर दम कर इंद्री प्यारे ॥

मदन मरे टरे कर्म हत्यारे ॥
राग जरे दुःख दाना दाना ॥हर०॥५॥
जी जी सदगुरु वचने कहिये ॥
जीवन शुभ फल वल्लभ लहिये ॥
होवे आतम राना राना ॥ हर० ॥६॥

(लावणी)

अरी तुम देखो री नैना, गुरु देखत तन मन चैना ॥ अरी० ॥ अंचली ॥ गुरु गुरु जग जन कहे, गुरु गुण जाने न कोय। जो गुरु गुण को जान सी, पावे शुभ गुरु सोय ॥ प्रथम गुरु गुण करले जैना, जिसे सदगुरु जी सैं कैना ॥ अरी० ॥ १ ॥ पांच महाव्रत पालते, दया तना भंडार, झूठ कभी नहीं बोलतें, त्यागी चोरी नार। मोह ममता में नहीं पैना

दाम कौडी भी नहीं लैना ।। अरी० ।।२।। माधु-
करी भिक्षा चरे,करे धरम के काम ।। शत्रुमित्र
दो सम गिने, जपे निरंतर नाम ॥ निरंतर
निज गुण में रैना, करम दलसे निस दिन
खैना ॥ अरी० ॥ ३ ॥ तप जप संयम साधते,
ज्ञान ध्यान परवीन ॥ शुद्ध समाधि साधके,
अनुभव रस में लीन ॥ नहीं डेरा पाके बैना,
निरंतर रमते ही रैना ॥ अरी० ॥ ४ ॥ इस कल
युग के बीच में ऐसे गुरु गुण धाम ॥ हितकारी
जग जीवके,होये आतमा राम ॥ किसीने सरणा
नहीं दैना,गुरु सरणा वल्लभ लैना॥ अरी०॥५॥

(दहीं वाली की चाल)

गुरु आतम आनंद बलिहारी, धरम धरम
की हुंडी तारी ॥ गुरु० अंचली ॥ जैसे शाह
बिना पत नहीं है,तैसे गुरु विना गत नहीं है ।

मानो बात य सत कही है, निश्चय करो निश्चय करो दिल धारी ॥ गुरु०॥१॥ गुरुदेवको माता मानो, सच्चे पिता जग येही जानो॥ सब सज्जन को यही फरमानो, गुरु सम नहीं गुरु सम नहीं हितकारी॥ गु० ॥ २ ॥ भव सागर में डूबती नैया, गुरु विन कोई न पार करैया। धन धन गुरु भव सिंधु तरैया, तारन तरन तारन तरन उपगारी ॥ गुरु० ॥३॥ इज्जत सब की सतगुरु हाथे, रात दिवस रखो दिल की साथे ॥ वार वार सब टेको माथे, पाप पडल पाप पडल सब टारी ॥ गुरु० ॥ ४ ॥ मूर्ख शिष्य को पंडित करता, जन्म जन्म की पीड़ा हरता । ज्ञान प्रकाश हिरदें में धरता, वल्लभ करे वल्लभ करे जयकारी ॥ गुरु० ॥५

(चाल रासधारियों की—छोटा नंद का)

हेरी जिया आतमाराम समा गये,
गुरु संघके बडे–गुरु जैनके बडे–
अनिहां आतम० अंचली ॥

काल पांचमें हुये अवतारी,
युगपरधान समान ॥
अद्भुत सुंदर रूप सुहंकर,
मुख पर लसन निशान ॥
हेरी जिया झंडा धरमका लगा गये,गुरुजैन०॥१
अमृत रस सम मीठी वानी,
करते थे व्याख्यान ॥
भिन्न भिन्न सब को समझा के,
करते थे सुजान ॥
हेरी जिया साचा धरम सुना गये,गुरुजैन०॥२॥
सतभेद संयम पाले,

नहीं क्रोध नहीं मान ॥
माया लोभ को दूर किये हैं,
समता रस की खान ॥
हेरो जिया कुगुरोके फंद छुडा गये,गुरुजैन०॥३
जग हितकारी अति उपकारी,
पूरे विद्यावान ॥
रात दिवस सब मिलकर कीजे,
सद गुरु गुण की खान ॥
हेरो जिया पूजन रीति बता गये,गुरु जैन०॥४
हे सद्‌गुरु जी आनन्द दाता,
धरता हूं तुम ध्यान ॥
सेवक को किरपा कर दीजो,
निज सरूप का दान ॥
हेरो जिया आतम वल्लभ बना गये, गुरुजैन०५

(चाल—मजा देते हैं क्या यार तेरे बाल घूंघर वाले)

ऐसे गुरु आतम अनगार, रस्ता धरम बताने वाले ॥अंचली॥ इस दुषम कालके बीच, बनाये कुगुरों ने भवि नीच, निकाले कुगुरुफंद से खीच, गुरु दुर्गत से बचाने वाले ॥ऐ० १ ॥ फंसे थे मोह करम के फंदे, चेताये ज्ञान ध्यान से बंदे, छुडाये गंदे सब धंदे, गुरु भव पार लगाने वाले॥ ऐ० २ ॥ मित तात मात सुत भाई, साला सौरा धी जमाई, न कोई गुरु के तुल्य सहाई, हमको मदद पहुंचाने वाले ॥ऐ० ३ ॥ नहीं दौलत औरत तेरी, क्या करता है मेरी मेरी, होगी आखर में यह ढेरी, गुरु सत ज्ञान जताने वाले ॥ऐ०४॥ है मनुष्य जन्म का सार, नहीं कुछ इसमें सोच विचार, जो करना है पर उपकार, गुरु निज रूप बनाने वाले॥ऐ०

५ ॥ कहे वल्लभ आनंद कंद, जिस का नाम है आतमानंद, धरम से पावे परमानंद, गुरु जग धरम कराने वाले ॥ ऐ० ६ ॥ इति॥

(चाल–लच्छीकी)

आहो जी आतम गुरु राया, गुरुराया२ भव भव में अति सुखदाया जी, आ० १॥ आहो जी शुध मन वच काया, वचकाया२ नमु वार वार तुम पाया ॥ आ० २ ॥ आहो जी सज्जन मन भाया, मनभाया २ जग जैन धर्म दीपाया-जी ॥ आ० ३ ॥ आहो जी ज्ञान परम पाया, परम पाया २ तज क्रोध मान लोभ मायाजी ॥आ० ४॥ आहोजी संजम चित लाया, चितलाया २ मिथ्या तम तिमिर उड़ाया जी ॥ आ० ५ ॥ आहोजी ढुंढक गढ ढाया, गढ ढाया २ शुद्ध जैन धर्म बतायाजी ॥ आ० ६ ॥ आहोजी धन

धन तुम वाया, तुम वाया २ देव गुरु धर्म समझाया जी ॥ आ०॥७॥ आहोजी मारग बतलाया, बतलाया २ जिन गणधर का फरमायाजी ॥ आ० ८॥ आहोजी आनंद गुण गाया, गुण गाया २ वल्लभ मन में हरषाया जी ।आ०९

(चाल—सियाराम जपो मन मेरे)

मन सिमरो आतमराया,जिनें जगमें धर्म दीपाया । मन० । टेर । आतमाराम रमे जस मनमें,रोग सोग नही तस तनमें;जो नर आतमाराम को ध्यावे,सो नर अजर अमर पद पावे । गुरुजी । मन वच काया शुद्ध करीने जो नर मुनिगुण गावे,पाप कर्म सब दूर हो जावे सज्जन सोही कहावे;जेते गुण मुनिजनमें सोहे सुरगुरु पार न पावे,तोभी निजशक्ति अनुसारे भविजन गिन हरषावे । तातें गिनिये गुण मुनिराया ॥

मन०१॥ एकको हरते एकको करते,दो कढ दो, कर दो नहीं करते,दो चित्त रख तीन तीन नहीं धरते,तीन निवारी तीन चित्त धरते।गु०। तीनको गोपे तीन को लोपे तीन से करे त्रिछोरा, चार जलाई चार हटाइ चार थकी मन मोरा,पांच को त्यागे पांच से भागे पांचसु प्रीति जोड़े,पांचको पाले छी को राखे छीसें प्रीति तोडे,तातें छी छी स चित्त लाया । मन०२। सात निवारे सातको धारे,आठ को टारे आठको जारे;,आठको पारे नवको विसारे,नव दशसे नही होवे किनारे।गु० एकादशका ज्ञान करीने द्वादश सेवन करते,तेरा सेती प्रीति निवारी तेरा सेती डरते,चौदह पनरह षोडश का ही ज्ञान चित्तमें धरते,सतरां सेवे सतरा खोवे अष्टादश नही चरते, तातें उन्नीस ज्ञान धराया । मन० ३ । वीस भूलावे इकवीस

डावे, बाइस सूरे मार भगावे, तेइस धार चउ वीसको ध्यावे, पचवीस लार छवीस को गावे, गु० ॥ सत्ताइस को धारे हियेमें अठाइस चित्त लावे, ऊनती तीको दूर करीने इकती सुभ मन भावे; बत्तीसाका संग्रह कर कर तेतीस मनसु मिटावे, सुध उपदेश करी भविजनका मोह ति- मिर हटावे। तातें होवे शुभ मुनिराया, मन० ४ ऐसे सूरे ज्ञानमें पूरे, आतमाराम मुनिगुण भूरे; तपगणगगन प्रकाशन सूरे, करी उपगार तिमिर जग चूरे॥ गु०। जे जे काम किये शुभगुरुने गिनती कौन करावे, भेजी वीर विलायत देशे जैन धरम प्रगटावे; ऐसे सदगुरु चरणी जाकर सहीयां गहुंलीपूरें, अक्षत सेती स्वस्तिक करके चार गति चकचूरे। तातें वल्लभ आनंद पाया मन० ५ ॥

सूचना—यदि इसको पुरुष पढ़ना चाहें तो

अंतम गाथा के, अंतिम दो पदे, ऐसे पढ़ें ॥
ऐसे सद गुरु चरणी जाकर भविजन सीस नमावे,कठन करम को दूर करीने भव फिरना नहीं पावे,तातें वल्लभ आनंद पाया ॥मन०५ ॥

(रावधारियों की चाल)

विना गुरुराज के देखे,
मेरे दिल बेकारारी है ॥ वि० ॥ टेर ॥
आनद करते जगत जनको,
वयण सत सत सुना करके। वि १।
तनु तस शांत होया है,
पाया जिनें दर्श आकरके। वि० २।
मानो सुर सूरि आए थे,
भुवि नरदेह धरकरके। वि० ३।
राजा अरु रंक सम गिनते,
निजातम रूप सम करके। वि० ४।

महा उपगार जग करते,

तनु फनाह समझ करके। वि०५।

जो या वल्लभ चाहता है,

नमन कर पांउं पर करके ॥ वि०६ ॥इति॥

॥ चाल—हे जी तुम सुनियोजी करुणानाथ ॥

हेजी तुम सुनीयोजी आतमराम, सेवकसार लीजोजी। टेर। आतमाराम आनंद के दाता तुम विन कौन भवोदधि त्राता, हुं अनाथ सरण तुम आयो, अब मोहे हाथ दीजोजी। हे० १ ॥ तुम विन साधुसभा नवि सोहे, रयणीकर विन रयणी खोहे, जैसे तरणि विना दिन दीपे निश्चय धार लीजोजी॥हे० २। दिन दिन कहते ज्ञान पढाउं, चूप रहे तुज लड्डू देउं, जैसे माय बालक पतयावे, तिम तुमे काहे कीजो जी।हे०३॥

दीन अनाथ हुं चेरो तेरो, ध्यान धरु हु निश दिन तेरो, अवतो काज करो गुरु मेरो, मोहे दिदार दीजोजी । हे०५। करो सहाय भवोदधि तारा, सेवक जन को पार उतारो, वार वार विनती यह मोरी, वल्लभ तार दीजोजी । हे०५

॥ सइन सलूणो माहरो । गुजराती ॥

धन्य रूपादेवी मातने, हे सहीया हे जायो पुत्र रतन हो,गणेशचद क्षत्री कुले, हेसहीयो हे जिम तरणि गगन हो जग वोह दीनो माहरो, कर्म खोह कीनो माहरो,भव भय छीनो माहरो, ज्ञान नगीनो माहरो, साहिवो, हे सहीयो हे जय गुरु आतमराम हो॥ जग०१॥देश पंजाव में जनमीया,हे सहीयो हे, लहरा गाम मझार हो,वालपने दीक्षा लइ,हे सहीयो हे त्याग दिया संसार हो ॥ जग०२ ॥ढुढक तिमिर दिवाकरु,

हे सहीयो हे षट् मत जानन हार हो,वादिकरी शिर केसरो,हे सहीयो हे विण नहीं मान लगार हो,जग० ३॥ उन्नीसो तिरतालीये,हे सहीयो हे सिद्धक्षेत्र शुभ ठाम हो, विजयानंद सूरी दिया हे सहीयो हे संघने सुंदर नाम हो॥जग०४॥देश देशांतर विचरीयां, हे सहीयो हे कीनो बहु उपगार हो,जस जग जस व्यापो अति,हे सहीयो हे केहतां न आवे पार हो ॥जग० ५॥ संवत शत उन्नी तेपना,हे सहीयो हे जेठ अष्टमी मानहो, मंगलवार उज्जल पखे, हेसहीयो हे वल्लभको विसरान हो ॥ जग०६ ॥ इति ॥

(वारी जाउंरे केशरीया यह चाल)

आनंद सूरी बलिहारीरे,

मद दूर निवारी। आनंद। टेर।

तप जप ज्ञान क्रिया घट जागी,

ह्यानि करम गति चारीरे। मद० १ ॥

माया लोभ भय क्रोध विडारी,

वीर शांत रूप धारीरे। मद० २।

राज कुमर सरिषा गण चितक,

रथवाही हितकारीरे। मद० ३।

मन वच काया शुद्ध करीने,

स्वारथ निज सब छारीरे। मद० ४।

जिन वाणी गुरु मुख सुनी मैं,

सीठो वल्लभ भव तारीरे। मद०५।इति।

॥ भैरवी ॥

(भवतो प्रभुजी का लेखो सरन यह देखो)

देखो गुरु जग तारन तरन। टेर।

पांच महाव्रत सूधे पाले, पांच आचार को मनन करन। दे०१। समिति पांच तीन गुप्तिके धारी, इंद्रि पांच का दमन करन। दे० २। ब्रह्मचर्य गुप्ति नवधारे, चार कषायको वमन करन।दे०३ बाबीस परीसहसे नहीं डरते, उपसर्ग सोलां सहन करन ॥ दे० ४ ॥ आतमाराम आनंदके दाता, वल्लभ गुरु को नमन करन ॥दे०५॥

(मेरीकरो माफ तकसीर यह चाली)

गुरु आतम आनंदकार, हुए इस जग में अवतारी ॥ गु० ॥ टेर॥

पांचमहाव्रत धार, हुए आस्रव सबके त्यागी, मन वच काया शुद्ध हुए, भवभयसे वरागी। गुरुजी छत्तीस गुण को धार, ज्ञान दातार, कुमत को छार, हुए शुद्ध मत के अनुसारी ॥ ०२ ॥ षट् मतके गुरु ज्ञात, नहीं कोई वादी पग धरता;

जो दृष्टी गोचर आया, सो ही पाछे झटपट फिरता ॥ गुरुजी ॥ नहीं क्रोध का लेस मान का वेस, माया का देस, हुए तृश्ना सागर तारी ॥ गु० २॥ फिर फिर के देश विदेश धर्म उपदेश दिया भारी,जहां लेना नहीं कछु और, ऐसे गुरु जगमें वलहारी ॥ गुरुजी ॥ करके अति उपगार, वहु नर नार, दिये भवतार, अतघंट दूर कुमति टारी ॥ गु० ३ ॥ मदन कदन को टार, गुप्ति नव ब्रह्मचर्य धारी; पांच समिति पार, दमन कर पाच करण भारी ॥ गुरुजी ॥ षट जीवन रखवार, गुप्ति त्रय धार, आठमद टार,हुए शिवमगके अधिकारी ॥ गु० ४ ॥ महावीर जिन देव,तीर्थ में तहत्तर पट धारी, विजयानंद सूरि राय, श्री युगप्रधान सम तारी। गुरुजी । ऐसे सद् गुरु चरण, के भव भय हरण,

भवोदधि तरण, आतम वल्लभ अति दिल ठारी गु० ५ ॥ इति ॥

(मोहे तजके नेमी यह चाली)

मोहे तारो स्वामी, आप खरे गुरुराय ॥टेर॥ आतमाराम आनंद विजयजी, विजयानंद सूरी राय । मो० १ । गुरु गुण छत्तीस आप विराजें, पांच महाव्रत पाय । मो० २ । धर्म पदारथ जानत साचा, धर्म सदा चित्त लाय । मो ०३ ॥ समता भावे नित भविजन को, धर्मोपदेश सुनाय। मो०४ यह गुरु लक्षण आपमें देखे, आप समा कौन थाय । मो० ५ । तूं जग जीवन प्राण आधारो, तूंही पिता तूंही माय । मो० ६ । आतम लक्ष्मी शुभगुरु पाके, वल्लभ हर्ष न माय । मो० ७ ।

(पायेजी कलियुगमें एक गुरु यह चाली)

सीमरो जी मन वच काया श्री गुरुआतमाराम,

जिनोंके सीमरणसे भविपावें अविचल धाम। टेर

गुरु आतम आनंद दाया, जिने जगमें धरम वधाया; अवतार सरिषा कहाया, ते सूरी राया। मन० १। बाल ब्रह्मचारी गुरु थाया, दुख मदन कदन का हटाया; पाच इंद्रि विषय जराया, ते मन वस लाया। मन० २। गुरु छत्तीस गुण को पाया, अवगुण कर्दव को ढाया; जग जुगपरधान कहाया, ते कुमत हटाया। मन० ३ गुरु शशि सम निर्मल काया, तरणि से तेज सवाया, मुखपर समता रस छाया, ते आनंद पाया। मन० ४। गुरु अमृत ज्ञान पिलाया, नर नारी शांत कराया, वल्लभ दर्शन तुम पाया। ते मोह हराया। मन० ५॥ इति॥

॥ विहाग ॥

(क्यूं विसरो रे सुज्ञानी)

सीमर सीमर गुरु ज्ञानी, भविक जन सीमर सीमर गुरु ज्ञानी ॥ टेर ॥

सब जग मांही जेते सोहे, वाचंयम पद ठानी। भवि० १। चरण करण सेवी जग मोहे, दरस चरितर ज्ञानी। भवि० २। मूलोत्तर गुण साधी खोहे, करम राय तुफानी। भवि०। आतमाराम सम नहीं और, जग उपगार करानी। भवि०४ हर्ष धरी जो भविजन सीमरे, जग वल्लभ पद दानी ॥ भवि० ॥ इति ॥

दादरा।

आतम गुरु महाराज हुए जैन ऋषि भारी, आतम गु० ॥ टेर ॥

षटकाय हिंसा त्यागी सब झूठ दियो टारी ।
चोरी परिग्रह त्याग के नहीं संग नारी धारी ।१।
नव गुप्ति ब्रह्म पाली, हुए बालब्रह्मचारी ।
क्रोध मान माया लोभ नहि कुगुरु संग छारी।२।
सुधा समान ज्ञान पान ध्यान दान कारी ।
ऐसे हुए महाराज कलिकाल में अवतारी ॥३॥
देश देश मे विचर के उपगार किया भारी।
सत्योपदेश देय के बहु तारे नरनारी । आ०४।
संयम शुद्ध पाल किया स्वर्ग अलंकारी। वल्लभ
आनद अपार हर्ष बोल जय जय कारी ॥५॥

(दादरा)

आतम गुरु होगए जैन गगनमें दिनेंदा ।टे०।
जन्मे जीरेके पास गाम लेहरे में मुनींदा ।
रूपदेवी माता जाये पिता श्रीगणेशचंदा।आ०१

अहो जैनयति वेश तपागच्छ में गणींदा । करा बुद्धिविजय गुरु हरा कुगुरुजालफंदा ॥आ०२॥ सिद्धगिरि तीर्थ मांही सकलसंघने मिलींदा आचार्यपदवी दीनी सूरीश्रीविजय आनंदा॥आ३। व्याकरण काव्य कोष अलंकार न्याय छंदा । जैन विद्या के निधान दर्शन षटके होए पठींदा, आ०४ । पग से करी विहार किया दिग्विजय मुनींदा । करा धर्म का उद्धार हरा कुमत वादिवृन्दा ॥आ०५॥ प्रतिभा बुद्धि प्रभाव हुए ज्ञानियों में इंदा । जैनतत्वादर्श आदि बहु ग्रंथ के रचेंदा ॥ आ०६ ॥ हुए ऐसे गुण समद्र कलि काल में सूरींदा । जेठ अष्टमी सुदि साल शिखि[३] बाण[५] निधि[९] चंदा[१] ॥ आ०७ ॥ गुजरांवाल नगर मांही हुए स्वर्ग में देवींदा । पट्टी गुरुगुण गाए वल्लभ सुमति अमीचंदा ॥ आ० ८ ॥ इति

अथ गुरुस्तुतिगर्भितसप्तवारा:

(चैत से सोहाग सहोया, इत्यादि बारहमासे की चाल)

आदित्य आतमराम सुगुरु ज्ञान दर्शन साधते
ध्वंस मोह तिमिर कर कर भव्यजीव जगावते,
नाम सीमरो पाप मकरो मोहमाया पारहरो
शुद्ध दर्शन ज्ञान सयम आदरो भव ना फिरो॥१॥
चंद्र सम सुख ऊचरे गुरुवयण अमी वरसाइया
पानकर शुभ कर्ण सेती भव्य कुमुद खिडाइया
शांत रस भर तोष पामी भव्यजन हरषाइया,
रामआतम देखी कुगुरु ग्राम सब मुरझाइया॥२॥
वक्र कुगुरु फन्द फसते भव्य हिरण छुडाइया,
सत्य जैन जिनेंद्र भाषित शुद्ध मग वरताइया,
भाष्य चूर्णि मूल निज्जुइ वृत्ति पांच वनाइया
अंग पांचे शुद्ध जिनवच देखी आनंद पाइया॥३॥

सौम्यरसभर नयनदेखी भव्य ताप हराइया,

चंद्र देखी चकोर जैसे आत्मानंद लाइया,
पांच समिति तीन गुपति आठमें चित्त ठाइया
आठ मदका त्याग करके आठ करम घटाइया॥४॥
वीरजिन वच पान करके काम प्यास बुझाइया
क्रोध माया लोभ मिथ्या दर्श चौर धुझाइया
खंति मुत्ति मार्दवार्जव सत्य ब्रह्म धराइया;
शौच संजम तप अकिंचन राम आतम गाइया॥५॥
कवि न्यायी ज्ञानी ध्यानी वादीषट्मत धाइया
कोइ ऐसा नाहीं देखा सामने जो आइया
सकलप्राणिनिवासधीरा विषयकुटीर जलाइया
देख आतमराम त्रिभुवन मोह जाल दलाइया॥६॥
मंदभाषणाहित मित सु स्नेह पास छिदाइया।
कर्म परिणति जान दुख उपसर्ग घोर सहाइया।

जीत परीषह सुभट आतमराम पार लंघाइया,
जगजीववल्लभ हर्ष सुगुरुसेव शिवसुखदाइया॥७

॥ दोहरा ॥

गुरु आतम भवि सिमरिये, वंछित फल दातार
जगवल्लभ आतम गुरु, भवजल तारण हार॥१॥
आतम रस में रम रहे, श्री गुरु आतमराय;
आतम वल्लभ कारणे, वंदे सुर नर पाय॥२॥
गुरु गुण गण सब वस किया, ज्ञान तणाभंडार;
आतम वल्लभ जगगुरु, तारे भवि संसार॥३॥
ढुंढक मतका त्याग के, शुद्ध जैनमत लीन।
आतम वल्लभ तारणे, ज्ञान ध्यान परवान॥४॥
जय गुरु आतमरामजी, विजयानंद सूरीस;
जग उपगारी जगगुरु, जगवल्लभ जगदीस॥५॥
तप जप खर अतिज्ञानका, गर्व सप नहीं लगार;

टप आतम निजकर्मसे, ठपवल्लभअणगार॥६॥
सम खम यम लघुता मगन, कर पणइंद्रि दमन;
आतम वल्लभ खोजके, करमसमाज वमन॥७॥
जनम मरण भवभय हरण, चरण करणगुणधाम;
तारण तरण भवोदधि, वल्लभ आतमराम ॥८॥
आतम, गुरु समको नही, वल्लभ जिम खसूर;
मूरखको पंडित करे, मोहतिमिर करी दूर॥९॥
मात तात गुरु आतमा, रामा वल्लभ पूत,
कर सीमरण नित भावसे, शिवरमणिसंगदूत१०
ज्ञानक्रिया बलिवर्दरथ, सोल सहस्र अठार;
सारथी करगुरुआतमा, वल्लभमोक्षपहुंचार११



अथश्रीतपागच्छाचार्य श्रीमद्वि जयानन्दसूरीणामष्ट प्रकारी पूजा ।

---

(१) अथ जल पूजा

(शिखरणी वृत्तम्)

सरोगंगादीनां त्रिमजलसंपूरितघटै ।
महांतं गीतार्थं चरणकरणासेवनपरम् ॥
तपागच्छाधीश मुनिगणपति मंगलकरं ।
यजाम श्रीसूरिंसतत विजयानदमनघम् ।१।

मत्रः ।

ॐ ह्रीं श्री विजयानदसूरिगुरवे जल यजामहे स्वाहा ॥१॥

(२) अथ चंदन पूजा

सुभद्रश्रीचन्द्रप्रचुरतरबाल्हीकनिकरै ।
महांतं गीतार्थं चरणकरणासेवनपरम् ॥
तपागच्छाधीशं मुनिगणपतिं मंगलकरं ।
यजामःश्रीसूरिं सतत विजयानंदमनघम्॥२॥

मंत्रः ।

ॐ ह्रीं श्री विजयानंदसूरिगुरवे चंदनं यजामहे स्वाहा ॥२॥

(३) अथ पुष्प पूजा ।

जपाजातीपंकेरुहबकुलकुंदादिकुसुमै ।
महांतं गीतार्थं चरणकरणासेवनपरम् ।
तपागच्छाधीशं मुनिगणपतिं मंगलकरं ।
यजामःश्रीसूरिं सतत विजयानंदमनघम् ।३।

मंत्रः ।

ॐ ह्रीं श्री विजयानंदसूरिगुरवे पुष्पाणि यजामहे स्वाहा ॥३॥

(४) अथ धूप पूजा

दशांगैर्धूपैश्चागुरुमृगमदादिप्ररचितैः ।
महांत गीतार्थं चरणकरणासेवनपरम् ॥
तपागच्छाधीश मुनिगणपति मंगलकरं ।
यजाम श्रीसूरिं सततविजयानंदमनघम् ॥४॥

मंत्रः ।

ॐ ह्रीं श्री विजयानंदसूरिगुरवे धूपं यजामहे स्वाहा ॥४॥

(५) अथ दीपपूजा ।

तम शांत्यै नित्यं मधुरघृतदीपेन विधिना ।
महांतं गीतार्थं चरणकरणासेवनपरम् ।

तपागच्छाधीशं मुनिगणपतिं मंगलकरं ।
यजामःश्रीसूरिं सतत विजयानंदमनघम् ।५।

मंत्रः ।

ॐ ह्रीं श्री विजयानंदसूरि गुरवे दीपं यजामहे स्वाहा ॥५॥

(६) अथाक्षत पूजा ।

कणैःशुद्धाखंडैर्यवचणकवल्लाक्षतमुखै ।
महांतं गीतार्थं चरणकरणासेवनपरम् ॥
तपागच्छाधीशं मुनिगणपतिं मंगलकरं ।
यजामःश्रीसूरिं सतत विजयानंदमनघम् ।६।

मंत्रः ।

ॐ ह्रीं श्री विजयानंदसूरिगुरवे अक्षतान् यजामहे स्वाहा ॥६॥

(७) अथनैवेद्य पूजा ।

सुधा स्वादिष्टैर्मोदकवटकनैवेद्यगणकै ।

महांतं गीतार्थं चरणकरणासेवनपरम् ॥
तपागच्छाधीशं मुनिगणपतिं मंगलकरं ।
यजामः श्रीसूरिं सततविजयानंदमनघम् ७

मंत्रः ।

ॐ ह्रीं श्री विजयानंदसूरिगुरवे नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥७॥

(८) अथ फलपूजा ।

फलैः पूर्णैः शुद्धैः कदलिपनसाम्रादिविविधैः ।
महांतं गीतार्थं चरणकरणासेवनपरम् ।
तपागच्छाधीशं मुनिगणपतिं मंगलकरं ।
यजामः श्रीसूरिं सतत विजयानंदमनघम् ।८।

ॐ ह्रीं श्रीविजयानंदसूरिगुरवे फलानि यजामहे स्वाहा ॥८॥ इति

इति न्यायाम्भोनिधि तपागच्छाचार्य श्रीमद्विजयानन्दसूरि पूजाष्टक समाप्तम् ।

अथश्रीतपागच्छाचार्य श्रीमद्वि-जयानन्द सूरि महाराज का पूजाष्टक ।

"हरिगीतछन्दः"

(१) अथ जल पूजा ।

शुद्धनिरमल नीर छान्यो कलश कंचन को भरी
उपकारी जगमें मनोवांछित करे मंगल अघहरी
तपगच्छधोरी हाथजोरी करूं जलसे पूजनं ।
श्रीविजयआनंदसूरि होवे पाप कर्म को धूजनं १

मंत्र ।

ॐ ह्रीं श्री विजयानंदसूरिगुरवे जलं यजामहे स्वाहा ॥

(२) अथ चंदन पूजा।

घस शुद्ध चदन और केसर कटोरी कचन भरी
उपकारी जगमें मनोवांछित करे मगल अघहरी
तपगच्छ धोरी हाथजोरी करू चदनपूंजनं।
श्रीविजयआनदसूरिहोवे पाप कर्म को धूजनं

मत्र।

ॐ ह्रीं श्री विजयानद सूरि गुरवे चंदनं यजामहे स्वाहा ॥२॥

(३) अथ पूष्प पूजा।

पञ्च वर्णसुगंध कुसुमें गुरुगुण मालाकरी।
उपकारी जगमें मनोवाछित करे मंगल अघहरी।
तपगच्छ धोरी हाथ जोरी करू पुष्प से पूजनं
श्रीविजयआनंदसूरिहोवे पापकर्म को धूजनं।३।

मंत्रः ।

ॐ ह्रीं श्रीविजयानंद सूरि गुरवे पुष्पाणि यजामहे स्वाहा ॥३॥

(४) अथ धूप पूजा ।

सुगंध धूप दशांग महके कुमति गंध को हरी ।
उपकारी जग में मनोवांछित करे मंगल अघहरी।
तपगच्छ धोरी हाथ जोरी करूं धूप से पूजनं।
श्रीविजय आनंद सूरि होवे पापकर्म को धूजनं।४

मंत्रः ।

ॐ ह्रीं श्रीविजयानंदसूरिगुरवे धूपं यजामहे स्वाहा ॥४॥

(५) अथ दीपपूजा ।

शुद्ध गोघृत भरचो दीपक प्रगट जतना से करा।
उपकारी जगमें मनोवांछित करे मंगल अघहरी

तपगच्छ धोरी हाथजोरी करूं दीपकपूजनं।
श्रीविजयआनंदसूरि होवे पापकर्म को धूजनं।५।

मंत्र ॥

ॐ ह्रीं श्रीं विजयानन्दसूरि गुरवे दीपं यजामहे स्वाहा ॥५॥

(६) अथ अक्षत पूजा।

अखंड उज्वल शुद्ध अक्षत थाल कंचन को भरी।
उपकारी जगमें मनोवांछित करे मंगल अघहरी।
तपगच्छ धोरि हाथ जोरी करूं अक्षत पूजनं।
श्रीविजयआनंदसूरि होवे पापकर्म को धूजनं।६।

मंत्रः ॥

ॐ ह्रीं श्रीं विजयानन्दसूरिगुरवे अक्षतान् यजामहे स्वाहा ॥७॥

(७) अथ नैवेद्य पूजा।

शुद्ध सुन्दर रसवती पकवानसे थाली भरा।

उपकारी जगमें मनोवांछितकरे मंगल अघहरी।
तपगच्छ धोरी हाथ जोरी करूं नैवेद्य पूजनं।
श्रीविजयआनन्द सूरि होवेपापकर्मको धूजनं।७।

मंत्रः ॥

ॐ ह्रीं श्री विजयानन्द सूरि गुरवे नैवेद्यं यजामहे स्वाहा।

(८) अथ फल पूजा।

पूर्ण फल के कारणे नाना फले थाली भरी।
उपकारी जगमें मनोवांछित करे मंगलअघहरी।
तपगच्छ धोरी हाथ जोरी करूंफलसे पूजनं।
श्रीविजयआनन्द सूरि होवे पापकर्मको धूजनं।८

मंत्रः ॥

ॐ ह्रीं श्री विजयानंदसूरि गुरवे फलानि यजामहे स्वाहा ॥८॥

इति न्यायाम्भोनिधितपगच्छाचार्य श्रीमद्विजयानन्दसूरि भाषामयपूजाष्टकं समाप्तम्।

अथ श्रीगुरुमहाराजकी आरती।

चाल,—दई वाली।

करो आरती गुरुकी प्यारे कर जोड़ करो वंदना सारे, करो० अचली॥ श्रीमहावीर सुधर्मा स्वामी, क्रम होए भ्रम खोए। वज्रस्वामी पूर्व दश धारे ॥ १ ॥ श्रीजगच्चद्रसूरीश्वर क्रमसे, तपी होए खपी जोए। तपगच्छ विरुद राय कारे॥ २॥ क्रमसे श्रामणी विजयजी तस, शिष्यथावे शुभभावे, बुद्धिविजयजी गुण भंडारे॥ ३ ॥ श्रीविजयानंदसूरि तस शिष्य, शुभकरणी जगतरणी। मेटे कुमति अज्ञान अंधारे॥ ४॥ धर्माचार्य तणी वलिहारी, गुण गावो सुख पावो। बोलो वारवार जयकारे॥ ५॥ मनवंछित आशा कर पूरण, तूं दादा गुण जादा। गावे नित गुण वल्लभ थारे॥ ६॥ इति॥

॥ अथ सद्गुरु की आरति ॥

करुं गुरु आरतियां हे सुरंग से करुं गुरु आरतीयां, जनम सफल कृतारथ होवे, करुं ॥ टेर ज्ञान दरस चारितर सोहे, तप पग धारतियां; हे सु०तप० । खोहे करमको दूर हटे भव फिर फिर भामतीयां ॥ १ ॥ गुरु विन ज्ञान नहीं जग जीवन, भवदुख हारतियां । हे सु०भ० ॥ विना ज्ञान किरिया नही सूधी, कहे जिन भारतियां ॥ २ ॥ ज्ञान क्रिया दोनों से मुक्ति, सत नय मानतीयां । हेसु० स० । षड भंगे दीपे जिनशासन, गुरुजन सारतियां ॥ ३ ॥ गौतम सोहम जंबु आदि, पाट धरावतियां ॥ हे सु० पा० । वज्रस्वामी दश पूर्व पाठी, ग्रंथ उद्धारतियां ॥४॥श्रिगुरु बुद्धि विजय पट धारी

आतम तारतियां। हे सु०आ०॥ विजयानंद सुरि पद पामी, वल्लभ कारतियां ॥ ५ ॥ इति ॥

अर्हम्

अथश्री तपगच्छाचार्य्य श्रीमद्विजयानन्दसूरिचरितं ढाल बंधेन लिख्यते ॥

विदित होवे कि दुखमांधकार संसार निमग्न प्राणियो को जिनप्रवचन के प्रकाश करने में दीपक समान, पूज्यपाद श्रीश्रीश्री १००८ श्री **मद्विजयानन्द सुरीश्वर जी (आत्माराम जी)** संप्रति काल में हुए जिन का प्रताप, यावत् विलायतादि देशो में भी प्रसिद्ध हुआ है, और जिन को स्वपर समय के

सर्व लोक प्रायः जानते हैं, जिनको स्वर्गवास हुए थोड़ा ही काल व्यतीत हुआ है, ऐसे परमहर्षि महात्मा के गुणों का, और मनुष्य देह में उन्होंने जो जो सुकृत परोपकारादि कार्य किये हैं, तिन का पूर्ण वर्णन करने को सुरगुरु भी समर्थ नहीं हैं, तो मेरे सदृश अल्प मतियों का तो क्या ही कहना है ! तथापि, निज बुद्ध्यनुसार भक्ति के वशसे, और सनखतरे के श्रावक लाला गोपीनाथ, अनंतराम, प्रेम चंद्रादि की प्रेरणा से यत्किंचिन्मात्र संक्षेप रूप स्मरणार्थ लिखने को मैं उद्यत हुआ हूं, इस वास्ते सज्जन पुरुषों को चाहिये कि किसी जगा प्रमाद के वश से स्खलना हुई होवे तो सुधार लेवें ॥ इतिसंवत्–१९५४–सनखतरा,

सूचना—इस चरितकी सात ढालां हैं, प्रथम ढाल में मंगलाचरण पूर्वक **श्री आत्मारामजीमहाराज** का जन्म, उपदेश का लगना, ढूंढक मत का स्वीकार करना, इत्यादि वर्णन है ॥

॥ ढाल पहिली ॥

॥ कुडलीया ॥

सग को नायक वीरजी, सिमरी सारदमाय;
बुद्धि नहीं पिण चित बहु, गुण गावा हुलसाय,
गुण गावा हुलसाय करो गुरु किरपा मो पर,
तारण तरण जहाज नहीं दीसे जग नो पर;
गुरुगुण आतमराम नाम वल्लभ सब जग को,
सत चिद आनद रूप करण कारण सुभ मग को ।१।

मेहबूब जानि मेरा ॥ देशी ॥

तुम सुनो भवि चित लाइ, गुरु आतमराम सुहाये; तस गुण गणका करुं वर्णन, आतमरस पाये ॥ तु० १ ॥ दुखम काले सिरी गुरुजी, दीपक सम थाये; शासन श्रीवीर दीपाया, अविचल सुख छाये ॥ तु० २ ॥ पंजाब देश जंगल में, लेहरामें जाये; गणेशचंद कुल नंदा, रूपा देवी माये । तु० ३ ॥ अंग लक्खण राज कुमर सम, मुख लसन सुहाये; जीरे में श्रावक जोधा, धरमी में गवाये । तू० ४ ॥ तस सोंप पिता बालक को, देव लोक सधाये; बुद्धि बल जलदी विद्या, संसार सीखाये ॥ तु० ५ ॥ संगत पुण्यांकुर प्रगट्यो, चित्त धरम धराये; ढूंढक साधु जीरे में, चउमास करण को आये ॥ तु० ६ ॥ उपदेश

सुनी निज चितको, जग सें हटाये; संवत् शत उन्नी दशमें, मालेरकोटले आये। तु० ७॥ मगसर सुदि पंचम के दिन, जीवण गुरुभाये; ढुंढक मत की लइ दीक्षा, माता समझाये। तु०।८ तप ज्ञान ध्यान जप चारित, निज दिल में ठराये, आतमराम अति वल्लभ, जग नाम धराये,। तु० ९॥ इति १

॥ ढाल दूसरी ॥

सूचना—इस दूसरी ढाल में व्याकरणादि शास्त्रों का पढ़ना, पूर्वाचार्यों कृत अर्थ का देखना, ढूंढकमत स्वकपोलकल्पित है ऐसे ज्ञान होना, सनातन जैनमत का शुद्ध श्रद्धान अंतःकरणमें धारण करना, इत्यादि वर्णन है

॥ रेखता ॥

घडी धन आज की आइ, धर्म जिनवरका देखा है; सुध सरधान मनचंगे, जिनागम सार पेखा है॥ घ० १ ॥ रहे दिन कितने वहां पर, पिछे विहार किया है; बहु विध देशमें फिरके, जिनागम रस पिया है॥ घ० २ ॥ परं विना शब्द शास्तर के, नहीं सुध ज्ञान पाया है, वडा अफसोस नहीं पढ़ना, यही अज्ञान छाया है॥ घ० ३ ॥ अलप से काल में सूतर, बत्ती का ज्ञान पाया है। तृपत मन नहीं हुआ पढ़के, चिंतामें चित्त ठाया है॥ घ०४ ॥ पढेंगे क्या ही अब जीया, यही अफसोस भारा है; अनंता ज्ञान जिनवरका, नहीं बत्तीस में सारा है ॥घ० ५॥ दीखे कछु भेद मुझे यामें, शब्द शास्तर न पढ़ना है; किया निश्चा ही निज दिल में, शब्द शास्तर को पढ़ना है।

घ० ६ ॥ अकल के जोर झट व्याकरण, पांचअंग सार लिया है; विभक्ति ज्ञान के होए, यथारथ ख्याल किया है । घ० ७ ॥ टीका निर्युक्ति कों देखी, चूर्णि अरु भाष्य देखा है; मनः कल्पित सच बातें, ढूंढक मत ऐसा पेखा है ॥ घ० ८ ॥ नहीं एह भेष जिनवर का, कहा ढूढकने धारा है; विना गुरु भेष को धरके, जगत वहकाया सारा है ॥घ० ९॥ समक्ष मन में ही रख करके वक्त कितना गुजारा है; सवब ढूढक मति सव थे, किसी भवी पास पुकारा है ॥ घ० १० ॥ चउ-मासा आगरे विक्रम, उन्नीसो वीस किया है, रतनचद साधु के पासो,अनुभव ज्ञान पिया है। ॥ घ० ११ ॥ अपि ढूढक मती वो था, परं हठको भूलाया है; कहा तिने साफ हुआ थोड़ा, समय ढूढक फलाया है ॥ घ० १२ ॥ चउमासे वाद

चलने वक्त, रतनचंदने पुकारा है; आतम वल्लभ चाहता है, बातें कर तीन सुधारा है। घ० १२

॥ इति ॥ २ ॥

॥ ढाला तीसरी ॥

सूचना——इस में जिन तीनों बातों का सुधारा करनेको श्री रतनचंदजीने, श्री आत्मारामजी को कहा था तिन को वर्णन, श्रीविश्नुचंदजी आदि साधुयों का यथार्थ श्रद्धान बिठलाने का वर्णन, अमर सिंहनामा ढूंढक के तर्फ से हुए अनेक उपसर्ग को सहन करके भी, हजारों भव्य जीवों को सन्मार्ग में प्रवृताने का वर्णन

और गूर्जर (गुजरात) देशमे जाके अविच्छिन्न परंपरागत सनातन **श्रीजैन** धर्मानुसार प्रवृत्तिवाले, **श्रीमद्गणिवृद्धिविजयजी (बूटेरायजी)** महाराज जी के पास पुनः दीक्षा धारण करके श्री सन्महावीर स्वामिका शासन अंगीकार किया और मनः कल्पित जैनाभास ढूंढकमत का त्याग किया, इत्यादि बातो का वर्णन हे ॥

॥ लावणी ॥

(चाल–अपने पदको तज के चेतन)

सुध सरधान को पाकर चेतन, हठ को करना ना चाहिये,हठ दुखदाई है, छोड़कर जिन वच सत गहना चाहिये॥ सु०१॥ जिनके नाम से भवजल तरना, तिनकी निंद ना चाहिये;

जिन मूरति माने,तिनां को बुरे समझने ना चाहिये ॥ सु० २ ॥ दशवै कालिक भाषे दंडा, साधु सदा रखना चाहिये; लघु नीति वाला, आगम को हाथ लगाना ना चाहिये ॥ सु०३॥ वयण मान तस मनमें आइ, दिल्ली तरफ चलना चाहिये; पंजाब देशमें, जाके सरधान सुनाना सुध चाहिये ॥सु०४॥ आए दिल्ली सुन कर साधु,विसनचंद कहने चाहिये; आए येह कहते,हम को ज्ञानपढ़ाना अब चाहिये ॥ सु० ५॥ सुनकर बोले आतम रामा, ज्ञान पढ़ाना तब चाहिये; माने जिन आणा, यथार्थ अर्थ दिखाना तस चाहिये ॥ सु०६॥ सुन कर चंपा लाल ही चमके,गुरुसें कहना अब चाहिये,सच निरना करलो, छोरा घर निष्फल होना ना चाहिये॥ सु० ७ ॥ पुण्यांकुरके प्रगटे चेतन,

सत्य निमित्त मिलना चाहिये, अंदरो अंदर ही, हाल सरधान विठाना सुध चाहिये ॥ सु० ८ ॥ पाठ देख निश्चा मन किया, देश में फिरना अव चाहिये, साधु श्रावकको, लगाकर जोर मनाना सत चाहिये ॥ सु०९॥ सहे कष्ट न चले जिन सतसे, सज्जन लक्षण यह चाहिये॥ मिल अमरसिंह ने, कहा जी अव वदोवस्त कराना चाहिये ॥ सु०१०॥ पूजा प्रतिमा मुख पाटी को, तोवरा कहना ना चहिये, जे अभक्ष परूपे, तिनां को आहार वेहराना ना चाहिये । सु०११ ॥ वंदना तिनको करनी नाहीं, थानक देना ना चाहिये, नर भेज देशान्तर, कराके दसखत मंगवाने चाहिये ॥सु०१२॥ फूटा ढोल कहां तक बाजे, झूठ का सरना ना चाहिये, सुध श्रावक कहते, हुए सत वीर वचन पाना

चाहिये ॥ सु० १३ ॥ श्रावक केइ सँहसर होए जिन पूजन करना चाहिये,सरधान जहाजमें, बैठके भवसागर तरना चाहिये॥सु०१४॥ साधु षोडष कहने लागे,देश दक्खण जाना चाहिये, अविच्छिन्न परंपर,गुरु जिनशासन का करना चाहिये ॥ सु०१५ ॥ फरस के सिधगिरि आदि तीरथ, जनम सफल करना चाहिये, तीरथ के फरसे, जिनागम सुध समकिती थाना चाहिये ॥ सु० १६ ॥ करके विचार विहार करन का, राजनगर जाना चहिये, गणी बुद्धि विजयजी तिनों का दर्शन सुध पाना चाहिये ॥ सु०१७, संवत उन्नी शत बत्तीसा, संजम सुध गाना चाहिये, लेइ दीक्षा फिरसें, गुरु गणी बुद्धि विजय धरना चाहिये ॥ सु० १८ ॥ नाम दिया गुरुवर का सुंदर, विजयानंद रटना चहिये

आतम गुरुवल्लभ, चरणमें सीस नमाना नित चाहिये, ॥ सु० १९ ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ ढाल चौथी ॥

इसमें श्रीआनंदविजयजी (आत्माराम जी) महाराजजी के साथ पंचदश १५ साधुओं ने ढूढक मत को त्याग के श्री महावीर स्वामि का शासन अगीकार किया, तिन की दोनो अवस्थायो के नामों का वर्णन, और श्रीआनद विजयजी महाराज जी ने श्री वीर भगवान के शासन की दीक्षा ग्रहण करके जहां जहा चतुर्मासादि किये तिन का सक्षेप वर्णन है ॥

(देशी–गुरु आतम गुरु आनन्दकारी)

गुरु आनंद विजय आनंद करता, जिनों के साथ दीक्षा पचदश धरता ॥ टेर ॥

विजय लक्ष्मी विसनचंद नाम जानो, कुमुद विजयजी चंपालाल बखानो, हुकमचंद रंगविजय रंगे रंगानो, सलामतराय चारित्र विजय मानो ॥ गु० १ ॥ रतन विजयजी हाकम राय सुहाया, सिरी संतोषविजय खूबचंद भाया, कन्हैयालाल कुशलविजयजी ठाया, प्रमोद विजयजी तुलशीराम पाया ॥ गु० २ ॥ विजय कल्याण कल्याणचंद धारी, हर्ष विजयजी चंद निहाल कारी, विजय जी हीर मल्ल निधान भारी, कमलविजय रामलाल निहारी । गु० ३ विजय अमृत धर्मचंद सोहे, त्रिजय चंदर प्रभु दयाल मोहे; रामजीलाल राम विजय जोहे, चरण करण से पाप करम खोहे ॥ गु०४ ॥ धरी संवेग किया चउमासा पहिला, अहमदाबाद श्रावक रंग रंगीला, मंदर जहां पांच सौ घर

सात हजारा, चतुर्मास दूसरा भावनगर मझारा ।गु०५॥ चउमासे बाद श्रावक संघ भारे चला तीरथ करण समुद्र किनारे, तीरथ सिद्ध क्षेत्र गिरनार आबु सारे, फरस मरुदेश नगर जोधपुर पधारे ॥ गु०६ ॥ करी चउमास तरफ पंजाब के धाये, सुनी श्रावक जन तन मन हुर षाये, करण चउमास लुदिहाने कदम टिकाये, विजय उद्योत नूतन शिष्य बनाये ॥ गु०७ ॥ विनय कल्याण सुमति मोती गावे, जहां दीक्षा महोच्छव सुंदर थावे, करी चउमास गुरु अंबाले जावे, विजय वीर काति शिष्य हंस बनावे ॥ गु० ८ ॥ करी विहार गुरु हुशियारपुर में, आए मुनी शिष्य शान्ति पावे उरमें, किया चउमास गुरु जंडीयाले नगरमें, आए विचरते गुजरांवाले नगरमें ॥ गु०९ ॥ नाणिक मोहन छिये

शिष पहिले चौमासे, पिछे जैन तत्व आदर्श ग्रंथ प्रकासे, चौमासे बाद दादनखां पींड भासे, होवे शिष्य एक सुंदर निज भावों से। गु० १०॥ आए गुरु शहर हुशियारपुर विचरते, चौमासे बाद लुदिहाना पावन करते, तहां जय शिष्य अमृत अमर धरते, अंबाले शहरमें जा चौमास करते। गु० ११॥ सुनी शिष्य प्रेम तरफ गुजरात जाना, करी तीरथ निज पाप करम कटाना; करी विहार विकानेर तराना, श्रावक पंजाबी सुन बहु होए हैराना। गु० १२॥ चौमासेबाद हुआ ग़ज़ब भारे, करी विहार पाली शहर पधारे, विजय लक्ष्मी तहां देवलोक सिधारे, छाया अंधेर विन इंदु जग सारे। गु० १३॥ परं गुरु ज्ञान सूरज आतम राया, देखी दिल संघ का अतिही हुलसाया; अहमदाबाद जा शिष्य हेम बनाया,

चौमास एक चालीका राजनगर विताया। गु० १४ ॥ चौमासे विच संघने अरज गुजारी, मदद देने की, है मरजी हमारी, हुकम होने से जिन प्रतिमा मिलारी, सहित सामग्री पंजाब देश पहुंचारी। गु०१५॥ गुरु वहां से विचर कर खंभात जावे, करी यात्रा थभन पारस हरषावे; अपूर्व ज्ञान साधन पुस्तक पावे, तिमिर अज्ञान भास्कर ग्रंथ बनावे। गु० १६ ॥ करी विहार तहां से सूरत जावे, करे चउमास श्रावक जन हर्षावे, चौमासे बाद तहा मुनिराज थावे, दिखा आगम कुमत हुकम का हटावे। गु०१७॥ करी यात्रा भरुच मुनिसुव्रत केरी, गये मातर नहीं कीनी जी देरी, करी यात्रा तिहां सुमति जिन केरी, किया एक शिष्य संपत भक्ति घनेरी ॥ गु० १८ ॥ आए सिद्धक्षेत्र करी चउमास की

त्यारी, करो यात्रा अंतर्गत पाप छारी; साधु
चउवीस नवा माणिक्य बलिहारी, देखे वल्लभ
गुरु आनंदकारी ॥ गु० १९ ॥ इति ४ ॥

॥ ढाल पंचमी ॥

इस में श्री चतुर्विध संघने योग्यता देख
के श्री सिद्धक्षेत्र पालीताना नगरमें शेठ नरशी
केशवजी की धर्मशाला में मुंबाई, सूरत, भरुच
बडौदा, अहमदाबाद, धुलीया, खंभात, पा-
टण, राधनपुर, काठियावाड़-भावनगर, गोघा,
कच्छमांडवी, कोडाइ, पोरबंदर, जोधपुर,
पाली, जयपुर, अजमेर, बंगाल--कलकत्ता,
पंज़ाब-अंबाला, लुदिहाना, मालेरकोटला,
जीरा, पट्टी, झंडीयाला, हुशीयारपुर, नारो-
वाला, सनखतरा, लाहौर, गुजरांवाला,

पिडदादनखा, मुलतानादि अनेक शहरों के यात्रार्थ आए हुए हजारों ही श्रावकोंके समक्ष संवत् १९४३ मगसर वदि पचमी के रोज, श्री मदानद विजय जी (आत्मारामजी) महाराज जी को सूरिपद प्रदान किया, तिसका वर्णन, और सूरिपद प्राप्ति के अनंतर तीर्थाटन करते हुए अनेक क्षेत्रो मे विचर के जहा जहां चौमासा किया, तथा पुन. करुणा दृष्टि करके पंजाब देशमे आगमन किया इत्यादि वर्णन है।

॥ धनाश्री ॥

(अब मावडी गिरि जानेदे,मेरा नेमजीसें कामदे अब०॥देशी)

अब भविक सुध गुरु धारले, जिम उतरे भव जल पार रे ॥ अब ० ॥ टेर ॥

अनि ज्ञान दरस चारित भीने, मोह सुभट को टाररे, निज राज कारण भाव चीजें, लेह

सुंदर लाररे । अ०१ ॥ तृश्ना तरुणी दुर टारा, विरति राणी नाररे; युवराज कुमर संवेग है, विवेक मंत्री धाररे ।अ०२ ।दरवार संवर हाथी आर्जव, विनय घोरा साररे; संयम सियल रथ जानीये, सम दम सुभट परिवाररे ॥ अ० ३॥ समकित महल मनो हरा, संतोष सिंहासन साररे; बैठे तहां गुरुराज आतम, मुद्रा मुनि सुख काररे।अ०४ । चामर धरम सुकल दोउ, जसकीर्ति छत्र अपाररे, तप तेज आतमराम देखी, मोह रिपु गया हाररे।अ०५।ऐसे गुरुको देख सिधागिरि, संघ कीना विचाररे,इस काल में अन्य कोइ नाहीं, ज्ञान के भंडाररे । अ०६। नय भंग गम परमाण से, नव तत्व जानन हाररे, ध्रुव नाश उत्पत्ति त्रिकसे, वस्तु वखानन हाररे। अ०७ ॥ ज्ञानादि वृद्धि कारणे, विचार नाना

प्रकाररे, उपकार इन का कैसे भूलें, जानी यह ससाररे। अ० ८। विचार करी सब संघने, ऐसे किया निरधाररे, पदवी आचार्य की दीजिए, श्रीजिनशासन आधाररे। अ०९॥

संवत् शिखि युग अंक इंदु, मृग पंचमी शुभ वाररे, आनंदविजय सूरि नाम का, बोलें सबी जयकाररे। अ० १०। पदवी सूरिकी धारके, तपगच्छका लिया भाररे, करी तीर्थ यात्रा भाव से, पीछे किया विहाररे। अ० ११ ॥ करी यात्रा मल्लिनाथ की, तीरथ भोयणी साररे; क्रमसे विचर संखेसरा, आए सहित परिवाररे। अ० १२। करी यात्रा पारसआए, सूरि राधन पुर मझाररे, वल्लभ शिष्य बना गये, पाटण देखा भंडाररे। अ० १३। फिर आए राधन पर

सूरि, शिष्य भक्ति काररे ; सुध ज्ञान श्रावक सुनते, रहे मास तहां सुभ चाररे। अ० १४। विहार करी तीरथ फिरी, राजनगर में पद धाररे; शिष्य ज्ञान लाधी मेहसाणे नगरे, आए चौमास सीकाररे। अ० १५। कलकत्ते से तहां आई चिट्ठी,प्रश्न उत्तर काररे ; हारनल साहिब नाम तिसका, दिये उत्तर साररे। अ० १६। तीरथ तारंगा अजित जिनवर, राजा कुमार पाररे ; करी यात्रा पालनपुरको, सूरि राजने दिया ताररे ॥ अ० ॥ १७॥ शुभचंद्र लब्धि मान जस,विजय राम मोती धाररे; देइ दीक्षा पाली शरह आए, देश में मारवाररे। अ० १८। नये साधुको बड़ी दीक्षा दीनी, हुआ महोच्छव साररे ; जोधपुर आ चउमास कीना, तारे बहु नर नाररे। अ० १९। आया तहां एक भेट में

ऋग वेद पुस्तक भाररे , लंडन देश विलायत मारफत साहिब हारनलरे। अ० २० । करी ख्याल देश पजाव का, सूरि किया विहाररे, चौमास कोटले किया वल्लभ, दिये श्रावक ताररे। अ० २१ ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ ढाल छठी ॥

इस छठी ढाल में श्री मद्विजयानद सूरी श्वर महाराज जीने देश **पञ्जाब** में, विचर के जहां जहां चतुर्मास किया, जहा जहां **श्री जैनमन्दिर** तैयार होने से प्रतिष्ठा करी, अर्थात् श्रीजिनप्रतिमा को गद्दी पर स्थापन करवाय के वासनिक्षेप किया तथा नवीन **श्री जिनबिम्बकी** अञ्जन शलाका करी

अर्थात् जैनमत के शास्त्रानुसार संस्कार करके नवीन जिन प्रतिमा को पूजन योग्य बनाया इत्यादि वर्णन है ॥

॥ सोरठ ॥

(देशी—कुबजा ने जादु डारा)

सूरिदर्शन मोहनहारा, निज पापकलंकनिवारा। सू०टेर॥ उठे चौमासे अमृतसरमें, सूरिरायपधारा; संबत उन्नीसौ अठताली, वैशाखछठउजारा सू० १ ॥ श्रीअरनाथको तखत बिठाये, आनंद मंगलकारा; करी चौमासा पट्टी नगर में, श्रावक संघ सुधारा ॥ सू० २ ॥ देइ दिक्षा विवेक विजय को, जीरे तरफ विहारा; अनूप चन्द भरुच से ल्याए, रतनबिंब मनोहारा॥ सू०३ । गोकल भाइ नाहना भाइ, नगर बडोदे वारा, मिलकर सघली किरिया कीनी, सूरीसर

आधारा॥सू०४॥ मगसिरसुदि एकादशीदिवसे, किया अंजन सारा; श्री चिंतामणि पास जिनद को, सूरि तखत पधारा॥ सू० ५ ॥ करी प्रतिष्ठा विहार किया सूरि, हुशियारपुर मझारा, माघ सुदि पचम की प्रतिष्ठा, वासु पूज्य चित्त धारा॥सू०६ ॥ किया चोमासा हुशियापुर में, साधु लाभ कपूरा, करी विहार झंडीयाले आप, रहे चोमासा सारा ॥ सू० ७॥ चोमासे पहिले सूरिवर को, आमन्त्रण इक भारा, चीकागो से धर्मसभा का, आया हित करतारा॥ सू० ८॥ बम्बई के सवकी समति से, करी चित्त निरधारा; वीरचन्द को भेज किया तहां, जैनधर्म वरतारा॥ सू०९॥ बाद चोमासे नये साधु को, जोग वहाया सारा, पट्टी जा नहीं दीक्षा दीनी, हुया मगल चारा

सू०१० । साल एकावन का चौमासा, जीरा नगर मझारा,निर्णय तत्व प्रासाद ग्रन्थ किया, भविजीवन हितकारा ॥ सू०११ ॥ चन्दन सीरी आदिसाधवीयां, श्राविका जन सुखकारा,बीका-नेर से आईयां चल के, सूरि दरस चित्तधारा । सू० १२ । करी विहार पट्टी को आए, श्रावक हर्ष अपारा, श्री मनमोहन पास पइठा, माघ तेरस उजवारा । सू०१३ । तिस दिनही सूरीसर कीना,अंजन जिन मनोहारा; पंचास नूतन मूरति जिनवर,देख आतम दिलठारा ।सू०१४ करी विहारसूरीसर वहांसे,शहर अंबाले पधारा,

२ ५ ८ १

संवत कर पण अंक इंदुका, किया चौमासा भारा ॥सू०१५॥श्री सुपारस नाथ पइठा, मृग पूनिम दिन सारा, करी विहार सूरिसर आए,

सनखतरे को तारा । सू० १६ । मिलकर श्रावक चिट्ठीयां पाईयां, लिखा प्रतिष्ठा विचारा । सुनकर गुर्जर देश दक्खण से, शंकर ठाकुर प्यारा ॥ सू० १७ ॥ कपडवजसे आए लेके, जिनमूरति गण भारा, छगन मणि बम्बई से आए, लेके जिनबिम्ब वारा ॥ सू० १८ ॥ शेठ मोतीशा टौंक सबधी, गोठी जस रखवारा, सिद्धक्षेत्र से जिनबिंब आए, जयपुर दिल्ली धारा ॥ सू० । १९ ॥ गोकल भाइ वडौदे से ल्याए, रतन बिंब मनोहारा, पोने दो सौ बिंब सुहकर, बिच वर तेज संधारा ॥ सू० २० ॥

३ ५ ८ १
शिखी पण निधि इदु शुभ वर्षे, वैसाखमास सुखारा; पूनिम दिन नक्षतर स्वाति, सिद्धियोग सोमवारा ॥ सू० २१ ॥ नगीन गोकल भाइ

सहायक, छाणी का वसन हारा, सकल क्रिया प्रतिष्ठा संबंधी, श्रावक जानन हारा ॥ सू०२२ आचार दिनकर ग्रन्थ है सुन्दर, विधि तिसके अनुसारा, करके नूतन विंब को अंजन, किया निज जाग उघारा । सू० २३ ॥ हेम नगर मंडन दुख खंडन, काटन कर्म कुठारा; धर्म नाथ को गादी पधारे, वरत्या जयजय कारा । सू० २४ ॥ अंजन किये जिन विंब को शंकर, नव मंदिर में पधारा, सिधिगिरि ऊपर दरस करन को, चाहत है चित्त हमारा ॥ सू०२५ ॥ इत्यादिक सुकृत किये बहु, गिनतो करत नहीं पारा; शास्त्र सिद्धान्त मथन करी बहु, पर जीवन उपगारा ॥ सू० २६ । शास्त्र विविध रचे सूरि वरने, समकितशल्यउद्धारा; जैनप्रश्न उत्तर अति सन्दर, नव तत्व ग्रन्थ सुखारा ॥

सू० २७ ॥ खडन ईसाई मतका सोहे, निर्णय स्तुति तीन चारा; वृक्ष जैनमत प्रश्न चीकागो, जैन नियम परचारा ॥ सू०२८ ॥ पूजा स्तवन आदि बहुविधि के, ग्रन्थ किये मनोहारा, जिन के तेज से दूर हुआ जग, भरम तिमिर पसारा ॥ सू० २९ ॥ श्रीमहावीर के नवगण तिन में, कोटिक गण निरधारा, तपगच्छ विरुद तहत्तर पाटे, सूरि श्री आनन्दकारा ॥ सू० ३० । देई दीक्षा बहु शिष्य बनाये, दूर किया संसारा, शिष्य के किये शिष्य वल्लभ सब, जान सूरि परिवारा ॥ सू० ३१ ॥ इति ॥६॥

ढाल सातवीं ।

इस ढालमें, श्री मद्विजयानन्द सूरि महा राजजी ने अंजनशलाका प्रतिष्ठादि कार्य्य

संपूर्ण करके सनखतरे से गुजरांवाले तरफ विहार किया, रस्ते में वडाला नामा गाम में श्री जीको व्याधि हुआ, क्रमसे गुजरांवाले पधारे और थोड़े ही दिनों बाद इस असार संसार को त्याग करके अर्थात् मनुष्य देह को छोड़के श्रीजीने स्वर्गवास अलंकृत किया, जिनकेजाने से इस कालमें इसलोकमें मानो ज्ञानभानु ही अस्त होगया, सुनकर प्रायः सब जगा हाहाकार मच गया, इत्यादि सद्गुरु वियोग-जन्य दुःखका प्रायः वर्णन है ॥

॥ पहाड़ी ॥

(देशी—हे नेमि मेरा नाथ-जैनी)

हे गुरु मुझ सार लेनी, मैनूं छड सुखराशि वसीया । हेहो स्वामी ॥ टेर ॥

सनखतरे से विहार किया सूरि, आनंद

अग न माय । गुरुजी । मैनू० १॥ गुजरांवाल तरफ सूरी चलते, गाम वडाले में जाय । गुरु जी० २। जेठ वदि चउदस की राते,सास रोग होजाय ।गु० ३। मन बल से दु:ख लव नहीं गिनीया, गुजरावाला में आय। गु० ४ । रोग सबधी न कीनी चिकित्सा, सेवक दिये भुलाय।

गु०५।संवत शिखि पण अंक मृगाके, जेठअष्टमी थाय। गु० ६। उज्जलपक्ष मगल की राते,सब से लिया खमाय ।गु० ७॥ अर्हन् अर्हन् मुखसे उचरते,सूरी स्वर्ग स जाय।गु० ८। द्रव्य भावसे होया अंधारा,मुख से कहा न जाय। गु०९॥ नगर नगरके श्रावकआए,प्रेम कछु न जाय।गु०१०॥ निरानद देह संस्कार कीनो,चदनचिखामें ठाय। गु०११॥ हाहाकार भयो जिनशासन, भरते

तरणि छिपाय। गु० १२॥ स्मरण करण को सब श्रावक मिल,सुंदर थूभ बनाय।गु० १३॥ यह जग सारा धुंद पसारा,निज आतम समझाय। गु० १४ तीर्थंकर गणधर चक्रवर्ती, वासुदेव कहाय। गु० १५॥ तिनके पर पिण येह दिन आया, अमर जग न कहाय। गु० १६॥ सरण धरम जिन विन नहीं जगमें,वल्लभ येह दिल ठाय। गु० १७॥ इति

। कलश ।

इस नगर सनखतरा जिहां धर्मनाथ स्वामी

४ ५ ९ १

सुखकरा। जुग बाण निधि शशि राध महिना पूर्णिमा दिन अति खरा। गायो विजय आनंद सूरि शिष लक्ष्मी विजयंकरा। शिष हर्ष सुगुरु ध्यान धर वल्लभ आनंद पद वरा॥ १ इति॥७॥

इति श्रीमद्विजयानंद सूरि चरित संक्षेप वर्णनम्॥

अथ गुर्वावलिस्तवनम्

(देशी–गुरु आतम गुरु आनद कारी)

श्री महावीर भवजल पारकारी,
इन्द्र[१] अग्नि[२] वायुभूति[३] व्यक्तारी[४];
सोहम[५] मंडित[६] मौर्य[७] अकंपित[८] कारी,
अचल[९] भ्राता मेतार्य[१०] प्रभास[११] कारी। श्री० १।

विना सोहम गणधर गौतमस्वामी,
हुए गणधर नव शिवमगके गामी;
मुक्ति वीर बाद केवल गौतम पामी,
गादीधर वीरके श्रीसुधर्मा[१] स्वामी। श्री० २

जगत उपगारी जंबूस्वामी[२] सोहे,

हुए अंत्य केवली मोह सुभट खोहे,
प्रभव[३] स्वामी शय्यंभव[४] कर्म से जोहे,
करी दशवैकालिक मनक प्रतिबोहे। श्री०३।
यशोभद्र[५] विजय संभूत[६] सूरि,
कारक निर्युक्ति भद्रबाहु[७] सूरि,
हुए पट सातमे स्थूलभद्र सूरि,
छहों श्रुतकेवली जिनशासन धूरि। श्री०४।
आर्य सुहस्ती[८] सुस्थित[९] सुप्रतिबुद्धा[९],
कोटि मंत्र जापसे कौटिकगच्छ सुध्धा,
इंदर दिन[१०] दिन्नसूरि[११] सिंहगिरि[१२] जुद्धा,
वज्रस्वामी[१३] पिछे दशपूरव खुध्धा। श्री०५।

नँदनवन सम वृद्धि वज्रशाखा पावे,
[१४] सूरिवज्रसेन [१५] चंद्रसूरि कहावे,
जिनोंके नामसे चंद्रगच्छ थावे,
[१६] सामंत भद्र वनवासी गच्छ धरावे। श्री०३।
[१७] टमीसर वृद्ध देव [१८] प्रद्योतन इंदा,
[१९] सूरि मानदेव [२०] मानतुंग सूरींदा,
श्री [२१] वीर सूरि [२२] जय देव [२३] देवानंदा,
[२४] विक्रम [२५] नरसिंह सूरि [२६] समुद्र चंदा। श्री०७।
सूरि [२७] मानदेव [२८] विबुध प्रभ [२९] जयानंदा,
[३०] रवि प्रभ श्री [३१] यशोदेव [३२] प्रद्युम्ननंदा;
श्री [३३] मानदेव [३४] विमलचंद जिम उडुचंदा,

[३५] उद्योतनसूरि वडगच्छ नाम धरंदा। श्री०८

रिषि सर्वदेव [३६] सूरि वड़गच्छ कहाया,

श्री [३७] देवसूरि [३८] सर्वदेव भाया;

[३९] यशोभद्र [३९] नेमिचंद सूरीसर राया,

[४०] श्रीमुनिचंद्र सब विगयत्यागकराया।श्री०९

आचार्य [४१] अजितदेव [४२] विजयसिंह राजे,

[४३] श्रीसोमप्रभ [४३] मणिरयण छाजे,

[४४] जगतचंद्र सूरि तपगच्छ बाजे,

[४५] श्रीदेवेंद्र [४६] धर्म घोष साजे। श्री० १०।

तस्सी [४७] सोम प्रभ [४८] सोमतिलक राया,

४९ ५०
श्रीदेवसुंदर सोमसुंदर पाया,
५१ ५२
मुनिसुंदर रतन शेखर सूरि भाया,
५३ ५४
सागरलक्ष्मी सुमतिसाधु सुखदाया।श्री० ११
५५
माया छड हेम विमल सूरीसर सोहे,
५६ ५७
आनद विमलसूरि विजयदान मोहे,
५८ ५९
गुरु सूरि हीर विजय विजय सेन सोहे,
६० ६१
श्री विजयदेव विजयसिंह कर्म खोहे।श्री० १२
६२ ६३
राजे गणि सत्य विजय गणि कपूर विजया,
६४ ६५
गणि क्षमा विजय गणि जिन विजया,
६६ ६७
उत्तम विजय गणि गणि पद्म विजया,
६८ ६९
गणि विजय रूपगणि कीर्त्ति विजया।श्री० १३

महा उपगारी गणि कस्तूर विजया,[७०]
मणी विजय[७१] गणि गणि बुद्धि विजया,[७२]
होए तस पाट सूरि आनंद[७३] विजया,
जग परसिद्ध आतमाराम भिधया। श्री०१४।
जिनें दुषम कालमें सुध धर्म बताया,
कुमततम ढूंढका जग आप हटाया,
बहु भविजीवको दुर्गति से बचाया,
दरस वल्लभ कर अति आनंद पाया। श्री०१५

॥ दोहरा ॥

वेद[४] बाण[५] निधि[९] चंद्रमा,[१] संवत् मेषके सूर,
गुण गाया सनखत्तरे, वल्लभ आनंद पूर।१।

॥ अथवैराग्यपदानि ॥

॥ वसंत ॥

(देशी–बंदे कुछ करले कमाई रे)

जीया कछु करले कमाई रे, ॥

जाते फिर फिर भव न फिराइ ॥ जी० ॥टेर॥

अनादि अनत निगोद में रुलीयो, वेदना बहुत सहाइ; पुण्य अंकुर प्रगट हुओ जब, व्यवहार रासि कहाइ ॥ जी० १॥ आयु विना कोटाकोटि सागर, किंचित न्यून ठहराइ; करम सातकी यही थिति तब, समकित आश फुराइं॥ जी०२ ॥ नदी घोलन प्रकारसे जैसे, पत्थर गोल बनाइ, यथा प्रवृत्ति नाम करणसे, तैसे यह थित पाई ॥ जी०३ । करण अपूरव नामके प्रगटे, गंठी भेद कराइ, अनिवृत्ति नाम

करण के होए, समकितकी ठकुराई ॥ जी०४॥ सात प्रकृति उपशम सेती, उपशम समकित आई; क्षयोपशमसे समकित दूजी, क्षयसे क्षायक थाई ॥ जी०५॥ देव गुरु धर्म सार तीनको, शुद्ध हिरदे में दिढाई, कुगुरु कुदेव कुधर्म मिथ्या मति, तिनको जड़से कटाई ॥ जी०६ ॥ एकवेर समकित जस फरसे, संसार परत गिनाई; सो निश्चय होवे भवी मुक्ति, आगमवाणी गवाई; जी०७ ॥ मनुष्य जनम श्रुति धर्म तणी तस सरधा शुभमन भाई, उद्यम संयम में यह दुर्लभ, उत्तराध्ययन पढाई ॥ जी०८ ॥ सामग्री सब मिली अब चेतन, इनको क्यों विसराई; अबके चूके फेर चौरासी, लक्ष जूनमें धाई ॥ जी०९॥ प्राप्त हुई बोधिको छडके, नूतन आस कराइ, कौन मालसे परभव मिलसे, आवश्यक पुकराई

॥जी०१०॥ इम जाणी चेतन अब धर्ममें, उद्यम कर सुखदाइ, जगजीवन को वल्लभ होके, आतमराम प्रगटाइ ॥ जी० ११ ॥ इति ॥ १ ॥

(देशी-चेलो लचो पुकारे वन में)

त्यागो त्याग विषय भवि प्रानी, एतो नरक तनी है निशानी ॥ टेर ॥

वश इन्द्रि के दुःख पावे, जिनराज वचन फर मावे, शब्द रूप रस गंध फरसा, पांचो इन्द्रि विषय वहावे ॥ त्या० ॥ १ ॥ खोलकान व्याध का गाना, सुननेको मृग मिल आवे, वश होके श्रुत इन्द्रिके, निज प्राण गमार गमावे ॥त्या०२॥ कनकाकार प्रदीप शिखाको, सोना मान पतंग भरमावे; वश होके नयन इन्द्रि के, पड दीप शिखा जल जावे ॥ त्या० ३ ॥ रहता मीन अगाध जलामें, मासपेशी रस लिपटावे, रसना

इंद्रिके वशसे, हाथ माछी मारके आवे ॥ त्या० ४ ॥ भृंग करिमद गंधका लोभी,वश नाशिकी के मरजावे, सहे दुःख नागवश नासा, दमनी बुट्टी वस थावे ॥ त्या०५ ॥ देखी कूट हथिनी सुंदर, शुद्ध बुद्ध हाथी भूल जावे, वस फरस हाथनी केरा, वध वंधन तीक्षण पावे, ॥ त्या०६॥ दृढ़धर्म नृपका वेटा, गुणधर्म नाम से कहावे, विषयन संग त्याग के क्रम से, परमानन्द पद को पावे ॥ त्या०७ ॥ तस पत्नी कनकवती नामा, विषयां संग दिल ठरावे, सहे दुःख नरक के भारी, इम शांतिचरित दरसावे ॥ त्या० ८ ॥ सुनी सज्जन विषयां त्यागे, अजरामर पदको पावे,आतम आनंद वल्लभ होके,जग में जस वाद गवावे ॥ त्या० ९ ॥ ज्ञात २ ॥

(देशी लेखो की)

सुनो सुनो भवि चित्त लाइ, नहीं करम समा कोई थाइ ॥ टेर ॥

देव दानव गणधर जिनवर, हरि हर ब्रह्मा नृप इंदर, कर्म संयोग सुख दुःख पाये, भव-सागर में फिर फिर कर ॥ सु० १ ॥ ऋषभदेव किये कर्मो से, एक वर्ष न मिला अन्न नीर, उपना ब्राह्मणी की कूखे; सहे बारा वर्ष दुःख वीर ॥ सु०२॥ चौथो चक्री सनतकुमार, सोला रोग शरीरे होवे, चक्री सुभूम डूब्यो सागर; सगर पुत्र से दु खी होवे ॥ सु०३॥ अंधो हुओ बारमो चक्री, दशकंधर लछमन मारयो, राम लछमन सतवंतीसीता, द्रौपदी पांडव बनचारयो सु० ४ ॥ छप्पन क्रोड़ यादव का स्वामी, मुआ विश्नु पिण विन पाणी, हरिचंद सुतारा राणी,

भरयो बारां वरस नीच पाणी ॥ सु० ५ ॥ नंदि षेण चारतर चूक्यो, रथनेमि आर्द्र कुमार; राजपुत्री चंदनवाला, पशुवत् विकानी बजार ॥ सु० ६ ॥ हरि रंग नंत्र में ब्रह्मा, निज पुत्री से ललचावे; हर पार्वती संग फिरावे, भग सहस्र इंदरमती भावे ॥ स० ७ ॥ शशलांछन कलंक धरावे, अग्नि सर्व भक्षी कहावे; सूरज निज देह छिलावे, लौकिक मती इम गावे ॥सू०८ इम वस कर्मों केइ प्राणी, दुख पाए नहीं जस पारा; आतम आनंद वल्लभ जानो, करलो कर्मों से किनारा ॥ सु० ९ । इति ३ ॥

(देशी—इतना संदेशा मेरा रे)

भवि जाग तूं गई रात रे, भगवन्त सूरज चडियो; कर ख्याल सदगुरु केरा, मोह जाल में क्यों पडियो ॥ टेर ॥

नगरी अज्ञान अंधेरी रे, जिसकी नहीं है आदि; मिथ्यात्व महल साहे, माह रात भारी माह। भ० १॥ परमाद जहां पलंग रे, गति चार वाही अग; पावे कषाय चारो, अति वाण काम विकारो॥ भ०२॥ तृष्ना तुलाई बिछाइ रे, महा गर्व है रजाइ, गति भंग गाल मसूरी, शय्या कुमति भारी। भ० ३। रंग राग लालटैन रे, उल्लोच मद एन, मोहनी मदिरा पान, नहीं शुद्धि सुमति सान। भ० ४। सूतो चौरासी लाखरे, फिरी जून सुपन आख, मेला कुटुंब कारी, आवे नहीं कोई लारी॥ भ०५॥ जागे भवा जिनवानी रे रामादि बहु सुभ ज्ञानी, अज्ञान नगर को ढाके, पाए नित सुख मुक्ति जाके॥ भ०६॥ उपदेश सुनी भवि प्राणी रे, अब जाग अवसर जानी,

आतम वल्लभ करना, आखिर सबको मरना।
भ०७ ॥ इति ॥ ४ ॥

(देशी—इतना संदेशा)

नगर नरभव पाय के व्यापार सुध मन कीजै; व्यापार विन नहीं जग में, कारज किसी का सीजे ॥ टेर ॥

व्यापार करने जाना रे, शिवपुरनगर सो हाना; मारग दो तस सोहे, बांका सरल मन मोहे ॥ न० १ ॥ बिखड़ो सरल मग सारो रे, सगवन कयाणा धारो; हरि वाघ एक नहीं देखो, नहीं वृक्ष पांचको पेखो ॥ न०२ ॥ अरस विरस फल वाले रे, तुच्छ दरखत छाया वाले, तस नीचे वास करना, मनहर दरखत से डरना ॥ न०३ ॥ करो शांत दावानल लागोरे, अठ शिखर पर्वत त्यागो; वंश जाल में नहीं फसना,

मन ब्राह्मण खाइ से हटना ॥ न० ४ ॥ बावीस भूत का आना रे, एक एक को मार भगाना ॥ नहीं साथ सू अंतर करना, पांच जंगली वस नहीं परना ॥न०५॥ छी पहर गमन सावधाना रे, दो पहर विश्राम करना; चारां पडाव वांके, सुधे मग मिलते जाके ॥ न०६ ॥ गमन विधि शिवपुरका रे, आतम आनंद घरका, व्यापार वल्लभ करना, सोदा अखय सुख भरना ॥ न०७ ॥ इति ॥ ५ ॥

सोहणी ॥

विषयन संग लिपटाय के, नर देह नीकी गमावेगा ॥ वि० ॥ टेर ॥

चेतन सुन्दर शोच कर, नरदेह दुर्लभ पाय के, लिये काच के चिन्तामणि, सिट पाछे तूं पछतावेगा ॥वि०१॥ ललितांग रावण ब्रह्मदत्त

सुभूम वासुदेवरे, वस इंद्रि के निमत, अति नरक के दुख पावेगा ॥ वि०२॥ मृग हाथी भ्रमर पतंगीया, मछ एक एक के वस रे; वस होय इंद्रि पांच के, खबर नहीं क्या थावेगा ॥ वि०३ ॥ परनारी को निज आंख से, देखत जो विकार से, लोह पूतली तपाय के, यमराज तस लिपटावेगा ॥ वि०४ ॥ जिस थान से पैदा भयो; चाहत तिसको गमार रे; चाहत मूढ़ वमन कर, कूकर सम कहावेगा ॥वि०५॥ धरी सील संयम होय विषयां, वस देवे छोड रे; जिन रक्षवत् सो जानिये, निज नाश सब कर देवेगा॥ वि०६ ॥ करी जतन निज सील संयम रतन की रक्षा करे, जिनपाल वत् भविजीव आतम, रूप वल्लभ पावेगा ॥वि०७॥ इति७॥

होरी ॥

होरी खेलोरे भविक मन थिर करके होरी॥टेर॥

भविकजन खेलन के अरथी, निज गुण संघ को लेकर के ॥हो० १॥ सील तनु सजी केसरी ज़ामा, सुमता सनमुख होकर के ॥ हो०२॥ भावना सुभ पिचकारी डारो, समता रस से भर २ के ॥ हो०३ ॥ ज्ञानदरस अबीर उडावो, कर्म उडावो भवि रज कर के ॥हो०४॥ मादल किरिया जिन गुण गावो, आतम निज वल्लभ करके ॥ हो०५ ॥ इति ८ ॥

प्रभाती ।

पूरव पुण्य उदय करी चेतन, नीका अव सर पाया है रे ॥ पू० ॥ टेर ॥

सूक्ष्म रूप निगोद सें निकसी, बादर रूप में आया है रे; एक बीती चउरिंदि जाति

तिर्यञ्च रूप कहाया हे रे ॥ पू०१ ॥ देश अनारज नीच कुल में, चेतन तूं उपजाया हे रे; रतन चिन्तामणि सम अति उत्तम, नरभव यूंही गमाया हे रे ॥ पू०२ ॥ क्रमसे पुन्य उदय करी चेतन, आरज देश में आया हे रे, उत्तम कुल पाया पिण उत्तम, सद्गुरु जोग न पाया, हे रे ॥ पू० ३ ॥ दर्शन मोहनी जोर हुए बहु, मिथ्या मत मन छाया हे रे; कुगुरु कुदेव कुधर्म से राची, पाछे तूं पछताया हे रे ॥पू०४॥ मात पिता सुत बांधव दारा, मिल सबने भर माया हे रे; इनमें तेरा कोइ न चेतन, सब स्वारथ की माया हे रे ॥पू०५॥ जैसे केहर भेडमें रहके, हुंडुक नाम धराया हे रे; पर पुद्गल में फसके चेतन, निजस्वरूप भूलाया हे रे । पू०६ ॥ जब केहर सच शब्द सुना तब, निज

स्वरूप में आया हे रे; तैसे जिनवानी अब सुनके, चेतन निज घर धाया हेरे ॥ पू० ७ ॥ चेतन यह नरभव अति दुर्लभ, रतन चिन्त मणि पाया हे रे, महिमा मुखसे कहिय न जावे सदगुरु यूं फरमाया हेरे ॥ पू० ८ ॥ चार गति में नरभव सम नहीं, मोक्ष साधनी काया हे रे। सुरपति पिण वांछे मनमांही, नरभव अतिसुख दाया हे रे ॥ पू० ९ ॥ धर्म अर्थ अरु कामसोक्ष में, धर्म प्रधान कहाया हे रे; धर्म विना नहीं होत कछु जग, मोक्ष परम पद दाया हे रे ॥ पू० १० ॥ तातें छोड़ विषय रस माया, जिनचरणी चित्त लाया हे रे, सुगुरु सुदेव सुधर्म पदारथ, हाथ अमोलक आया हे रे ॥ पू० ११ ॥ तत्व तीन यह सुध मन धारी, सम्यग दरस कहाया हे रे, ज्ञान चारितर मिल यह तीनों, मोक्ष मारग दर-

सायाहै रे ॥ पू०१२ ॥ समकित की करणी दुख हरणी, जिन पूजन फरमाया हे रे; पूजन द्रव्य भाव दोय विधसुं, महानिशीथे गाया है रे ॥ पू० १३ ॥ पूजनभाव मुनि मन राच्यो, द्रव्य गृही को बताया है रे; श्रीजिनपूजन का फल मुक्ति, रायपसेणी जनाया हे रे ॥ पू० १४ ॥ ज्ञानस्वरूप चरण दोय भेदें, जिन आगम में पठाया हे रे; आतम वल्लभ कारण यह पद, शहर लाहोर में गाया हे रे ॥पू०१५॥इति॥

अथ पदसमूह ॥

(चाल—महावीर चरण में जाय मेरो मन लागी रह्यो)

करले देव पिछान भूलना चैतन तूं । ऊं चली॥ शस्त्र न राखे माला न राखे, नहीं नारी सूं गान । भूल ना० ॥ क्रोध नहीं जस लोभ नहीं है, नहीं माया नहीं मान। भूल ना० ॥१॥ कूंडा

नांही सोटा नाहीं, विजया का नहीं छान । भूल ना० ॥ नाटक नाहीं हांसी नाहीं, नहीं सगीत का तान । भूल ना० ॥ २ ॥ काम नहीं अरु शाप नहीं है, नहीं अनुग्रह दान । भूल ना० ॥ आर्त रौद्र ध्यान नहीं जस, नहीं झगड़ा नहीं हान। भूल ना०॥३॥ ऋषभ नाहीं नाहीं हरिहर, नहीं ब्रह्मा वर्त्तमान । भूल ना० ॥ कैसे होवे निश्चय अब मुझ, यह साचा भगवान । भूल ना० ॥ ४ ॥ ईश्वर की तूं मूर्त्ति देखी, कर चरित पर ध्यान । भूल ना० ॥ दूषण से जो दूर हटत है, सकल गुणों की खान । भूल ना० ॥ ५ ॥ ऋषभ हो वा हरिहर ब्रह्मा, तिस को देव तू मान । भूल ना० ॥ आतम आनद लक्ष्मी प्रगटे, वल्लभ हर्ष प्रधान । भूल ना० ॥ ६ ॥ इति ॥

देशी पूर्वोक्त

ऐसे सद्गुरु सेव भूल ना चेतन तूं–अंचली

सब जीवन की रक्षा करते, बोलत है सत्य मेव–भलना० ॥ १ ॥ चोरी यारी करी है खुआरी, नव बाड़ी ब्रह्म सेव--भूल ना० ॥ २ ॥ कौड़ी पैसा हाट हवेली, त्याग दिये ततखेव, भूल ना० ॥ ३ ॥ चरण सत्तरी करण सत्तरी, पालत हैं नित्यमेव–भूल ना० ॥ ४ ॥ आप तरे औरन को तारें, पाप करें सब खेव । भूल ना० ॥ ५ ॥ सत्योपदेश करें भविजन को, बदला कछुय न लेव । भूल ना० ॥६॥ आतम राम आनंदभवन में, वल्लभ जयगुरु देव । भूल ना० ॥ ७ ॥ इति ॥



देशी पूर्वोक्त

करले धर्म सू ख्याल, भूल ना चेतन तूं । धंपंसो ।

वेदपुरान कुरान जो गावे, नहीं धर्म का सार। भूल ना० ॥ १ ॥ यागादिक धर्म धूर्तों का, महाभारत में भाल। भूल ना० ॥ २ ॥ अपना अपना सब ही बतावे, सच्चा कोई दयाल। भूल ना० ॥ ३ ॥ कोई कहे यह जग सब देखो, हेगा माया जाल। भूल ना० ॥ ४ ॥ कोई कहे ब्रह्मा ने बनाया, ईश्वर कोई गोपाल। भूल ना० ॥ ५ ॥ इत्यादिक बातों से जग का, होया हाल वेहाल। भूल ना० ॥ ६ ॥ अष्टादश दूषण नहीं जिन में, तिन के वचन रसाल। भूल ना० ॥ ७ ॥ जैसे कष छेदन तापन से, सोना साचा लाल। भूल ना० ॥ ८ ॥ तैसे तीन परीक्षा करके, सूधा धर्म विचार। भूल ना० ॥ ९ ॥ कष सो

विधि प्रतिषेध दोउ है, मेल आगम के नाल। भूल ना० ॥ १० ॥ छेद परस्पर बाधा के विन, तिन को सम्यक् पाल। भूल ना० ॥ ११ ॥ परिणामी भावों का होना, यह तो ताप विसाल। भूल ना० ॥ १२ ॥ ऐसे माने जो भवि प्राणी, आतम वल्लभ तार। भूल ना० ॥ १३ ॥

सोहणी ॥

करता नहीं जिन का भजन, भव पार कैसे पावेगा। करता० ॥अंचली॥ देविंद वा नर इंद हो, मुनि इंद वा असुरिंद हो, भजन विना जिनदेव के नहीं मुक्ति के सुख पावेगा। करता० ॥ १ ॥ लंकापति रावन वली, निज हाथ में बीना धरी, शुभ नाच जिन आगे करी, पदवी जिनेसर पावेगा। करता० ॥ २ ॥ सुदर्शन पकरी करी, राणी अभया छलकरी,

निज शील भूषण जाप से, उपसर्ग को कट देवेगा। करता० ॥३॥ महावीर स्वामी सेवना, श्रेणिक राजा कर लई; तस जाप से जिनवर बना, सुरइंद मिल गुण गावेगा। करता० ॥४॥ बुढिया तरी निज भाव से, महावीर स्वामी ध्यान से,ऐसे निरंतर ध्यान धर, आतम वल्लभ थावेगा। करता० ॥५॥ इति

सोइणी ॥

करता नहीं कछु सोच अब, मानुष हुआ तो क्या हुआ॥ करता० ॥अंचली॥ मोती व पन्ना हीरला, पुखराज नीलम चूनिया, अपना हीरा देखा नहीं,जोहरी हुआ तो क्या हुआ। करता ॥१॥ सोना सुहागा आग से, देख खोट सगरी जारता,अपना सुवर्ण सोधा नहीं, सराफ हुआ तो क्या हुआ। करता० ॥२॥ चादी व सोन

बेचता, हुंडी बजाजी देखता, परलोक का देखा नहीं, व्याहरी हुआ तो क्या हुआ ॥करता० ॥३॥ मुद्दई मुद्दाला देखता, कानून किताबें खोलता; अपना गुनाह देखा नहीं, मुन्सिफ हुआ तो क्या हुआ । करता० ॥४॥ मातापिता सुत बहिन भाई, और तिरिया जमाईरे, निज रूप आतम के विना, वल्लभ हुआ तो क्या हुआ। करता०॥५॥ इति ॥

सोरठा ।

वीर जिन सेवा भवपार करी। अंचली कर्म भर्म लग जाल फस्यो तूं, सेवा न जिन की करी। वी० ॥ १ ॥ नरक निगोद में दुःख सह्यो बहु, विषयन संग परी॥ वी० ॥ २ ॥ बार २ अवसर नहीं पाना, चेतन आव घरी। वी० ॥३॥ सेवा जिन विन और नहीं जग

फांसी कर्म जरी।वी०॥ ४ ॥सेवा आतम राम प्रगट को, वल्लभ जान परी वी० ॥५॥ इति ॥

सोरठो ॥

भवि त्याग मन धर ख्याल तु जूआ अति दुखदाइरे।भवि०अचलि।कुव्यसन जगमेंसात हैं,जुआ व्यसन विख्यात हैं । क्रम से जूआरी जात है, व्यसन सव ललचाईरे । भवि० १ ॥ मानव गुणों की खान है, पिण शोभा का नहीं थान है। जूआ व्यसन परमान है, अहिवत् चंदन लपटाइरे॥ भवि० २ ॥ जूआरीया का ठाम है, मठ गृह शून्य आराम रे । अति नीच गणिका धाम है,वदमाश साथ फिराइरे।भवि० ३॥ अति आपदा का ओक है, खेले कुवुद्धि लोक हैं । मैला करे कुल शोक है, अधम २ कहाइरे । भवि०४ ॥ अपकीर्ति होवे पोपरे,

इस लोक में ए दोषरे । परलोक दुःख का कोष रे, दुर्गति नरक में जाइरे ॥ भवि० ५॥ मन पांच पांडव धाररे, दी नार अपनी हाररे । हुए जग अति लाचार रे, अपकीर्ति अति जग थाइरे । भवि० ६ ॥ नलराय ने कहा कीधरे, दिया हार राज प्रसीध रे । अपजस अति जग लीधरे, जूआ व्यसन वस भाइरे । भवि० ॥७॥ ऐसे न होए निहाल रे, क्या होवेगा तुझ हाल रे । तज संग जूआ लाल रे, आतम वल्लभ थाइरे । भवि० ॥ ८ ॥ इति ॥

(लावणी चाल—अपने पदको तज कर)

सात व्यसन व्यसन दूसरा, भक्षण मांस तणा करता, ये दुःखदाई है, सुघड नर समझ त्याग

इसका करता ॥ १ ॥ बिन जीव के मारे प्राणी, मांस कबी भी नहीं बनता। हिंसा जीवों की, करने से जीव नरक में जा गिरता॥ सात० ॥ २ ॥ समय मात्र तृप्ति के कारण, परके प्राण हरण करता, राक्षस सम तिसके, हिये में रहें निरंतर निर्दयता॥ सात०॥ ३ ॥ पर के मांस से अपने मांसको, नीच पुरुष पालन पोषण करता, निर्दय उस सम नहीं, लोक में निरघिन वो कहलाता॥सात०॥४॥ मांसके खाने वाले की जो, स्थूल पशु नजरे आता। तिसके खाने को, ढैण सम दुर्बुद्धि मन में चाता। सात०॥५॥ जैन शास्त्र में कहा अभक्ष ये, अन्य शास्त्र भी फरमाता। सकल धरम में अहिंसा, परम धरम को जग गाता ॥ ६ ॥ अपनी दया के खातर प्राणी, पर की दया में चित धरता। आतम आनन्दी,

करे वल्लभ जो मांस को परिहरता ॥७॥ इति

(चाल—तायाजी हम पांचो भाई)

दिल अपने में सोच समझ भवि, मदिरा पान निवारजी । अंचली । नहीं बूझता कृत्या-कृत्य को, मदिरा पीने हारजी ॥ दिल० ॥१॥ जिम सूअर गंदगी में रुलता, फिरता गली मझार जी ॥दिल०॥२॥ भूत पराभव के सम नाचे, राचे करे पुकारजी ॥ दिल० ॥ ३ ॥ पुत्री को वधु के सम देखे, स्त्री सम मात निहार जी ॥ दिल० ॥ ४ ॥ मदिरा पानी की नहीं सुनता, बात कोई संसार जी ॥ दिल० ॥ ५ ॥ नहीं करता धर्मकृत्य को, कैसे पावे पार जी ॥दिल०॥६॥ इम जानी मदिरा भवि त्यागो, आतम वल्लभ धारजी ॥दिल॥७॥इति॥

(चाल—काहे में क्या तुझ बिन बाग बहार)

भविकजन वेश्या संग निवार ॥भ०अंचली
वेश्या जगत की झूठ कहावे, दोष सकल आ-
धार ॥भ०॥१॥ मनमें अन्य वदे मुख अन्य ही,
चेष्टा अन्य प्रकार ।भ०॥२॥ संग करे क्या क्षत्री
ब्राह्मण, भंगी चूड़ा चमार॥भ०॥३॥ भेद नहीं
कोढी रोगी का, पैसे की है यार ।भ०॥४॥ निज
धन सब रंडी को देके, होवे आप खुवार।भ०।५
निट विट चोर थुकन का प्याला, नीच करे
तस प्यार । भ० ॥ ६ ॥ वेश्याधनी जब निर्धन
होवे, ततखिन देवे छार । भ० ॥ ७ ॥ निर्लज्ज
वेश्या के वस होके, निज गुण देवे जार । भ०
॥८॥ इस जग में जावे वो ज्यां त्यां, पावे अति
फिटकार । भ० ॥ ९ ॥ पर भव नरकों के दुःख
सहता, रोवे ज़ारोज़ार । भ० ॥ १० ॥ ब्रह्मचर्य

आतम गुल वल्लभ, है जग तारनहार । भ०
॥११॥इति०॥

रेखता ।

त्यागो भवि जीव का हनना, मिटे नरकोंमें जा गिरना । त्यागो० ॥ १ ॥ व्यसन शिकार का रमना, मूल सब पाप का करना ॥ त्यागो० ॥ २ ॥ खुशी क्षण मात्र से होवे, प्राण पशु जीव के खोवे । त्यागो० ॥ ३ ॥ सुई कांटे से निज तन में, होवे दुःख तैसे परतनमें । त्यागो० ॥ ॥ ४ ॥ हने कौन जाने के प्रानी, विना अति नीच अज्ञानी । त्यागो० ॥ ५ ॥ देवेंगे राज तोहे भारी, परं देवेंगे तोहे मारी । त्यागो० ॥ ६ ॥ नहीं वोह राज को चाता, नकेवल जीवना चाता । त्यागो० ॥ ७ ॥ शत्रु

जब घांस मुख लेवे, दया करी जान तस देवे॥ त्यागो० ॥ ८ ॥ निरंतर घास को चरता, नहीं अपराध कुछ करता । त्यागो०॥९॥ ऐसे निर्नाथ को हंता, जाइ नरक में परता । त्यागो० ॥१०॥ यदा खोटाई त्यागेगा, आतम वल्लभ थावेगा॥ त्यागो० ॥ ११ ॥ इति ॥

(चाल—जय २ शांतिनाथ स्वामी—लावणी)

त्याग नर चोरी दुःखदाइ, जिसे सदगति संभव थाई ॥ अंचली ॥

दोहा—चोरी करने हारका, करे न कोइ विश्वास ।
दिल अपने में चोरके, नित चिंताका वास॥
नहीं परतीत जरा भाइ ॥ त्याग० ॥१॥

दोहा

चोरी करने का व्यसन, जिस नरको लग जाय।
झूठ खून बदमाशी से, खौफ जरा न दिखाय ॥

कुसंगित में नित लिपटाइ । त्याग० ॥२॥

दो०–इंद्रि पांचों आउखा, मन बल बच काय।
दशमाश्वासो श्वास है, ये दश प्राण कहाय॥
एकादशमा धन कहलाइ । त्याग० ॥३॥

दोहा–एकदशमा प्राण धन; सब प्राणों में प्रधान
सागारी जसनास से, जीता मुये समान॥
नहीं आदरता को पाइ ॥ त्याग० ॥ ४ ॥

दो०–निज पैसे के नास से, जैसे दुःख तन मान।
तैसे परको होतहै, दिल अपने में जान॥
सुघड नर करले चतुराइ ॥ त्याग० ॥५॥

दोहा–चोरी से इसलोक में, होवे राजा का दंड।
बदनामी अति पायके, परभव नरक प्रचंड॥
किये कर्मों का फल पाई ॥ त्याग० ॥६॥

दो०–चोरी गुणकी चोरिका, त्यागे जो नर नार।
जनम सफल तस जानिये, बारबार बलिहार।

सुरासुर नरपति जस गाइ ॥ त्याग० ॥७॥

दोहा—वंकचूल स्वामी प्रभु, हुंडक दृढ परिहार।
पुत्र चिलाति आदि बहु, चोरी करनी छार॥
आतम आनंद वल्लभ पाइ ॥ त्याग० ॥८॥

लावणी।

संग नर परनारी हरना, मिटे करम का बंध भवांतर नरक कुंड जरना। संग। अचली॥ संग परनारी का खोटा, रहे निरतर खौफ जगत में अपजस होय मोटा। सदा चिंतातुर चित्त थावे, नहीं रति सम सुख दुःख मेरु सम नर पावे, अनादर पावे जहां जावे॥

दोहा—परनारीके यारको, जरा न होवे चैन।
खानापीना छोड़के, फिरे पूठि दिन रैन॥

कलंकित निज कुल को करना। सं०॥१॥
त्याग कर मूलपति अपना, धनके कारण रात

दिवस अन्य अन्य पुरुष रटना, तुच्छ आशा निज दिल धारी, हलदो रंग सम रागवती कुटिला अति परनारी ॥ निरंतर दिलसे रहे कारी ॥

दो०—परनारी विष वेलहै, नहीं जिसका विश्वास
चाहत मूरख अज्ञनर, तिसमें सुखकीआस॥
नहीं जग अपजस से डरना । सं० ॥२॥

चिंतता दिलमें सदा जिसको, सो पर से नित रक्त जपे दिन रात सदा तिसको, सो भी नर परसे ललचावे, धर्म कर्म को छोड़ मनुष्य देह विरथा खोजावे । पाप से नरक गति पावे ॥

दोहा ॥

लाल सूरख तिहां लोहकी, पूतली नारि आकार।
लिपटावे जम साथ तस, रोवे ज़ारो ज़ार ॥
नहीं वहां सुत बांधव सरना । सं० ॥ ३ ॥

सती एक सीता जग मोटी, प्रात समय उठ

नामजपे नित नरगणकी कोटी, सतीको हरकर लेजावे, कियो न खंडन शील तोभी रावण अति दुखपावे। नाशकुल अपजस जग गावे।
दोहा—परनारी के हरन से, रावण का ये हाल।
क्या जाने वदकाससे, होवेगा कर ख्याल॥
त्याग परनारी मिटे मरना। सं० ॥ ४॥
नही वस होवे स्त्री धनसे, मधुर वचनसे नहीं नहीं आदर प्रणाम तन से। भयानक जम जुबान भासे, भवसागर के बीच गिरी सम दुख दाइ काले। ऋद्धि सिद्धि सबही नासे॥

दोहा—सती पराये पुरुष का, सागारी परनार
त्याग करे शुभ भाव से, धन मानव अवतार
आतम वल्लभ आनद भरना॥ स० ॥५॥
लावणी—(बारामासा)
चतुरनर करलें धरमप्यारा। रतन चितामणि

समा अमुल्य यह देह मनुष्य धारा । अंचली

चैत चेतन करले ख्याला । छोड सकल जंजाल ज्ञान अमृतरस पी प्याला । ज्ञानभव २ में सुखदाइ । प्रथम ज्ञान अरु बाद कहे किरिया शुभ जिनराइ । किया विन ज्ञानके दुखदाइ ॥

दोहा—ज्ञान क्रिया रस्ता कहा, मुक्ति पुरीका सार
इक लूला इक आंधला, पावे नहीं भवपार ॥
क्रिया और ज्ञान दो सुख कारा । रतन०॥१॥

बाध महीना मनमें भाया । दोष अठारां रहित प्रभु पद अविनाशी पाया । आज मम भाग बड़े आये । पांच महाव्रत धारी गुरु भवसागर सुखदाये, धर्म भोजन जग वर्त्ताये ॥

दो०-जो भोजन करे धर्मका, मन वच काय पवित्त
सोसाधेथिरआपना, डिगमिग डिगमिग चित्त
पाप बंधन से होवे न्यारा । रतन०॥ २ ॥

जेठ में जोग पले सारा। मदन कदन को टार लगाले दृढ आसन धारा॥ वाहिर से सूरजकी गरमी, अंदर तप जप आग जरा दे पाप पुज धरमी होये शुद्ध निःकेवल करमी॥

दोहा–जोग समाधी धारके, भोग रोग को छार।
आतम रसमें लीन हो, करम भरम सब जार॥
चिदानद सुख पावे भारा। रतन ॥ ३ ॥

आषाढ महीना शुचि मन करले, दया दान तप क्षमा शील गुण को दिल में धरले। शील गुण सब गुणमें भारी। नहीं शील सम औरकोइ जगमें अति हितकारी। उपमा हस्तशिखि धारी

दोहा–शील प्रभावे जगत मे, पूजावे नरनार।
भय नासे हरिचोरका, सुरपति क जयकार।
शील से नारद भव पारा॥रतन०॥ ४॥

सावन सती सीता दमयंती। मृगावती सिरिदेवी अंजना सुलसा गुणवंती। चंदनबाला नंदा मोहे। राजमती अतिसती मदनरेखा रेवती सोहे, ब्राह्मी सुंदरी सोदर बोहे।
दोहा—कौशिल्या पद्मावती, सती विशल्यासार।
द्रौपदीअरुअपराजिता,सतीसुभद्रा धार॥
धार दिल शील मदन जारा। रतन०॥५॥

भादों भरम मन नहीं करना। किये करम फल पाय शुभाशुभ नर अपना अपना, जान नर छोड जुआ बूरा,गमन पराइ नार पान मदिरा का कर दूरा। पाप का घर गणिका पूरा।
दो०—चोरीखानामांसका,निर्दय का यह काम।
निरापराधी जीवको,मारे कहां आराम।
नरक में जाय सहे मारा। रतन०॥६॥

असरसु आसा अति दुख दाइ । बड़े बड़े गये छोड़ नहीं एक तृष्णा साथ जाइ । पाप और पुण्य साथ जावे । नही मात नहीं तात नार सुत बांधव संग आवे । एक आप दुःख सुख पावे॥
दो॰ धनसंचय क्रियापापसे, भोगत स्वजनसमाज
पापभागी खुद एकला, नहीं किसीको तस लाज
नहीं कोइ आखिर सुत दारा,। रतन॰ ॥७॥

कत्तक कर ख्याल जरा दिल में, कब आवेगा काल खबर नहीं घड़ी एक पलमें । विषय सुख क्यों राचे प्राणी । अंत विरस किंपाक वृक्ष फल सम अति दुखदानी । बुद्धि बल रूप तेज हानी ।
दो॰–तनधनयोवनआयुखा, जैसा कपटी ध्यान
चंचल पीपल पान जिम, जिम चंचल जगकान

अथिर जिम बिजली का चमकारा । रतन०८॥

मगगार मुनिवर का जग सरना । सहे निरंतर कष्ट धरे दिल जिनवर के चरना । देख संसार दुःख भारी । नहीं सुपनमें सुख घरो घर होरही लाचारी । रोवे कहीं जगमें नरनारी।
दोहा—कहींगाते कहीं नाचते,करते कहीं पुकार ।
नाना सांग के भेद से, नाटक मोह प्रचार ।
त्यागजग मुनि निज हित धारा । रतन०॥९॥

पोह्ह पोषे निस दिन पर को,क्रोध मान अरु लोभ माया जो जारे निज घरको । क्रोध से तप जप होय नासा । नहीं मान से सुख लोभ से नरकों में वासा,दगाबाजी से दुखखासा॥
दो०मीनशलभमृग भृंगकरी,इक इंद्रीवसनास
पोषे इन्द्री पांचको, क्या जाने क्या आस ॥

सुखपर पुष्टी से टारा । रतन० ॥ १०॥

माघ मद माता फिरे मदना, ऋतु बसंत के जोर, शोर कूजे कोयल कदना । ओढलो शील कवच भारी । क्षमा खडग संतोष ढाल तप जप करलो वारी । नहीं आवे अनंग लारी॥
दो०—चरण करण ऋजु नम्रता, ब्रह्मचर्य गुणरग ।
ज्ञानध्यान हथियार से, करो मोह से जंग ।
जावे तब भाग मोह हारा । रतन० ॥ ११ ॥

फागन फूली आतम वारी । गए मोह महाचोर छोर आतम गुण गण क्यारी । राग अरु द्वेष मिटे सारा ॥ नसें महा अज्ञान अनत केवल उजवारा । करम घाती क्षय होय चारा ।
दो०—जीवन मुक्त कहायके, जगमें धर्म फैलाय ।
अष्ट करम, को चूरके, निज आतम पद पाय ।
रूप सतचिदानद भारा । रतन० ॥ १२ ॥

अधिक आतम हित जो चाहे। छोड़ प्रपंच पराये निज आतम गुण गण को साहे। बाह्य वस्तु सब दुखदाई, रति समा निज धर्म भवोभव में अति सुखदाई। अंत परमातम पद पाई।

६ ५ ९ १
दो०–रस इंद्री निधि इंदु सन, मृगकृष्णा बुधवार
तिथि दशमी पूरन किया, नाभा नगर मझार।
पढ़े वल्लभ आनंद भारा॥ रतन०॥१३॥इति॥

॥ बारह मासा दूसरा ॥

(चाल—पायेजी कलयुग में श्रीगुरुआत्माराम)

हेजी चारों गतिमें मनुष गति परधान, क्षय करि कर्मनको पावे भवि निर्वान, चारों०अंचली॥ चेत चेतन ज्ञान अरूपा, तूं तो आपही आतम भूपा, ज्ञान दरस चारित रस कूपा, ते होजाय अनुपा। चारो० ॥१॥ बैसाख विसार न देवा,

कर द्रव्य भाव से सेवा, सेवा प्रभु अमृत मेवा, मुगति गढ़ लेवा । चारो० ॥ २ ॥ जेठ जाग जाग क्यों सोया, गफ़लत में काल तैं खोया। कारज नहीं कुछ तुझ होया, ते आखिर रोया, चारो० ॥ ३ ॥ हाड़ हार जावेगा भाई, सब रिश्ते हैं दु खदाई, नहीं मात तात सुत भाई, ते साथे जाई ॥ चारो० ॥४॥ सावन सोच समझ कर देखो, करो पुण्य पाप को लेखो, निज अंतर घट में पेखो, रेख पर मेखो । चारो ॥ ५ ॥ भादो भूल भरममें खूता, मेरी नार मेरा यह पूता, करि मोह नरक जा सूता, ते सहना जूता, चारो० ॥ ६ ॥ अस्सु आ गुरुचरणी लग जा, खोटे कर्मों से भगजा, लग देव गुरु धर्म मगज़ा, ते मोख सुख लग जा ॥ चारो० ॥ ७॥ कत्ते करनी करम स लड़ाई, कर मोह के साथ चढ़ाई, रख

शील खडग तकड़ाई, ते पावे बड़ाई ॥ चारो० ॥ ८ ॥ मगर मार पछार तू मारा, जिन बस किया है सारा, सुर सुरपति नरपति हारा, ते सब जग जारा॥ चारों ॥ ९ ॥ पोष पोष न इंद्री प्यारा, मन बस कर बल होय भारा, महा मोह मदन जाय हारा, ते होवे निस्तारा॥ चारो० ॥ १० ॥ माघ मन बच काया साधो, ज्ञान दरस चारित आराधो, शुभ ध्यान से केवल साधो, ते शिव सुख लाधो । चारो० ॥ ११ ॥ फागन फेर न जगमें जाना, सिद्ध बुद्ध अटल जग गाना; अव्याबाध सुख का पाना, ते अचर कहाना ॥ चारो० ॥ १२ ॥ उन्नीसौ अठवंजा माघ थावे, सुदि दूज बुधिआना भावे, धरी हर्ष वल्लभ मन गावे, ते आनंद पावे । चारो० ॥ १३ ॥ इति ॥

(रेखता)

धर्म श्री जैन की जय २ बुला ले जिस का जी चाहे, अचली। रतन हैं तीन अमोलक यह, नहीं होता है जिनका मोल, पसंद दिल ज्होरां के पासों, तुला ले जिसका जी चाहे। ध० ॥१॥ अव्वल श्री देव जिनवर हैं, नहीं जिन में निकलती फी, अठारा दोष से खाली, मिलाले जिस का जी चाहे। ध० ॥ २ ॥ दोयम गुरु पाप के त्यागी, हुये तारकुल दुनियां से, ऋषि तपसी मुनि साधु, कहला ले जिसका जी चाहे ॥ ध० ॥३॥ सोयम श्री धर्म ऐसा है, नहीं गिरने दे दुर्गति में, दया करनी किसी पासो; मना ले जिसका जी चाहे। ध० ॥ ४ ॥ चरण दर्शन सम्यग् ज्ञान, जगत में सार तीनो हैं, धर्म शास्त्रों का फरमाना, खुलाले जिसका जी

चाहे । ध० ॥ ५ ॥ जहौर इन तीन रत्नों का, नहीं जिस बंदे ने समझा । हठी कमबख्त अज्ञानी, भुला ले जिस का जी चाहे । ध० ६ ॥ अगर अपना भला चाहो; करो सतसंग दिलोजानी । आतम वल्लभ प्रभु प्यारे, दिखा ले जिसका जी चाहे ॥ ध० ॥ ७ ॥इति॥

अथ श्रावककरणीयसंक्षेपवर्णनम्

(देशी—भइया मन जप लो पारसनाथा)

कर श्रावक करणी प्यारा, जिसे होवे भव निस्तारा ॥ क० ॥ टेर ॥

जो श्रावक सो ऊठे प्रभाति, चार घड़ी ले पिछली राति; सात आठ सीमरे नवकार जे थकी होवे भवोदधि पार ॥ प्रभुजी ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पदम प्रभु कहिये, श्री सुपास चंदा प्रभु सुविधि, शीतल

श्रेयांस लहिये; वासुपूज्य विमल अनता धर्म शांति जिन सोहे, कुंथु अर मल्लि मुनि सुव्रत नमि नेमि मन मोहे,करो पारस वीर विचारा॥ कि० १॥ चउवीस जिनका नाम उचारी, मात पिता गणधर हितकारी, सता सती मुनि ब्रह्मचारी, देव देवी शासन रखवारी ॥ प्र० । कवण देव गुरु धर्म हमारा कर्म कवण कुल हमारा,है व्यवसाय कवण हम कुलका करीये चित्त विचारा, सामायिक सुध मन से करीये धर्मतणी वुद्ध धरीये, छीआवश्यक सुद्ध करीने पडिक्कमणा सुध करीये,होवें राइ पाप विछोरा॥ क०२ ॥ काया सगति करे पचखान, सूधी पले जिनवर आन, पढ़िये गुनिये तवन सिझाय, जिसे भवजल सिन्धु तराय ॥ प्र० ॥ चउदह नियम निश दिन धारे जीवे तव तक पारे

सचित्त[१] द्रव्य[२] विगइ[३] उपानह[४] तंबोल[५] वस्त्र[६] चतारे;
वाहन[७] फूल[८] सयन[९] विलेपन[१०] ब्रह्म[११] दिशि[१२] पिण धारे,
स्नान[१३] भगतका[१४] करे निवेड़ा छार पाप सिर डारे
जानी शास्त्र थकी विस्तारा ॥ क० ३ ॥ वंदे देवको जाके मंदिर,द्रव्य भावसें पूजे जिनें दर; पूजा में सत शुद्धि कहीये,वेखा तिनका शुद्ध मन गहीये ॥ प्र० ॥ मन वच काया शुद्ध करीने ध्यान प्रभुका धरीये, स्त्रीका वस्त्र पुरुष नवि पहिरे नरका स्त्री परिहरीये; भुमिशुद्धि पंचमी कहीये शल्यरहित शुचि लहीये, घरमें जातां वामे पासे उच्चपणा सद्दहीये, तातें देढ़हाथ घरदेहरा ॥ क०४॥ पूजा करतां पूरव सनमुख, पूजा करने वाले का मुख; होवे अथवा उत्तर सनमुख, और दिशि नवि करिये निज मुख ॥

प्र०॥ घर मंदिर का यह विधि जानों छठी शुद्धि मानों, पूजो पगरण शोधो सर्वे, थीरता सतमी आनो; महा निशीथे अष्ट प्रकारी पूजा सतरां भेदे, रायपसेणी सूत्रे आखी कुगुरु देखी खेदे, करो पूजा सूत्रे आधारा ॥ क०५ ॥ पूजा इक वीसभेद सनातर, जंबूदीपपन्नति सूतर; पूजा पडल आदि ग्रंथ अनूपम, जिनके वयण १ धारस तप सम ॥ प्र० ॥ आवश्यक व्यवहार कलपमें समवायागे भाखी, पहिले दूजे अंगे देखो जीवाभिगमे दाखी, उवासगदस अंग उवाई वीर जिनेसर आखी, ज्ञाता भगवई इत्यादि बहु जैन सूत्र हे शाखी, जामें जिन प्रतिमा अधिकारा ॥ क०६ ॥ सेवा गुरुजन जिन वच सुनना, ग्रहण करी तस धारण करना; ऊहा पोह विचारसें माना, जान अर्थ करतत्व

का ज्ञाना ॥ प्र० ॥ बुद्धि आठ गुणों करी संयुत पोसहसाले जावे, साधु गण को वंदन करतां पांचों अंग नमावें; गुरुके सामे बैठे विधि सुं लंबे पैर न करीये, पैरके ऊपर पैर चढावे तो आशातना कहीये, त्यागो पैर बंधन निरधारा ॥ क० ७ ॥ बैठे गुरुके पीछे नाही, आगे बैठन की है मनाही; पासे भर पिण बैठे नाहीं, विना गुरु बोलावे नाहीं। प्र०। गुरुके सनमख दृष्टि रखके मन एकाग्र करीये, भाव भेद विचक्षण होके धर्मशास्त्र को सुनिये; संशय सगरे निज मनके रे पूछे गुरु शुद्ध भावे, उत्तर तिनका धार हियेमें जो गुरु गुण को गावे, ताको देवे दान ही सारा। क० ८। भोजन वेला घरको जावे, बंधु जनको साथ बिठावे, दूषण रहित सुपात रे पावे, छोड अभक्ष्य भक्ष्य को खावे। प्र० ॥

मदिरा मांसने मक्खन माख्यो पांच उदुंबर त्यागो, अनंतकाय कहे जिनवरने तिनमें न करो रागो, तीर्थंकरअदत्त ही कहीये धरमसंग्रह बोला, अचित्त पिण साधु नवि लेवे भाषे सदेहदोला, परत्वरति दूषण भारा ॥ क०९ ॥ अज्ञात फल अरु रात्रि भोजन, तिनका कबहु न करीये सेवन, रात्रि भोजन दोष अपारा, केवली केहतां पामे न पारा । प्र० । उत्तम जाति पिण पशु पंखी रात्रि भोजन टाले, मानुष्य होके रयणी भोजन करतां पुन्य किम पाले, मक्खी कीडी जू अरु मकडीजो भोजनमें आवे, वमन विकलता और जलोदर कोढ रोग हो जावे; ताते भोजन रयणी निवारा ॥ क०१॥ वासी विदल बीज बहु फल, बैंगण मिट्टी ओले तुच्छफल, विष आचार

*मधु = सहेत

बरफ बावीसा, कहे अभक्ष्य जगत जगदीसा। प्र०
इन को त्यागन करके भोजन करना पूरव रीता,
भेद विचार लहो अब तिनका, जो आगम में
कीता; विन धोये पैरोंसे क्रोधी दक्षिण सनमख
खावे, मुखसे वयण कटु अति बोले लज्जा मन
नहीं आवे, सोतो भोजन राक्षस धारा ॥क०११॥
अंग:शुचि शुभ थान पवितर, निश्चल आसन
बैठ सुहंकर; देवगुरुका सिमरण कर कर, मानुष
भोजन मान तुं सुंदर। प्र०। देवादि का पूजन
करके मात पिता को वंदे, भावों सेती दान
सुपात्रे देके पाप निकंदे; ऐसे क्रमसे भोजन
करना भोजन देव सो कहीये, भोजन दातन
मैथुन वमने मौनपणेसे रहीये, *विटमूत्र में भी
यही चारा ॥ क०१२ ॥ निज निज शुद्ध करे

*दिशाफिरते हुए और पिशाब करतेहुएभी मौन करना चाहिये

व्यवसाय, *पोषे बंधु मित समुदाय,तीन प्रकार आजीविका जानो,व्यापार खेती सेवा वखानो। प्र० ॥ उत्तम पहिली दूजी मध्यम जघन्य तीजी भाई, श्रावक होके भिक्षा मागे अधमा अधम कहाइ, जो व्यापार करे सो ऊचा नीचा कवहु न करना, पुण्यके होए लक्ष्मी होवे पाप हाथ नहीं धरना, ताते आरंभ वहुला विडारा॥ क० १२ ॥ जिस व्यापार को निंदे लुकाइ, इह परलोक विरुद्ध जो थाइ, चमार लोहार तेली नाले,और मदिरा करने वाले।प्र०। लाभ अति होवे व्यापारे तो भी इनको त्यागो, सज्जी सावन लोहा महुवा नील धावीसे भागो, कूड़ा तोला कूडा मापा कूड़ा लेख न करिये, खोटे जन सु वयण न भाषे झूठ गवाही न भरिये,

*व्यापार =

ताकी पूछ नहीं सरकारा॥क० १४ ॥ जिन के करने से पाप आवे, पन्नर कर्मादान कहावे; तिनका शुद्ध मन त्याग करावे,माल चोरी का हाथ न लावे । प्र० । पानी छाने दोदो वेरी चौमासे त्रय वेरी, खोपा मेवा खांड खजूरां शाक थकी मन फेरी; पाथी इंधण चूल्हा देखे शोधे अन्न को नारी, अनछाने धोवे नवि चीवर द्वादश व्रतके धारी,टाले भाव थकी अतिचारा ।क०१५॥ घरअनुसारे दान करीजे, दीन दुःखी अनुकंपा धरीजे; दान अभय में चित्त गडीजे, मोक्ष बधूको वेग वरीजे । प्र० । साहमी वच्छल बहुला कीजे निज सगति अनुसारे,समकित शुद्धि उत्तराध्ययने समकित अष्टाचारे; समकित शुद्ध हिये में राखे धरम देव गुरु धारे, वोले बोल विचार करीने पाप

अठारह वारे, चित धारे पर उपगारा,क०१६॥ दंड अनर्थ सदा परिहरिये,सात जगा चन्द्रोया धरीये, तेल तक्र घृत दूध को ढकीये, पानी दहिँ खूलां नवि रखीये । प्र० । षट तीथि आरंभ न करीये ब्रह्मचर्य्य को धरीये, दिवस चरिम पचखान करी मनदभ सदा परिहरिये; षट आवश्यक संध्या केरे करिये पापको हरिये,सागारि अनशन कर मन में नींद अति परिहरीये, सोवे सरण चित्त धरी चारा।क०१७॥ पांचपरव कल्याणक दिवसे, निज सगति तप उद्यम करसे,ज्ञान दरस चारित्तको धरसें,शिवकमला तत्ववेगही वरसे ।प्र०।दुविध धरम दूजेआराधो ज्ञान पचमी साधो, अष्ट कर्म के नाश करन को पर्व अष्टमी लाधो; एकादशी एकादशअंगा चउदस पूरव चउदह, चवन जनम दीक्षा

निर्वाणते ज्ञान कल्याणक यह कहे;साधो वीस थानक तप भारा॥ क०१८॥ आरत रौदर ध्यान न करीये, ध्यानधरन में नित्य विचरीये; तप उद्यापन विधि सु करीये, श्रीजिनवयणसे भव जल तरीये। प्र०। धरमकरम में तृपत न होवे करम करन में होवे,विविध प्रकारे धर्म आराधी पाप कर्मको खोवे; आबु अष्टापद गिरनारी शत्रुंजय को ध्यावे, समेत शिखर कल्याणक फरसे समकित शुद्धि थावे, कहे अंग प्रथम आचारा॥क०१९॥*जो नव तत्व में पक्का होवे

*श्रान्ति पचन्ति तत्त्वार्थश्रद्धानं निष्ठां नयन्तीति श्रास्तथा वपन्ति गुणवत्सप्तक्षेत्रेषु धनबीजानि निक्षिपन्तीति वास्तथा किरन्ति क्लिष्टकर्म रजो विक्षिपन्तीति का स्ततः कर्मधारये श्रावका इति भवति ॥ यदाह ॥ श्रद्धालुतां श्राति पदार्थचिन्तनाद्धनानि पात्रेषु वपत्यनारतं किरत्यपुण्यानि सुसाधु सेवनादथापितं श्रावकमाहुरंजसा ॥ १ ॥

सात क्षेत्रमें धन निज वोवे;क्षेप करी कर्मनकों खोवे, श्रावक नाम निरुक्त से होवे।प्र०। ठाणा अंगे चौथे ठाणे वृत्ति ऐसे आखे, तिसके योग्य आचरण जो कहीये सदगुरु सोई भाखे, श्रावक प्रज्ञप्ति[१] में देखो श्राद्धविधि[२] में पेखो, दिनकृत[३] श्रावक जीतकलप[४] अरु आचार उपदेश[५] लेखो, जामे है उपदेश आचारा ॥क०२०॥ आचार दिनकर[६] ग्रंथ है न्यारा, सस्कार सोलां का विस्तारा, और अर्थ[७] दीपिका जानो, ग्रन्थ आचार प्रदीप[८] बखानो। प्र०। इत्यादि बहु जैन शास्त्र में श्रावक करणी सोहे. जैनतत्त्व आदर्श है भाषा देखी भविजन मोहे, तपगच्छगगन दिवाकर प्रगटे विजयानन्द सुरींदा, लक्ष्मी

हरष चरण किंकर तस वल्लभ होत आनंदा,
गाया जंबू नगर मझारा ॥ क०२१ ॥

इति श्रावककरणीयसंक्षेपवर्णनं ॥

अथ माणिभद्र यक्षकी आरति।

जय जय झंकारा, जय जय झंकारा; आरति उतारूं, शासन रखवारा॥ टेर ॥

समकित दृष्टि सुरवर सोहे, मंगल नित कारा, माणिभदर नामे सुर जक्ख, तपगच्छ सुखकारा ॥ ज०१ ॥ मंजर अंकुश नाग वजर भुज, गूरज मुख धारा; रूप अवतार वराह सरिखा, गज पर असवारा ॥ज०२॥ कुशल करे जे नाम लिये नित,आनन्द करतारा;जग जस बाधे आस को साधे, लक्ष्मी घर कारा ॥ ज० ३ ॥ वीर वार गुल पापडी लाडु, लपन सीरी

प्यारा, धूप दीप नैवेद्य सुहंकर, आठम दिन सारा ॥ ज० ४ ॥ वेयावच्च कर्त्ता सब सुरवर, काउसग्ग चित्त धारा, आतम वल्लभ सहाज धरीजे, आवश्यक द्वारा ॥ ज०५ ॥ इति ॥

श्रीऋषभदेवजिनस्तवन ॥

(चाल—घायक तो हो चुका हू)

नाभी का नंद है रे, मरुदेवि मात प्यारा।
जन्मे नगर वनीता, सेवक का काज सारा ॥१॥
चौसठ इंद्र मिल के, मेरु शिखर पै रलके।
विधि सू स्नात्र करके, भव भव फंद टारा ॥२॥
सब राज पाट त्यागी, मुक्ति से प्रीत लागी।
वर्षी का दान देके, चारित्र अंग धारा ॥ ३ ॥
प्रभु राग द्वेष त्यागी, अरि कर्म दल को चूरा।
घाती करम निवारी, केवलज्ञान धारा ॥ ४ ॥
गाता हुं गुण मैं जिनके, ध्याताहुं नाथ तुमको।

कीजो न नाथ देरी, दीजो ज़रा सहारा ॥ ५ ॥
आतम आनंद कीजो, लक्ष्मी सेवे में दीजो ।
फ़रसूं मैं चर्ण तेरे, वल्लभ विमल प्यारा ॥६॥

श्री शांतिनाथ जिनस्तवन ॥

(चाल—तुम चिद घन चंद आनंद लाल)

प्रभु त्रिभुवन हित सुखकारी नाथ मेरे शांति जिनंद मन भायो । नाथ० अंचली ॥ विश्वसेन नृप नंदन कहिये, धन्य अचिरा देवि जायो—ना० ॥ १ ॥ दर्शन करत तृप्ति नहीं होवत, रोमरोम हरखायो—नाथ० ॥२॥ शांतिनाथ की मूरत सुंदर, मृग लंछन पग छायो—नाथ० ॥ ३ ॥ चौंतीस अतिसय जिन जी विराजे, पैंतीस वाणी सुहायो—नाथ० ॥४॥ अष्टादश दूषण प्रभु जारी, द्वादश गुण प्रभु गायो—नाथ ॥५॥ आतम लक्ष्मीवल्लभ निरखी, विमल हर्ष मन आयो—नाथ० ॥६॥

श्रीनेमनाथ जिनस्तवन ॥

रेखता ।

संदेसा जा कहो मेरा, प्रभु प्रीतम से यह वहना । न मेरा तर्स कुछ लाये,तजी मुझको है क्यू वहना ॥ १ ॥ वो आये थे मुझे ब्याहने, चले क्यों रथ फिरा करके । मेरी तकसीर वकसाके,अभी नेमी से आ वहना ॥ २ ॥ सुनो राजुल गये वो यू, सुनी है कूक पशुओ की। दयालू के तो हरदम ही,दया दिलमें रहे वहना ॥ ३ ॥ दयालू ये तेरा कहना,मुझे आली नहीं भाता । तडफती छोड़ कर मुझको,गया गिरनार चढ़ वहना ॥ ४ ॥ लगा कर प्रीत मुक्ती से, तुड़ा कर नेह नवभव का । निज आतम रूपके खातर, लिया चारित्र है वहना ॥ ५ ॥ नहीं संसय है कुछ इस में,वो तो है बाल ब्रह्मचारी ।

समझ कर जगत को फानी, दिया तज राज को बहना ॥ ६ ॥ लगाकर ध्यान चरणों में, सुधारा जन्म बस अपना। जगत जंजाल है भारी; तजो घर बार सब बहना ॥ ७ ॥ मिले आनंद अति भारा, सिधारे दंपती मुक्ती। वरे शिवलक्ष्मी वल्लभ, विमल कर रूप को बहना ॥ ८ ॥ इति

श्रीपार्श्वनाथ जिनस्तवन ॥

मैं हुं अनाथ प्रभु कर सनाथ सुन पार्श्वनाथ सुख कंदाजी। वामा है मात अश्वसैन तात पूजत सुहात सुर इंदा जी ॥ मैं० ॥ १ ॥ मोरी लागी डोर प्रभु थारी ओर चातक चकोर जिमचंदाजी। सुनि होत चैन रस सुधा बैन स्याद्वाद जैन विकसंदाजी ॥ मैं० ॥ २ ॥ प्रभु नील वर्ण तनु कांति कर्ण मुनि मनहर्ण हुल॰

संदाजी । अठदश निवार द्वादश को धार अरिदल विडार सब फन्दा जी ॥ मैं० ॥ ३ ॥ पूजत सुरिंद ध्यावत मुनिंद पावत आनंद जगनंदा जी । प्रभु हो दयाल सेवक निहाल कट कर्म जाल का धधा जी ॥ मैं० ॥ ४ ॥ आनंद अपार आतम अधार रटो वार वार गुण नंदाजी । शिव श्री विलास वल्लभ निवास जिन विमल भास जिमचंदा जी ॥ मैं०॥ ५ ॥ इति ॥

श्री महावीर जिनस्तवन ॥

लग रही आस दर्शन की प्यास अब और नहीं कुछ भाता है ॥ अंचली ॥

प्रभु सुन पुकार अरजी स्वीकार तूं जगदाधार कहलाता है। कर्मों का हार गल से उतार कर दीजो वार भारी ये मुझे सताता है ॥ १ ॥ चुरासी के बीच लेता है खींच भारी ये नीच

चारों ही गती भरमाता है। कर्मों का फंद मेरे जिनंद दीजो निकंद भवभव में मुझे फिराता है ॥ २ ॥ भव है ये भीर सागर गंभीर सुनियो हे वीर काहे को देर अब लाता है। सुनियो हे नाथ करियो सनाथ मैं हूं अनाथ तेरा ही दर्श अब भाता है ॥३॥ त्रिशलाके नंद शासन जिनंद काटो ये फंद तेरा ही शरण अब चाता है, आतम आनंद शिवश्री वरंद वल्लभ जिनंद ये विमल संग हर्षाता है ॥ ४ ॥ इति ॥

आवो प्यारे प्रभु गुण गाओ शीस नमावों चरननननन। अंचली ॥

सफल हुआ अब भाग हमारा आया तुमरी सरननननन् ।दर्शन पाकर आनंद पाया नहीं कुछ जिसका वरनननन्।आ०॥ १ ॥ झलमल झलमल अंगिया झलके मुकुट जो करता झर-

ननननन्। चौंतिस अतिशय पैंतिस वानी भवि-
जन को हित करननननन्।आ०२।अष्टादश दूषण
नहीं जिन में प्रभु गुण द्वादश धरननननन् ।
इंद्र सुरासुर सोभा गावे वरनी न जावे तदनन
नन् आ० ॥ ३ ॥ आतम लक्ष्मी चित हरखावे
वल्लभ दीजो दर्शननननन् । आवो प्यारे गुण
प्रभु गाओ शीस नमावो चरननननन् ॥४॥ इति

चेतन तू चेत मेरे, जगमें न कोइ तेरा।
नाहक तू क्यों फसा है,करता है मेरा मेरा॥१॥
मिथ्या है मोह माया, चाचा न बाप ताया,
बेली न कोइ भाया,इन से तू कर निवेरा ॥२॥
कोइ न साथ संगी, दुनिया है ये दुरंगी।
फिरता है काल जंगी,करलेगा ग्रास तेरा ॥३॥
जीवन जगत में ऐसा, सावनका मेघ जैसा।

फिर मान तुझ को कैसा, तनभो न यार तेरा ॥४॥
क्रोध और मान मारो, माया और लोभ जारो।
है जो ये कषाय चारा, इनसे तूं कर किनेरा ॥ ५ ॥
करले तूं नेक करनी, जिनवरने जो है वरनी-
पूजा है दुख हरनी, घट में जो हो उजेरा ॥ ६ ॥
करता है कर्म जैसा, पाता है फल वो वैसा।
ध्याले जिनेश ऐसा, हट जावे फंद फेरा ॥ ७ ॥
आतम का ध्यान धर तू, शिवलक्ष्मी यार वर तू।
वल्लभ दीदार कर तू, विमल जनम है तेरा ॥ ८ ॥

देशी—टंहो वाली ॥

विजय कमल सूरीश्वर ज्ञानी, दर्शन करो करो भवि प्राणी। अं० ॥

विजया नंद सूरीश के पाटे, गुरुसम न जगमें कहीं नहीं कोइ है इनकी सानी ॥ दर्शन ॥ १ ॥

लक्ष्मी शिव वरने की खातर, राग हटा द्वेष कटा, जग जीवको निज सम मानी ॥ दर्शन० ॥ २ ॥

हर्ष होत मन दर्शन पाये,पाप टरे, कर्म जरे,गुरु चरणोंमें सीस नमानी । दर्शन० ॥ ३ ॥

वीर धीर गंभीर हैं गुरु जी, कुमति टरी, सुमति वरी,मोह माया ते लोभ जरानी ॥ दर्शन० ॥ ४ ॥

कांति गुरुकीजगमें फैली,मिटा अधकार, हुआ जयकार, जिम तरणि से तिमर हटानी, दर्शन० ॥ ५ ॥

हंस गति पंचम गति गामी, संपतवरी, विपतहरी । गुरु धर्म शुकल मन ध्यानी । दर्शन० ॥ ६ ॥

वल्लभ देशना गुरुकी सुंदर, धारो हिये,
ठारो जिये। पियो अमृत रस सम
मानी। दर्शन० ॥७॥

विमल चरण गुरु शरणी आयो, दुःख हरो
सुख करो, कीजो सेवक पर मेहर
बानी ॥ दर्शन०॥८॥ इति॥

गुहली

श्री वल्लभ विजय महाराजजी म्हारावालाजी।
तारन तरन जहाज वाला जी।

पांच महाव्रत पालते म्हारा वाला जी,
धन धन गुरु महाराज वाला जी ॥१॥

माया ममता परिहरी म्हारा वाला जी,
क्रोध लोभ किया दूर वाला जी।

विषय विकार निवार के म्हारा वालाजी,
राग द्वेष चकचूर वाला जी ॥२॥

वाणी अमृत सारखी म्हारा वाला जी,
वल्लभ सब मन भाय वाला जी।
दर्शन करी गुरु राज का म्हारा वाला जी,
तृप्त नहीं मन थाय वाला जी ॥ ३ ॥

ग्राम नगर गुरु विचरते म्हारा वाला जी,
करते पर उपकार वाला जी।
ऐसे श्री गुरु राज की म्हारा वाला जी,
महिमा का नहीं पार वाला जी ॥ ४ ॥

जंगम तीरथ आप गुरु म्हारा वाला जी,
ज्ञान तणा भंडार वाला जी।
ऐसे गुरु महराज को म्हारा वाला जी,
वंदो वारं वार वाला जी ॥ ५ ॥

आतम वल्लभ मिलनको म्हारा वालाजी,
शिव लक्ष्मी हरखाय वाला जी।
चरण शरण गुरु राज के म्हारा वाला जी,
विमल विजय गुण गाय वालाजी॥७॥इति

श्री हस्तिनापुर तीर्थस्तवनम्।

॥ होरी—चाल—सामरो सुखदाई॥

हस्तिना पुर भारी तीर्थ जग अति सुख कारी। ह०। अंचली। विश्वसेन अचिराजी के नंदन, भंजनकर्म कटारी। शांतिनाथ प्रभु शांति के दाता, शांति जगत कर्त्तारी। आवत जगमरी निवारी॥ह०१। शूर सैन नंदन दुःख भंजन, कुंथु नाथ अवतारी। श्रीमाता उदरे प्रभु जायो, चरण कमल बलिहारी, नमो नित्य वार हजारी। ह०२। श्री अरनाथ जिनंद सुहंकर, देवी नंदन मद-नारी। सुदर्शन सुत गुणयुत प्रभुजी, शांतिछबि

मनोहारी। दर्शनकर भव दव ठारी।ह०३।च्यवन जन्म दिक्षा कल्याणक,केवलज्ञान उजियारी। चार चार एक जिनवर केरे, मिल कल्याणक वारी। सेवे सुरचार प्रकारी।ह०४।तरण तारण प्रभु विरुद धरावो,नारो सेवक अघ जारी॥ दूर दूरसे मिल संघआवे,यात्रा करे नरनारी, दर्शन शुद्धिकारण धारी। ह०५। दिल्ली शहरसे श्रीसंघ आयो, सवत् साठ और चारी,उन्नी सौ फागन सुदि तेरस, कियो दर्शन सोम वारी, बोलत मुख जय जयकारी।ह०६॥तप गच्छ नायक ज्ञान के दायक,लायक गुण भंडारी,विजयानद सूरीश्वर नामेंआतमहर्ष अपारी,मागतवल्लभभवपारी॥७

॥ पहाडी—चाल—आज वधाइया ॥

आज वधाइयां गावो जी श्री श्री हस्तिनापुर दरबार आज।अचली। तीर्थ अति भलु गावो

जी भवजलसिंधु तारण हार। आज०१। यात्रा फल कह्यु गावोजी, शुभ सम्यक्त्व शुद्धि सार। आज० २। यात्रा करणको गावोजी, आवे दूर से नर नार। आज० ३। श्रीशांतिनाथजी गावो जी, जग में शांति के करतार। आज०४। श्री कुंथुनाथ जी गावोजी, मन वच काया जय जय कार। आज०५। श्रीअरनाथजी गावोजी, पंचमी गतिके दातार। आज०६। कल्याणक थया गावो जी, जिनवरतिग तणां जहां बार। आज०७। आयो दिल्ली से गावोजी, श्रीसंघ साधु षटके लार। आज०८। दर्शनसे हुआ गावोजी, आनन्द अति मंगलाचार। आज०९। उन्नीसौ चौसठा गावो जी, फागन शुदि तेरस बुधवार। आज० १०। आतम तारणो गावो जी, वल्लभ हर्ष मन में अपार॥ आज०११॥ इति॥

(चाल—नाटक)

आनन्दजी जय जयकार कराया, तीर्थंकरन को श्रीसंघ आया,भेटयो शांति जिनंद जी सुख कंदजी,आनन्दजो । जय०१ । अचली । धनधन आज का दिन सवाया, श्री कुंथुनाथ का दर्शन पाया । कटे पापके फंदजी, दु:ख दंदजी, आनन्द जी । जय०२ । श्रीअरनाथ जिनेसर राया, चार कल्याणक यहां पर गाया, सेवे सुर नर वृंदजी, जिनचंदजी आनन्दजी । जय०३ । संवत् उन्नी सौ चौसठ जानों, फागन सुदि तेरस सुभ मानों दर्शन मन विकसदजी, दिनचंदजी, आनन्द जी । जय० ४ । दिल्ली नगरसे श्रीसंघ आया,प्रभु दर्शन आतम रंग छाया, वल्लभ हर्ष अमंदजी, कहे छंदजी,आनन्दजो । जय०५ ॥ इति ॥

जय बोलो जय बोलो मेरे प्यारे तीर्थ का जय बोलो ॥ अंचलि ॥ हस्तिनापुर तीर्थसारा । कल्याणक होए जिहां बारा। तीर्थंकर तिग मन में धारा । धाराजी धारा सुख कर्त्तारा॥ तीर्थ० १॥ शांतिनाथ प्रभु शांतिकारी। कुंथुनाथ जिन वर बलिकारी । श्रीअरनाथ के जाऊंवारी। वारी जी वार हजारी ॥ तीर्थ० ॥ २ ॥ प्रथम जिनेसर पारणो कीनो। इक्षुरस श्रेयांस दीनो। मुक्ति रस बदले में लीनो । लीनो जी लीनो निज गुण चीनो ॥ तीर्थ० ॥ ३ ॥ उन्नीसौ चौसठके बरसे । दिल्लीकों संघ आयो हरसे। धन आतम जे तीर्थ फरसे । फरसे जी फरसे वल्लभ तरसे ॥ तीर्थ० ॥ ५ ॥ इति

(वढंस)

मेरो मनलाग्यो तुमरेचरनमें,जैसेमृगगणलाग्यो सुमनमें।मेरो०।अचली॥सुमति नाथप्रभु सुमति के दाता, भाज्यो सुमति रगन में।सुमति रक्षक कुमति नाशक प्रभु शरणा भव वन में। मेरो०१ मैं प्रभु बाल लाल तू मेरा, टाल काल मगन में, मदन सदन दु ख दाइ भजन,रंजन आनंद घन में ।मेरो०२। राग लाग प्रभु तुममे नाहीं,तुम राग लाग मुझ मनमें, कर्मभरमगयो भाग माग दियो,मगन!प्रभुकी लगनमें। मेरो०३। आनंद कंद जिनंद चद प्रभु, त्रिभुवन शोभत जनमें, कटे भव फद कर्म वंद टूटे,राचत जिनके भजन में। मेरो०४। आतम राम नाम शिव सुख का, निश दिन नाम रटन में, सत् चित् आनंद रूप अमीरस,वल्लभ वसत नयननमें।मेरो०५॥इति

॥ होरी ॥

आत्मानंदधारी नाथ सुमति सुखकारी॥आ०
॥अंचली॥ मेघ नरेन्द्र नंदन सुख दाई,भवि जन
के हित कारी, सुमंगला माता उर जयो इंद्र नमें
सठ चारी,करे मुख जय जय कारी । आ०१ ।
सुरगिरि जन्म महोत्सव कीनो, पूजन अष्ट
प्रकारी,सुर गण मन तन आनंद उपनो,थइथइ
शब्द उचारी, मिली सुरच्चार प्रकारी ।आ०२
गर्भ प्रभाव सुमति माता भई,काम कियो दुश-
चारी,सुमति नाम दियो तिन कारण,सुमति २
दातारी,सुमति प्रभु गुण भंडारी।आ०३।वरसी
दान दियो प्रभु जगमें, रोरता दीनी निवारी,
त्याग संसार धारलियो संजम, कर्म धार जर
मारी, गए प्रभु मोक्ष सिधारी । आ०४ । अजर
अमर अज अलख निरंजन ज्योति रूप शिव

चारी, आतमराम चिदानंद स्वामी, आतम रूप अपारी,वल्लभ पामें भवपारी,आतमा०५॥इति॥

(भैरवी—दादरा)

तुमरी शरन मैंआयोजी पार उतार॥तुमरी० ॥ अचली ॥ लाख चौरासी जून में भटक्यो, दुख अनत में पाया जी ॥ पार० ॥ १ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म मे राच्यो, विरथाही जन्म गमायो जी ॥ पार० २ ॥ करम भरम सब दूर निवारो, राग द्वेष दुख दायोजी ॥ पार०३ ॥ सुमतिनाथ प्रभु सुमति दीजे, दर्शन मन हुलसायो जी ॥ पार०४ ॥ दिल्ली शहर मे दर्शन पायो,वल्लभ आतम रायो जी ॥ पार०५॥इति॥

श्रीकेशरियानाथजी स्तवन ।

(चाल—नाटक)

प्रसिद्ध प्रताप जगत में घणो, थयो नाथ

केशरिया जी तणो। सुरासुर नरपति गुण ने गणो, नहीं पार पामें गमें ते भणो॥ १ ॥ कहूं शी शोभा प्रभु ताहरी, नहीं शक्ति एती प्रभु माहरी। कहुं पिण भक्ति तणे वस परी, लवे जिम बालक मति आसरी ॥ २ ॥ अति दूर थी जन आवे धसी, करे तन मन प्रभु सेवा हसी। वदन प्रभु मन लगन वसी, खुशी होवे देखी चकोर जिस ससी ॥ ३ ॥ अजर अमर अज अविनासी, चिदानंद सद्रूप परकासी। प्रकाश करो कटे भव फांसी, मिटे जन्म मरण नी दुख रासी ॥ ४ ॥ उदय पुण्य जे प्रभु दर्शन करे, निजातम लक्ष्मी भवि ते वरे। होवे दर्श प्रभु मन हर्ष धरे, सरे काम वल्लभ चरणी परे ॥ ५ ॥ इति ॥

जैनधर्म का स्वरूप—नामसेही प्रकट ह कि इसम जेनधर्मके तत्वों का स्वरूप है मानो सागरको गागरमें वद् किया ह,इसके कर्त्ता भी प्रसिद्ध महामुनिराज श्रीआत्मा-रामजी ही हैं, इसके अधिकतर प्रचारार्थ कर्त्ता के फोटो सहित इसका मूल्य हमने केवल दो आने रखा ह, सौ दो सो के खरीदार को एक आना प्रति कापी दी जावेगी ॥

नवग्रहशांति—श्री भद्रभद्रबाहुस्वामीजी महा राजने यह नवग्रहशाति रचकर जैनजाति प्रति अतीव उपकार किया, परन्तु आधुनिक समय के अल्पज्ञजैन सस्कृत समझ नहीं सकते, अत रोगादिके समय हमारे भाई लाचार अन्य देवोंकी पूजादि करा कर निर्वाह करते हे,इस त्रुटि को दूरकरने के लिये गुरु महाराजकी सहायता से हमने इसको भाषातर सहित छपवाया है इस में प्रत्येक ग्रह की दशामें यत्र मत्र दान की वस्तुयें आदि सर्व विधि हे, ऐसे अमूल्य रत्न का मूल्य रत्न ही रखा जावे, तो उचित है, परन्त सर्व साधारण के सुलभार्थ हमने इस का मूल्य केवल डेढ आना ≈)॥ रखा है, सामर्थ्यवान श्रावकों को ऐसा रत्न मुफत बांटना चाहिये, बांटने वास्ते जो खरीदे, उनसे एक आना ही प्रति कापी लिया जावेगा ॥

निन्यानवें प्रकार की पूजा-पंडितराज श्रीमान् श्रीवीरविजयजी महाराजने विक्रम संवत् १८८४ में तीर्थाधिराज सिद्धक्षेत्र श्रीसिद्धाचलजी की यात्रा करके चढावा रूप निन्यानवें प्रकार की पूजा रचकर श्रीगिरिराज को समर्पण की थी, जिस में जो कुछ पांडित्यता भरी है, पंडितजन ही जानते हैं, परन्तु जो राग रागनीयां देशीयां हैं, वह प्रायः आजकलके लोग न गा सकते हैं और न ठीक २ समझ सकते हैं, और खासकर पंजाब मारवाड आदि देशों के लोगोंको तो गुजराती भाषा का समझना अति कठिन हो रहा है, अतः श्रीमान् महामुनि राज प्रसिद्ध श्रीआत्मारामजी महाराज के शिष्यप्रशिष्य परमविख्यात विद्वान् मुनि श्रीवल्लभविजयजी महाराजनें आधुनिक समयके प्रचलित तथा नाटक कंपनियों के राग रागनीयोंकी देसियों पर हिंदुस्तानी भाषामें निन्यानवें प्रकारकी पूजा रचकर महोपकार किया है,हमने इसे मोटे कागज पर स्थूलाक्षरों में छपवाया है, मूल्य केवल ।) है, डाकव्यय माफ ॥

☞ मिलने का पता—जसवंतराय जैनी।

लाहौर (पंजाब)